New Beginning

As per NEP and NCF

मास्टरमाइन्ड

हिन्दी

सहायक पुस्तिका

6 से 8

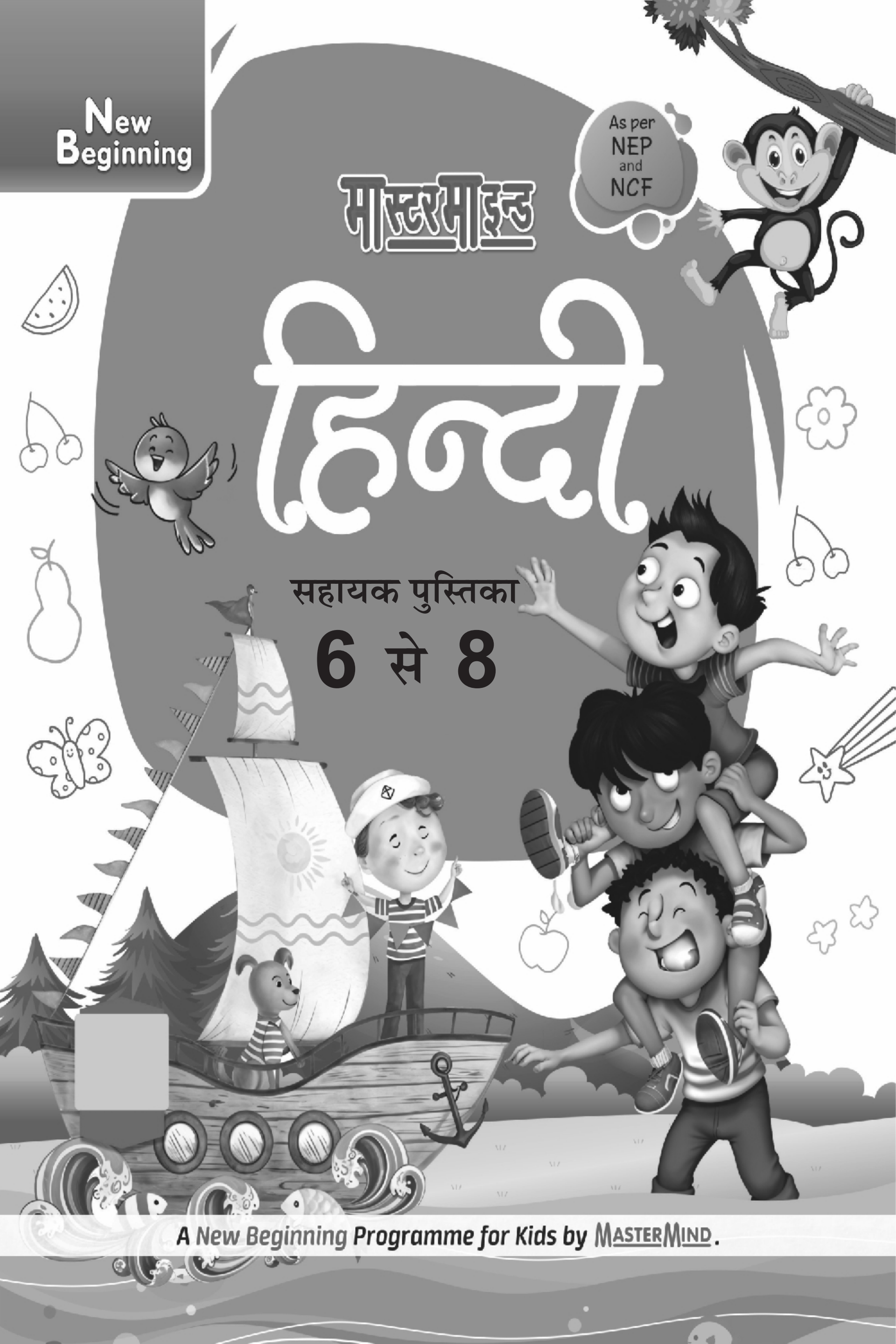

A New Beginning Programme for Kids by MasterMind.

1 स्नेह-शपथ (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** कवि जिह्वा से सख्त बात न कहने की सलाह देता है।

2. कवि कहता है कि गलती करने वाले इंसान के साथ प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। प्रेम से समझाना चाहिए।

3. प्रेम का असर कितना भी गहरा गर्त हो, कितना भ्रष्ट ज़माना हो, कितना भी पतित व्यक्ति हो, सब पर पड़ता है।

4. प्रेम और स्नेह से काम लेने पर दुस्साहसी तथा धृष्ट आदमी भी समर्पण कर देते है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** पहले पद में कवि कहना चाहता है कि यदि तुम्हारा मित्र या शत्रु, परिचित तथा अपरिचित हो; जिसे तुम बड़ा या छोटा मानते हो। यदि कभी किसी कारण से उससे कोई भूल-चूक हो जाए तो उससे सख़्त और कठोर वचन मत कहना। ऐसी भूल मत करना।

2. कवि कहता है कि कितनी भी दुस्साहसी अथवा धृष्ट आदमी; वह स्नेह और प्रेम के सामने समर्पण कर देता है।

3. कवि कहता है कि तुम्हें ईश्वर की और दीन-हीनो की शपथ लेनी चाहिए कि तुम कभी किसी से कटु वचन नहीं कहोगे और सबको स्नेह दोगे।

4. इस कविता का सार यह है कि दण्ड और कटु वचनों के द्वारा किसी अपराधी अथवा धृष्ट व्यक्ति को सुधारा नहीं जा सकता है। हमें उनसे प्रेम से व्यवहार करके उन्हें समझाना चाहिए। हमें दिन-हीन जनों के प्रति प्रेम की भावना रखनी चाहिए।

(ग) इन पंक्तियों का भावार्थ लिखो–

उत्तर– **भावार्थ–**

1. अपने अंदर भरे हुए असीमित स्नेह को दूसरों में थोड़ा-सा बाँट दो।

2. प्यार में वह शक्ति है कि वह पतन में गहरे डूबे हुए को भी ऊपर उठा सकती है।

3. कोई कितना भी धृष्ट क्यों न हो, एक कोमल हृदय अवश्य रखता है जो स्नेह तथा प्यार से द्रवित हो सकता है।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) इनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

मित्र	**सखा**	**दोस्त**
शत्रु	**दुश्मन**	**रिपू**
प्यार	**प्रेम**	**स्नेह**
आँख	**नेत्र**	**नयन**

(ख) शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग या प्रत्यय अलग करके लिखो–

उत्तर–

शब्द	**मूल शब्द**	+	**प्रत्यय**	**शब्द**	**उपसर्ग**	+	**मूल शब्द**
परिचित	**परिचय**	+	**इत**	विहीन	**वि**	+	**हीन**
दीनता	**दीन**	+	**ता**	सुगंध	**सु**	+	**गंध**
धृष्टता	**धृष्ट**	+	**ता**	अनुकरण	**अनु**	+	**करण**
गहराई	**गहरा**	+	**ई**	अपयश	**अप**	+	**यश**

(ग) नीचे दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक लिखो–

उत्तर–

मित्र	**शत्रु**	सख्त	**नरम**
दीन	**संपन्न**	प्यार	**गुस्सा**
यश	**अपयश**	पतन	**उत्थान**

(घ) भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर–

मित्र	**मित्रता**	सख्त	**सख्ती**
शत्रु	**शत्रुता**	धृष्ट	**धृष्टता**

(ङ) दिए गए संयुक्ताक्षरों से बनने वाले दो-दो शब्द लिखो–

उत्तर–

स् + न = स्न	**स्नेह**	**स्नान**
ष् + ट = ष्ट	**कलिष्ट**	**कष्ट**
प् + य = प्य	**प्यारा**	**प्याज**
न् + त = न्त	**अनन्त**	**अंत**

कला एकीकरण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

'प्रेम में अनोखी शक्ति है'

प्रेमी एक ऐसा व्यवहार है; जिसके द्वारा शत्रु भी मित्र बन जाते हैं और पाषाण-हृदय भी पिघल जाते हैं। प्रेम की शक्ति के कारण ही हम अपने माता-पिता, परिवार, देश आदि के प्रति आस्थावान बनते हैं।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) 'किसी का दिल दुखाना सबसे बड़ा पाप है।' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– किसी का दिल दुखाना सबसे बड़ा पाप है।

किसी का दिल दुखाने से बड़ा कोई पाप नहीं है। हमें हमेशा यह प्रयास करना चाहिए कि हमारी वजह से कोई दुखी तथा परेशान न हो। कई बार जाने-अनजाने हम ऐसा व्यवहार कर देते हैं कि दूसरा उससे आहत हो जाता है, अगर ऐसा हो भी जाए तो हमें तुरंत अपनी गलती का अहसास करके उससे क्षमा माँग लेनी चाहिए। यदि हम किसी को कोई खुशी नहीं दे सकते तो हमें उसे दुख देने का भी कोई अधिकार नहीं है। अतः हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा कभी किसी का अहित न हो।

(घ) इस कविता से प्रेरणा प्राप्त कर आप क्या करने का निश्चय करेंगे?

उत्तर– हम दुखी तथा परेशान लोगों को सांत्वना देने का प्रयास करेंगे तथा उनके दुख बाँटने का यत्न करेंगे। गलत मार्ग पर चले गए प्राणियों को प्रेम से समझाकर सही राह पर लाने की कोशिश करेंगे। तथा हर किसी के साथ प्रेम का व्यवहार करेंगे।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

2 शह में मात (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** चौधरी ने लकड़ियों की गाड़ी का दाम पाँच रुपये बताया।

2. सेठ ने लकड़ी के साथ-साथ चौधरी की बैलगाड़ी और बैल, भी हड़प लिए और कहा कि मैंने तुझसे लकड़ी नहीं पूरी बैलगाड़ी का सौदा किया है।

3. चौधरी के तीनों बड़े बेटों ने कहा, चलो, हमें उस सेठ की हवेली दिखा दो। हम उसकी ईंट से ईंट बजा देंगे। उसकी इतनी हिम्मत कि यों राह चलते गाड़ी-बैल रख लिए।

4. चौधरी के छोटे बेटे ने लकड़ियों की गाड़ी का दाम दो मुट्ठी टके माँगे।

5. सेठ को अपनी करनी का उचित फल मिला। उसे अपने अपमान के साथ-साथ पाँच सौं रुपये भी देने पड़े।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** सेठ ने चौधरी को आदमी की जबान का वास्ता देते हुए कहा, कि आदमी की जबान एक होती है कि दो? अब चुपचाप चलता बन, नहीं तो धक्के मारकर निकलवा दूँगा। मेरे यहाँ झगड़ा-टंटा नहीं चलेगा।

2. चौधरी के खाली हाथ लौटने पर उसके बेटों ने पूछा, ''बाबा, बैलगाड़ी कहाँ है? रास्ते में खराब तो नहीं हो गई? बहुत तकलीफ पाई होगी।''

3. अपने पिता से पूरी घटना की जानकारी मिलने पर चौधरी के बेटों को सेठ पर गुस्सा इसलिए आया क्योंकि सेठ ने उनके पिता के साथ बेईमानी की थी। नयी बनी योजना के अनुसार चौधरी के छोटे बेटे ने कहा, कल मुझे दूसरी गाड़ी में लकड़ियाँ ले जाने दो। सेठ की जबान से ही उसे बाँधूँगा। उसी का तराजू, उसी के बाट और उसी के भाव से उसका हिसाब चुकता करूँगा।

4. सेठ ने चौधरी के छोटे बेटे को बुद्धू इसलिए समझा क्योंकि उसने गाड़ी का दाम दो मुट्ठी टके बताया।

5. चौधरी का छोटा बेटा अपने पिता के अपमान का बदला लेने के लिए पूरी योजना बना कर आया था। जब सेठ तय किए गए मूल्यानुसार मुट्ठी में टके बंद करके लाया तब छोटे बेटे ने उसके दोनों हाथों को पकड़ लिया

और कहा कि वह सेठ की दोनों मुट्ठियों को काटकर अपने साथ ले जाएगा क्योंकि बात दो मुट्ठी टके की हुई थी। उसके ऐसा करते ही सेठ को सब कुछ समझ में आ गया और वह उससे माफी माँगने लगा। छोटे बेटे ने उसे माफ तो किया परंतु उससे पहले सेठ को उसके सामने नाक रगड़नी पड़ी और चौधरी की बैलगाड़ी व पाँच सौ रुपये देने पड़े। छोटे बेटे ने यह सब सेठ को उसके किए का सबक सिखाने के लिए किया।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर–
1. चौधरी को अपने छले जाने का दुख था।
2. सेठ चौधरी से लकड़ियों के साथ बैल तथा गाड़ी भी चाहता था।
3. सेठ ने चौधरी से लकड़ियाँ खरीदी थीं।
4. **समानार्थी शब्द–**

   खून–**रक्त**, बैल–**वृषभ**, दाम–**मूल्य**।

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर–
1. बाबा, तूने कहा है तो गाड़ी के पूरे **पाँच** ही दूँगा।
2. **आदमी** की जबान एक होती है कि दो।
3. चौधरी के **चार** जवान बेटे थे।
4. कल का दाँव सेठ के लिए बड़ा **मुफीद** रहा।
5. रगड़ने से **नाक** घिसती थोड़े ही है।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए शब्दों के प्रत्यय अलग करके लिखो–

उत्तर–

खबरदार	**खबर**	+	**दार**
खराबी	**खराब**	+	**ई**
सफलता	**सफल**	+	**ता**
चतुराई	**चतुर**	+	**आई**
होशियारी	**होशियार**	+	**ई**

(ख) निम्नलिखित के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

बैल	–	**वृषभ**	**वृष**
खून	–	**रक्त**	**रुधिर**
आदमी	–	**मानव**	**जन**
बेटा	–	**पुत्र**	**तनय**
रात	–	**रजनी**	**निशा**

(ग) पाठ में आए इन मुहावरों के अर्थ लिखो–

उत्तर– किसी बात का असर न होना।
बहुत मुनाफा होना
बहुत खुश होना।
गिड़गिड़ाना।

(घ) दिए गए शब्दों का समास-विग्रह करो–

उत्तर– सुबह-शाम	**सुबह और शाम**
बेटा-बेटी	**बेटा और बेटी**
रुपया-पैसा	**रुपया और पैसा**
कमी-बेशी	**कमी और बेशी**
सुख-दुःख	**सुख और दुख**
धनी-निर्धन	**धनी और निर्धन**

(ङ) विलोम शब्द लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर– चतुर	**मूर्ख**	लोमड़ी बहुत **चतुर** थी।
जवान	**बूढ़ा**	**जवानों** की टोलियाँ बनी हुई थीं।
राजा	**रंक**	**राजा** अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता था।
नकल	**असल**	किसी की **नकल** करना इतना आसान नहीं होता।

(च) वचन बदलो–

उत्तर– हवेली	**हवेलियाँ**	पगड़ी	**पगड़ियाँ**
गाड़ी	**गाड़ियाँ**	आँख	**आँखें**
लकड़ी	**लकड़ियाँ**	गति	**गतियाँ**

मौखिक अभिव्यक्ति

संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर– विद्यार्थी अ – चौधरी बैलगाड़ी में क्या भरे हुए था?
विद्यार्थी ब – चौधरी बैलगाड़ी में लकड़ियाँ भरे हुए था।
विद्यार्थी अ – चौधरी से लकड़ियाँ कौन खरीदता चाहता था?
विद्यार्थी ब – चौधरी से लकड़ियाँ सेठ खरीदना चाहता था।
विद्यार्थी अ – गाड़ी का सौदा कितने में हुआ?
विद्यार्थी ब – गाड़ी का सौदा पाँच रुपये में हुआ।
विद्यार्थी अ – चौधरी के कितने बेटे थे?
विद्यार्थी ब – चौधरी के चार बेटे थे।

विद्यार्थी अ – चौधरी का छोटा बेटा कैसा था?
विद्यार्थी ब – चौधरी का छोटा बेटा बहुत होशियार था।
विद्यार्थी अ – क्या चौधरी के बेटे ने सेठ की अक्ल ठिकाने लगा दी।
विद्यार्थी ब – हाँ, चौधरी के बेटे ने सेठ की अक्ल ठिकाने लगा दी।

कला एकीकरण

(क) इस कहानी से आपने जो शिक्षा प्राप्त की, उसे अपने शब्दों में लिखो–

उत्तर– इस कहानी से हमें निम्न शिक्षाएँ मिलती हैं–
चौधरी के साथ हुए व्यवहार से हमें यह शिक्षा मिलती है कि कोई भी व्यापार करते समय हमें अपनी बुद्धि और समझदारी का प्रयोग करना चाहिए।
सेठ के व्यवहार से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें किसी सीधे-साधे व्यक्ति के साथ छल नहीं करना चाहिए क्योंकि यदि हम किसी के साथ कोई अन्याय या धोखा करते हैं, तो हमें उसका परिणाम अवश्य ही भुगतान पड़ता है। चौधरी के छोटे बेटे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी भी विपरीत परिस्थिति का हमें धैर्य तथा समझदारी से सामना करना चाहिए तथा हर अन्याय और दुष्टता का डटकर विरोध करना चाहिए। इसके साथ हो हमें इसके लिए सदैव बल के स्थान पर बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इससे स्वयं को हानि होने की संभावना न के बराबर होती है।

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) छात्र स्वयं करें।

(घ) बैल की उपयोगिता पर एक अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– बैल मनुष्य का मित्र है। वह एक पालतू पशु है। जिसे ज्यादातर सामान ढोने के लिए उपयोग करते हैं। बैलगाड़ी भारत में सभी जगह दिखाई देती है, खासतौर पर गाँवों और छोटे शहरों में वह बहुत प्रचलित है। बड़े शहरों में भी वह सस्ते वाहन की तरह उपयोग की जाती है। तकनीकी विकास के पश्चात् भी बैलगाड़ी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मेलों में आप देखेंगे कि लोग आने-जाने के लिए उसी का उपयोग करते हैं। किसानों के लिए बैल अत्यंत आवश्यक हैं। वे बैलों के साथ हल चलाकर अपना खेत जोतते हैं इसलिए खेती के लिए बैल का बहुत महत्त्व है। बैल को धान को अलग करने और सिंचाई व पीसने के यंत्रों को चलाने के लिए भी उपयोग करते हैं। बैल द्वारा कृषि में किए गए योगदान के आधार पर हम उसे किसान का सहयोगी कह सकते हैं। अन्य पशुओं की तुलना में बैल अधिक बोझा ज्यादा देर तक खींच सकते हैं। वे घोड़े की तुलना में मंद गति से चलते हैं पर अधिक परिश्रमी होते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि बैल एक बहुत उपयोगी पशु है।

अंतर-विषयक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।।

3 ईमानदार बालक (नाटक)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. बसंत बाजार में छननी, बटन तथा दियासलाई बेच रहा था।

2. राजकिशोर एक मजदूर नेता थे।

3. कृष्णकुमार ने बंसत के बारे में कहा कि अब वह नहीं आएगा। बाजार के हर कोने पर आजकल ऐसे लड़के मिलते हैं, जिनका काम गिड़गिड़ाकर लोगों को ठगना है।

4. प्रताप राजकिशोर के घर उसके बचे हुए पैसे लौटाने गया।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. राजकिशोर ने बसंत को यह समझाने की कोशिश की कि उसके पास छुट्टे पैसे नहीं हैं इसलिए वह उससे सामान नहीं खरीद सकता।

2. बसंत जब नोट भुनाकर लौट रहा था तो वह मोटर के नीचे आ गया और उसके दोनों पैर कुचले गए।

3. राजकिशोर बसंत के विषय में कहता है कि वह लड़का मुझे भला लगता था।

4. बसंत तथा उसका भाई प्रताप भीखू अहीर के घर में रहते थे तथा बाजार में सामान बेचकर अपना गुजारा करते थे।

5. राजकिशोर ने बंसत की हड्डी टूट जाने पर उसको अस्पताल भिजवाकर उसकी मदद की क्योंकि वह बहुत ईमानदार था।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. बाजार से छुट्टा लेने बसंत जाता है।

2. राजकिशोर के परिचित का नाम कृष्णकुमार था।

3. कृष्णकुमार राजकिशोर से बसंत के बारे में कहते हैं कि अब वह नहीं आएगा। बाजार के हर होने पर आजकल ऐसे लड़के मिलते हैं जिनका काम गिड़गिड़ाकर लोगों को ठगना है।

4. यह गद्यांश 'ईमानदार बालक' नामक एकांकी से लिया गया है।

(घ) किसने, किससे कहा, लिखो–

उत्तर–

1.	बसंत ने	राजकिशोर से
2.	राजकिशोर ने	बसंत से
3.	राजकिशोर ने	कृष्णकुमार से
4.	प्रताप ने	राजकिशोर से
5.	राजकिशोर ने	अमरसिंह से।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) समानार्थी शब्द पर सही (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर–

देशी	–	स्वदेशी (✓)	विदेशी
अच्छा	–	बुरा	नेक (✓)
भीख	–	दान	भिक्षा (✓)
गरीब	–	निर्धन (✓)	धनिक

(ख) दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद करो–

उत्तर–

छननी	–	**छ् + अ + न् + अ + न् + ई**
दियासलाई	–	**द् + इ + य् + आ + स् + अ + ल् + आ + ई**
परिचित	–	**प् + अ + र् + इ + च् + इ + त् + अ**
मजदूर	–	**म् + अ + ज् + अ + द् + ऊ + र् + अ**

(ग) सही समुच्चयबोधक शब्दों से वाक्य पूरे करो–

उत्तर–

1. बसंत गरीब था **लेकिन** ईमान का पक्का था।
2. राजकिशोर **और** उनके सहयोगी तुरंत प्रताप के साथ चल पड़े।
3. जब राजकिशोर को सच का पता चला **तो** उनके आश्चर्य की सीमा न रही।
4. दादा जी बुलाते **तो** मैं अवश्य जाता।

(घ) विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

देशी	**विदेशी**	परिचित	**अपरिचित**
भला	**बुरा**	गरीब	**अमीर**

(ङ) **'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाओ–**

उत्तर– समान	**समानता**	सहज	**सहजता**
उत्सुक	**उत्सुकता**	सफल	**सफल**
दीन	**दीनता**	नम्र	**नम्रता**

(च) **दिए गए शब्दों से विशेषण छाँटिए–**

उत्तर– ईमानदार बालक	**ईमानदार**
गरीब बसंत	**गरीब**
फटे कपड़े	**फटे**
नीला परदा	**नीला**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयंकरें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखो–**

उत्तर– (i) ईमानदारी अच्छी नीति है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक जीवन जीते हुए वह अनेक उतार-चढ़ावों का सामना करता है। कई बार जीवन में आई हुई अनेक कठिनाइयों से वह इतना हताश और निराश हो जाता है कि वह झूठ तथा फरेब के मार्ग पर चल पड़ता है। लेकिन जो ऐसी विपदाओं के आने पर भी अपने कर्तव्य पथ से नहीं डिगता तथा अपने व्यवहार में सत्यता बनाये रखता है, वही सही अर्थों में ईमानदार है। ईमानदारी एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति को सर्वत्र सम्मान तथा आदर दिलाती है। यह एक ऐसा दुर्लभ गुण है जो हर किसी में नहीं मिलता। ईमानदारी के साथ कई अन्य गुण स्वतः ही स्वभाव में आ जाते हैं; जैसे–सत्यता, दयालुता, नेकनीयती आदि। अतः हमें अपनी मेहनत की कमाई के बल पर जीवन जीने का प्रयास करते हुए सदैव ईमानदारी का पालन करना चाहिए।

उत्तर–(ख) बसंत का चरित्र चित्रण

(i) अनाथ–बसंत एक अनाथ बालक है। दंगों में उसके माता-पिता मर गए हैं। वह अपने भाई प्रताप के साथ रहता है।

(ii) मेहनती–बसंत एक मेहनती बालक है। वह सड़को पर छोटा-मोटा सामान बेचता है। इससे ही वह अपना गुज़र-बसर करता है।

(iii) स्वाभिमानी–बसंत गरीब है परंतु स्वाभिमानी है। राजकिशोर द्वारा पैसे

देने पर वह स्वाभिमानी से कहता है कि मैं भिखारी नहीं हूँ आप छन्नी लेकर मेरी सहायता कर सकते हैं।

(iv) **ईमानदारी–**बसंत के चरित्र का यह सबसे विशेष गुण है वह राजकिशोर के नोट को भुनाने के चक्कर में दुर्घटना का शिकार हो जाता है। होश जाने पर भी वह अपने भाई के हाथों राजकिशोर के पैसे लौटता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बसंत एक आदर्श बालक है जो ईमानदारी और स्वाभिमानी है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

4 ममता (नाट्य-कथा)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** रोहतास दुर्ग के प्रकोष्ठ में दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की पुत्री ममता बैठी थी।

2. ममता के सामने रखे थालों में स्वर्ण था।

3. मंत्री चूड़ामणि की हत्या पठानों के दुर्ग में घुस आने के पश्चात् पठानों द्वारा ही की गई।

4. मुगल ने स्त्री (ममता) से कहा–''माता! मुझे आश्रय चाहिए।''

5. झोंपड़ी में ठहरने वाला मुगल हुमायूँ था और उसने मिरजा को झोंपड़ी के स्थान पर घर बनवाने का आदेश दिया।

6. ममता ने अपने जीवन के अंतिम क्षणों में हुमायूँ के विषय में कहा कि, ''मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल, पर एक दिन वह इसी झोंपड़ी के नीचे रहा था।''

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. मंत्री चूड़ामणि की चिंता का कारण उनकी अकेली दुहिता (ममता) थी। जो वैधव्य का भार ढो रही थी और वे सब कुछ जानते हुए भी उसके लिए कुछ न कर सकते थे।

2. ममता ने उत्कोच लेने के संबंध में चूड़ामणि को समझाते हुए कहा कि ''पिताजी, यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिए। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?''

3. ममता ने अजनबी मुगल सैनिक को यह सोचकर आश्रय दिया कि–''मैं ब्राह्मण हूँ, मुझे तो अपने धर्म-अतिथि-देव की उपासना का पालन करना चाहिए। यह मेरी दया नहीं बल्कि मेरा कर्तव्यपालन होगा।''

4. ममता ने खंडहर की संधि में से देखा कि सैकड़ों अश्वारोही उस प्रांत में घूम रहे हैं।

5. बादशाह हुमायूँ ने ममता के अहसान का बदला चुकाने के लिए झोंपड़ी के स्थान पर उसका घर बनवाना चाहा।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. ममता से आश्रय हुमायूँ ने माँगा था।

2. ममता न चाहते हुए भी उसे आश्रय देने के लिए इसलिए तैयार हो गई क्योंकि वह अपने अतिथि-धर्म का पालन करना चाहती थी।

3. अतिथि देव की उपासना का पालन करने से आशय है–द्वार पर आए हुए अतिथि का आदर तथा सत्कार करना।

4. **समानार्थी शब्द–**

अतिथि–**मेहमान**, उपासना–**पूजा**, विधर्मी–**गैरधर्मी**, कर्तव्य–**फर्ज**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा लिखो–

उत्तर– 1. ममता ने अपने पिता चूड़ामणि से, क्योंकि उसे चूड़ामणि का इस तरह से उत्कोच लेना अच्छा नहीं लगा था।

2. हुमायूँ ने ममता से, क्योंकि उसके पीछे शेरशाह पड़ा हुआ था।

3. ममता ने मुगल से, क्योंकि वह ममता से आश्रय माँग रहा था।

4. अश्वारोही ने स्वयं से, क्योंकि वह मिरजा द्वारा बताए गए स्थान को ढूँढ़ रहा था।

(ङ) दी गई पंक्ति की व्याख्या करो–

उत्तर– व्याख्या–जब आए हुए पथिक ने ममता से कहा कि वह शेरशाह से बचकर भाग

आया है, तो ममता ने उससे कहा कि तुम भी शेरशाह जैसे ही कठोर हो, तुम्हें भी वही रक्त की प्यास है तथा तुम्हारे मुख पर भी वही निष्ठुरता दिखाई दे रही है।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) जोड़े बनाओ–

उत्तर–

युवक	**युवती**
विधुर	**विधवा**
पिता	**माता**
बेटा	**बेटी**
ब्राह्मण	**ब्राह्मणी**
सम्राट	**साम्राज्ञी**

(ख) संधि-विच्छेद करो–

उत्तर–

दीपालोक	**दीप**	+	**आलोक**
निराश्रय	**निर्**	+	**आश्रय**
पतनोन्मुख	**पतन**	+	**उन्मुख**
अश्वारोही	**अश्व**	+	**आरोही**

(ग) उचित सर्वनामों द्वारा खाली स्थान भरो–

उत्तर–
1. कुटी में **कोई** रहता है।
2. सुबह ही **मैं** चला जाऊँगा।
3. **वह** अपने को रोक न सकी।
4. **उसे** आश्रय चाहिए।
5. **वे** महल की ओर ही आ रहे हैं।

(घ) 'वि' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

धर्मी	**विधर्मी**	जय	**विजय**
कार	**विकार**	हार	**विहार**

(ङ) विलोम शब्दों से मेल करो–

उत्तर–
- विधवा → सधवा
- आवरण → अनावरण
- इच्छा → अनिच्छा
- युद्ध → संधि
- जल → थल

(च) इनके तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर– माता	**जननी**	**अंबा**	**माँ**
पुत्री	**तनया**	**दुहिता**	**सुता**
भगवान	**ईश्वर**	**प्रभु**	**परमात्मा**
दिन	**दिवस**	**वार**	**दिवा**
स्त्री	**महिला**	**औरत**	**नारी**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक पर अनुच्छेद लिखो–

उत्तर– हमें उपकारी व्यक्ति का आभारी होना चाहिए।

आज की भागती दौड़ती जिंदगी में जीवन जीना बहुत कठिन हो गया है। आज व्यक्ति अपने दैनिक क्रियाकलापों में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास किसी अन्य के विषय में सोचने का समय ही नहीं है। इतनी व्यस्तता के बावजूद यदि कोई हमारी किसी प्रकार सहायता करता है तो यह उसका हम पर बहुत बड़ा उपकार है। हमें उसके द्वारा किए गए उपकार का अहसान मानते हुए उसका आभार व्यक्त करना चाहिए क्योंकि उसने न जाने अपनी कौन-सी चीज में कटौती करके हमारी सहायता की है। हमें उसके द्वारा की गई सहायता का ऋणी होना चाहिए।

(ख) अकबर द्वारा बनवाए गए मुग़लकालीन स्मारकों के चित्र एकत्र करो तथा उन्हें नीचे दिए गए रिक्त स्थान पर चिपकाओ व उनके नाम लिखो–

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 तीन प्रश्न (नाट्य-कथा)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** राजा अपने मन में आए हुए इन तीनों प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता था कि हर कार्य को करने का उचित समय कौन-सा है, परमावश्यक व्यक्ति कौन है और परम कर्तव्य क्या है?

2. राजा ने अपने नगर में ढिंढोरा पिटवाया कि जो आदमी मुझे इन तीन बातों की शिक्षा देगा, उसे मैं बहुत बड़ा पुरस्कार दूँगा।

3. राजा को लोगों से अपने पहले प्रश्न के कई उत्तर मिले–किसी ने कहा कि प्रत्येक कार्य के लिए उचित समय जानने हेतु मनुष्य को अपने दिवसों, मासों और वर्षों का कार्यक्रम निर्धारित कर लेना चाहिए। किसी ने कहा कि अनावश्यक कार्यों में समय न लगाकर अपने नित्य के कार्यों की ओर ध्यान देना चाहिए। किसी ने कहा कि राजा को पंडितों की एक समिति बनानी चाहिए। यह समिति उसे प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित करने में सहायक होगी। किसी ने कहा कि प्रत्येक कार्य के लिए उचित समय जानने के लिए तांत्रिकों की सम्मति लेनी चाहिए।

4. साधू एक जंगल में रहता था और वह केवल साधारण लोगों से भेंट करता था।

5. राजा अपने प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए साधू के पास गया।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** राजा के निम्न तीन प्रश्न थे–

(i) प्रत्येक कार्य को करने के लिए उचित समय कौन-सा है?

(ii) परम आवश्यक व्यक्ति कौन है?

(iii) परम कर्तव्य क्या है?

2. लोगों ने राजा को पंडितों की एक समिति बनाने की सलाह इसलिए दी ताकि समिति राजा के प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित करे।

3. अपने ज्ञान के कारण साधू दूर-दूर तक विख्यात था।

4. राजा ने साधू की सहायता के लिए जमीन खोदी क्योंकि जब राजा साधू से मिलने गया तो साधू जमीन खोद रहा था और बुरी तरह थक चुका था।

5. राजा को अपने प्रश्नों के सही उत्तर तब मिले जब राजा ने साधु के कार्य में

हाथ बँटाया क्योंकि यदि राजा साधू की दुर्बलता पर तरस न खाता और उसकी सहायता में अपना समय न लगाता तो उसका शत्रु उसकी हत्या कर देता। यही सब समझाते हुए साधू ने उससे कहा कि वर्तमान समय तुम्हारे लिए परमावश्यक है क्योंकि इसी समय पर तुम्हारा अधिकार है। परमावश्यक व्यक्ति वही है जिसके साथ तुम हो और उस पर उपकार करना ही तुम्हारा परमावश्यक कर्तव्य है।

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

उत्तर– **1.** यह समाचार पाकर राजा के पास **पंडित** लोग आने लगे।

2. इन प्रश्नों के **यथार्थ** उत्तर पाने की अभिलाषा उसे बनी रही।

3. **साधू** एक जंगल में रहता था।

4. राजा ने ताजा **पानी** लाकर पिलाया।

5. मैं तुम्हारा सबसे सच्चा **गुलाम** बनकर रहूँगा।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

राजा	**रंक**	पुरस्कार	**दंड**
पंडित	**मूर्ख**	निर्धारित	**आकस्मिक**
स्वीकार	**अस्वीकार**	विख्यात	**कुख्यात**
दुर्बल	**सबल**	मित्र	**शत्रु**

(ख) इन शब्दों से वाक्य बनाओ–

उत्तर–

आशंका	मुझे इसी बात की **आशंका** थी।
योद्धा	शिवाजी एक महान तथा वीर **योद्धा** थे।
दुर्बल	हमें **दुर्बल** को नहीं सताना चाहिए।
एकाग्रता	किसी भी कार्य को करने के लिए **एकाग्रता** आवश्यक होती है।

(ग) इनके पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

राजा	**नृप**	**भूपति**
पानी	**वारि**	**जल**
साधू	**सज्जन**	**संत**
पंडित	**विद्वान**	**ज्ञानी**
घोड़ा	**अश्व**	**तुरंग**
जंगल	**वन**	**कानन**

(घ) वर्ण-विच्छेद करो–

उत्तर–	परमावश्यक	**प् + अ + र् + अ + म् + आ + व् + अ + श् + य् + अ + क् + अ**
	मनुष्य	**म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ**
	जंगल	**ज् + अं + ग् + अ + ल् + अ**
	साधू	**स् + आ + ध् + ऊ**

(ङ) निम्नलिखित प्रत्ययों से तीन-तीन शब्द बनाओ–

उत्तर–	वान	**दयावान**	**रूपवान**	**ज्ञानवान**
	इत	**पुष्पित**	**घटित**	**पालित**
	इक	**सांसारिक**	**भौतिक**	**राजनैतिक**
	ता	**सफलता**	**मृदुता**	**कठोरता**

(च) विशेषणों का विशेष्यों से मिलान करो–

उत्तर–
ताजा → पानी
दयालु → व्यक्ति
कठिन → प्रश्न
ऊँची → इमारत
घना → जंगल
ज्ञानी → महात्मा
तूफानी → रात

(छ) लिंग बदलो–

उत्तर–	पंडित	**पंडिताइन**	राजा	**रानी**
	साधू	**साध्वी**	औरत	**आदमी**
	सेठानी	**सेठ**	बेटा	**बेटी**

संप्रेषण

उत्तर– **1.** छात्र स्वयं करें।

2. **'समय पर काम करने का महत्व'**

समय एक ऐसी चीज़ है जिस पर मानव नियंत्रण नहीं कर सकता हम न अतीत में वापस जा सकते हैं और न ही भविष्य को देख सकते हैं इसलिए हमें अपना जीवन समय की गति के साथ जीना पड़ता है समय चूँकि निरंतर है इसलिए हमें अपने कार्य नियत समय पर करने चाहिए। एक बार बीत जाने पर समय लौटकर नहीं आता है। इसलिए अपने कार्य को टालना नहीं चाहिए। महात्मा कबीर ने भी कहा है ''कल करे सौ आज कर आज कर, आज करे सौ अब''। समय पर काम करने से समय की बचत होती है तथा अनावश्यक काम का बोझ कभी नहीं पड़ता है। समय पर

कार्य करने से हम निश्चिंत हो जाते हैं इससे कार्य में यदि कुछ कमी भी रहती है तो हम उसे समय रहते सुधार सकते हैं विद्यार्थी जीवन में तो समय का बहुत महत्व है समय पर गृहकार्य करने, अपना पाठ याद करने परीक्षा की तैयारी करने से ही हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अतः हमें अपने सभी काम समय पर करने चाहिए।

अंतर-विषयक अधिगम

निम्नलिखित विषयों पर अपने विचार लिखो–

उत्तर– समय के सही उपयोग के लिए आवश्यक है कि हमारे कुछ ऐसे कार्य जिन्हें हम कल पर टाल देते हैं उन्हें निबटा लेना चाहिए। इससे हमारे समय का सदुपयोग भी हो जाता है और हमारे अधूरे पड़े कार्य भी पूर्ण हो जाते हैं।

जीवन में परिश्रम तथा सही निर्णय का बहुत महत्त्व है क्योंकि सही समय पर सही निर्णय लेने से ही बिगड़ते हुए काम बन जाते हैं। लेकिन केवल सही निर्णय लेने से ही बात नहीं बनती उसके लिए परिश्रम भी आवश्यक होता है तभी व्यक्ति सफल हो सकता है।

वर्तमान ही जीवन का श्रेष्ठतम समय होता है क्योंकि अतीत हमारे हाथ से निकल चुका होता है और भविष्य का हमें पता नहीं होता इसलिए वर्तमान ही हमारे लिए महत्त्वपूर्ण होता है अतः हमें वर्तमान के बारे में ही सोचना चाहिए।

जो व्यक्ति परिश्रम से घबराता है वह जीवन में कुछ नहीं कर सकता है। क्योंकि बिना परिश्रम के व्यक्ति को कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति केवल भाग्य का रोना रोता रहता है और जीवन में कभी भी सफल नहीं होता।

आलसी व्यक्ति वास्तव में किसी मृत व्यक्ति के समान ही होता है। अपने आलस्य के कारण वह किसी भी कार्य को करने में असफल रहता है। उसका जीवन में किसी भी प्रकार का कोई वास्तविक उत्पादन नहीं रहता है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 भगत सिंह का पत्र (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** क्रांतिकारियों ने देश की आजादी के लिए अपना तन-मन-धन न्यौछावर करने की ठान रखी थी।

2. भगत सिंह तथा उसके साथियों पर मुकदमा इसलिए चलाया गया क्योंकि उन्होंने अंग्रेजी सरकार तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए लाहौर में ब्रिटिश संसद में बस-विस्फोट किया था।

3. भगत सिंह इस पत्र के जरिए सम्राट जॉर्ज पंचम के विरुद्ध छेड़े गए युद्ध की बात कर रहे थे।

4. भगत सिंह द्वारा यह पत्र पंजाब प्रांत के गवर्नर को लिखा गया था।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** भगत सिंह के साथ-साथ राजगुरु और सुखदेव पर भी देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया था।

2. भगत सिंह तथा उनके सहयोगियों पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने सम्राट जॉर्ज पंचम के विरुद्ध युद्ध किया है।

3. भगत सिंह ने अपने आपको युद्धबंदी बताते हुए अंग्रेजों से फाँसी देने के बदले गोली से उड़ा देने की माँग की।

4. भगत सिंह ने अपने पत्र में ऐसा इसलिए लिखा क्योंकि साम्राज्यवाद हो या पूँजीवाद, कोई भी व्यवस्था हमेशा कायम नहीं रह सकती है।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** यह गद्यांश भगत सिंह द्वारा लिखे गए पत्र से लिया गया है।

2. यह पत्र पंजाब प्रांत के गवर्नर को लिखा गया था।

3. जब कोई देश साम्राज्य विस्तार के लिए और अपने उद्योगों के विकास के लिए कच्चा माल प्राप्त करने हेतु तथा उसे बेचने के लिए बाजारों की तलाश में दूसरे देशों पर अधिकार करता है तब उसे साम्राज्यवाद तथा पूँजीवाद कहते हैं।

4. **विपरीतार्थक शब्द–**

युद्ध–**शांति**, अंतिम–**प्रथम**, जीवन–**मृत्यु**, आजाद–**बंदी**।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) इन शब्दों के पर्यायवाची लिखो–

उत्तर–	दिन	**दिवस**	**वार**	**वासर**
	युद्ध	**लड़ाई**	**संग्राम**	**समर**
	इच्छा	**कामना**	**लालसा**	**आकांक्षा**
	शक्ति	**बल**	**सामर्थ्य**	**पराक्रम**
	तन	**काया**	**शरीर**	**गात**

(ख) इन शब्दों से नए शब्द बनाओ–

उत्तर–	राह	**हरा**	दीन	**नदी**
	जरा	**राज**	खीरा	**राखी**
	चना	**नाच**	नाम	**मान**

(ग) विलोम शब्द पर सही (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर–	सजा	–	दंड	इनाम (✓)
	युद्ध	–	संधि (✓)	लड़ाई
	भिन्न	–	अलग	अभिन्न (✓)
	आजाद	–	गुलाम (✓)	स्वतंत्र

(घ) सरल वाक्यों को जोड़कर संयुक्त वाक्य बनाओ–

उत्तर–
1. भगत सिंह ने पत्र लिखा और सिपाही के हाथ गवर्नर तक भेजा।
2. घायल सैनिक उठा और हथियार उठाकर दुश्मन से लड़ने लगा।
3. अंग्रेज भारत में आए और व्यापार करने लगे।
4. वह देर रात तक जागी इसलिए स्कूल देर से पहुँची।
5. पिताजी आ जाएँ तो हम घूमने चलेंगे।
6. अध्यापक कक्षा में आए और कक्षा चुप हो गई।
7. गार्ड ने झंडी दिखाई और गाड़ी चल पड़ी।
8. मोहन आया और राम चला गया।
9. उसने भाषण दिया और सारा हॉल तालियों से गड़गड़ा उठा।

(ङ) 'अ' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर– धर्म – **अधर्म** सफल – **असफल**

सत्य – **असत्य** सुरक्षित – **असुरक्षित**

संप्रेषण

दी गई वर्ग पहेली से प्रमुख क्रांतिकारियों के नाम ढूँढों तथा उन पर एक चर्चा का आयोजन करो–

उत्तर–

			सु				
चं	द्र	शे	ख	र	आ	ज़ा	द
य			दे				
तीं		भ	व				
द्र	भ	ग	व	ती	च	र	ण
ना		त		रा	ज	गु	रु
थ		सिं					
		ह					

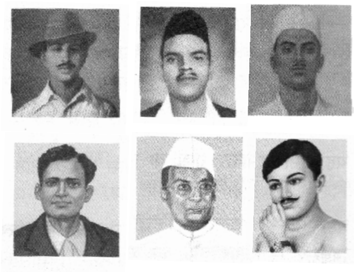

चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव, यतींद्रनाथ, भगतसिंह, भगवती चरण, राजगुरू

अंतर-विषयक अधिगम

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) स्वतंत्रता का महत्त्व समझाते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखो।

उत्तर– मोहित

5 सी/29

रोहिणी (दिल्ली)

3.12.20 ....

प्रिय मित्र राजेश,

नमस्कार!

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई कि तुम सकुशल हो, तुम्हारी कुशलता की सदैव ही कामना करता हूँ। तुमने लिखा कि तुम स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने कॉलेज में 'स्वतंत्रता का महत्त्व' नामक शीर्षक पर आधारित एक भाषण सुनाने वाले हो। तुमने बहुत ही अच्छा विषय चुना है। आजादी का महत्त्व तो वही जान सकता है जो किसी प्रकार के बंधन में बँधा हुआ हो। हमें कठोर संघर्षों द्वारा मिली हुई इस स्वतंत्रता का महत्त्व समझते हुए इसका सम्मान करना चाहिए। आशा करता हूँ कि तुम अपना भाषण जोशपूर्ण विचारों के साथ बोलोगे तथा सब पर अपनी छाप छोड़ने में सफल होंगे1 शेष मिलने पर।

तुम्हारा मित्र

मोहित

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

7 पिपीलिका (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. कवि ऐसा इसलिए पूछ रहा है क्योंकि वह चींटी के माध्यम से लोगों को संदेश देना चाहता है।

2. इस पंक्ति से तात्पर्य है कि चींटियों की पंक्ति ऐसी लगती है जैसे कोई काला धागा हो।

3. चींटियाँ मार्ग को बुहारती हैं।

4. कवि ने चींटियों को श्रमजीवी तथा सुनागरिक इसलिए कहा है क्योंकि चींटियाँ श्रमशील होती हैं तथा सभी नियमों का भली-भाँति पालन करती हैं।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. चींटी को देखा, वह छोटे-छोटे पैर रखती हुई, अन्य चींटियों के साथ मिल-जुलकर चलती हुई ऐसी लगती है मानो कोई काला धागा हो। चींटियों की ये पंक्तियाँ कण-कण चुनती हुई लगातार बिना थके काम करती हैं। वह अथक परिश्रम करती हुई अपने शत्रुओं पर वार करती है। तथा घर, आँगन और रास्ते को साफ करती हुई चलती है। उसकी निर्माण कला भी अद्भुत होती है। वह जो अपना घर बनाती है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। वह अपनी उस बाँबी में अलग-अलग कामों के लिए अलग-अलग भाग बनाती है। उसकी इस अद्भुत निर्माण क्षमता का मुकाबला कोई शिल्पकार भी नहीं कर सकता है। वह अपने अंडों को रखने के लिए कई प्रकार के घरों का निर्माण करती है। चींटी एक सामाजिक प्राणी है, वह एक श्रमजीवी तथा सुनागरिक प्राणी है।

2. गाय चराती, धूप खिलाती,
बच्चों की निगरानी करती,
लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
बल के दल सेना सँवारती,
घर, आँगन, जनपथ बुहारती।

3. चींटी की निर्माण कला इसलिए अद्‌भुत है क्योंकि वह बड़ी ही सफाई से अपनी बाँबी बनाती है।
4. चींटी में वे सभी गुण होते हैं जो एक सभ्य नागरिक में होने चाहिए। वह अनुशासन का पालन करती हुई, मार्ग में से हर प्रकार की गंदगी को साफ करती हुई, सभी को साथ लेकर चलती हुई, अपनी सामाजिकता का पालन करती है।

(ग) दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** रास्ते में जाती हुई चींटियाँ बहुत सुंदर दिखती हैं।
2. चींटियों की पंक्ति हिलती हुई ऐसी प्रतीत होती है, ज़ैसे कोई काला धागा हिल रहा हो।
3. चींटियाँ पंक्ति बनाकर चलती हैं।
4. अर्थ–विरल-<u>बहुत कम</u>, तम-<u>अंधकार</u>, तागा-<u>धागा</u>, लघुपद-<u>छोटे पैर</u>।

(घ) दिए गए पद्यांश का भावार्थ स्पष्ट करो–

उत्तर– **भावार्थ–**कवि कहता है कि चींटी पूरे नियमानुसार अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है। वह एक समूह के रूप में एकत्रित होकर अपने शुत्र पर साहस के साथ वार करती है तथा घर, आँगन और मार्ग को साफ करती हुई चलती है।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) इन शब्द-युग्मों के अर्थ बताओ–

उत्तर–
1. एक के बाद एक।
2. प्रत्येक कण।
3. बहुत से वनों में।
4. किनारे पर।
5. प्रत्येक घर।
6. युद्ध करने की कला।

(ख) विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

सरल	–	**कठिन**	काली	–	**सफेद**
निर्माण	–	**ध्वंस**	विस्तृत	–	**संक्षिप्त**
बहु	–	**अल्प**	अंधकार	–	**प्रकाश**
लघु	–	**दीर्घ**	धूप	–	**छाँव**

भला	–	**बुरा**	विरल	–	**सघन**

(ग) निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखो–

उत्तर–

दधि	**दही**	उलूक	**उल्लू**
कपोत	**कबूतर**	काक	**कौआ**
मयूर	**मोर**	घृत	**घी**
दुग्ध	**दूध**	आम्र	**आम**
क्षीर	**खीर**	उष्ट्र	**ऊँट**
चणक	**चना**	पंक्ति	**पंगत**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) 'हमें चींटी की तरह अनुशासित तथा परिश्रमी बनकर जीवन जीना चाहिए।' इस विषय पर एक सुंदर अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– हमें चींटी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। चींटी एक छोटा-सा परंतु श्रमशील प्राणी है जो निरंतर श्रम करते हुए अपने जीवन को चलाती है। वह कण-कण चुनकर अपना जीवन यापन करती है। वह समूह में कार्य करती है जिसमें हमें भी मिलजुल कर कार्य करने की प्रेरणा लेनी चाहिए। वह बिना थके परिश्रम करती है तथा एक बार असफल होने पर थककर बैठती नहीं है बल्कि पुनः प्रयास करती है तथा अंत में सफलता प्राप्त करती है। वह बहुत ही सुंदरता के साथ अपने घर का निर्माण करती है। इस तरह से उसकी सृजनशीलता भी हर तरह से अद्भुत है। वह एक सामाजिक तथा सभ्य प्राणी है जो नियमानुसार अपना जीवन-निर्वाह करती है। हमें ऐसे छोटे-से परंतु महत्त्वपूर्ण प्राणी से प्रेरणा लेकर स्वयं भी परिश्रमी तथा सुनागरिक बनने का प्रयास करना चाहिए।

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) दिए गए चित्र को देखो तथा नीचे लिखी काव्य पंक्तियों की मदद से एक सुंदर कविता लिखो–

उत्तर– बया प्यारी उड़ती फिरती।
पर काम से कभी न डरती।
तिनका-तिनका जोड़ती फिरती
फिर अपना घोंसला बनाती।
लगातार श्रम करके भी वह,

कभी न रुकती कभी न थकती
आओ उससे कुछ सीखें हम,
उसके जैसे बन जाएँ हम।
बया प्यारी उड़ती फिरती।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

8 कबीर के दोहे (दोहे)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** कबीरदास जी हमें ऐसे काम करने की प्रेरणा देते हैं जिनके कारण यह संसार हमें याद करे।

2. हमें ईश्वर को सुख में याद करना चाहिए।

3. इस दोहे के माध्यम से कवि हमें यह समझाना चाहता है कि प्रत्येक प्राणि के अंदर ईश्वर का वास है लेकिन दुनिया उसे नहीं देख पाती।

4. कबीरदासजी साधु की संगति करने को इसलिए कहते हैं क्योंकि ऐसे लोगों की संगति करने से उनके अच्छे विचारों की सुगंध हमारे अंदर भी बस जाती है।

5. जहाँ दया होती है, वहाँ धर्म का वास होता है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** मनुष्य को ईश्वर से उतना ही धन माँगना चाहिए जितने से उसकी भी पूर्ति हो जाए और वह द्वार पर आए हुए भूखे व्यक्ति का भी पेट भर सके।

2. इस पंक्ति का आशय यह है कि किसी से ज्ञान की बातें सीखते समय यह नहीं सोचना चाहिए कि वह छोटा है या बड़ा।

3. कबीर के अनुसार साधुओं (अच्छे लोगों) की संगति करने से उनके अच्छे विचार स्वतः ही हमारे अंदर प्रवेश कर जाते हैं।

4. लोभ और क्रोध पाप और काल का कारण बनते हैं।

5. कबीरदास जी असली पंडित उसे मानते हैं जिसे दूसरों से प्रेम करना आता है, क्योंकि उनके अनुसार मोटे-मोटे ग्रंथ पढ़कर ही कोई विद्वान नहीं बनता है, बल्कि विद्वान वहीं होता है जो ज्ञानी होने के साथ-साथ दूसरों से प्रेम करना भी जानता हो।

(ग) दिए गए दोहों की सप्रसंग व्याख्या करो–

उत्तर– 1. **प्रसंग**–प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक से **'कबीर के दोहे'** नामक पाठ से लिया गया है। इसमें **कबीरदास जी** ने व्यक्ति को अच्छे कार्य करने के लिए कहा है।

व्याख्या–कबीरदास जी कहते हैं कि जब व्यक्ति इस संसार में आता है तो वह रोते हुए आता है तथा उसे देखकर सब हँसते (प्रसन्न होते) हैं। इसलिए व्यक्ति को अपने कार्यों से संसार में अपनी ऐसी पहचान बनानी चाहिए कि उसके इस संसार से जाने पर सब उसको याद करके रोएँ।

2. **प्रसंग**–प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक से **'कबीर के दोहे'** नामक पाठ से लिया गया है। इसमें **कबीर** ने कहा है कि ज्ञान हमें जहाँ से भी मिले, ले लेना चाहिए।

व्याख्या–कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार हमें तलवार के कार्य का महत्त्व जानना चाहिए न कि यह देखना चाहिए कि वह कैसे आवरण से ढकी हुई है, उसी प्रकार हमें किसी से भी ज्ञान ले लेना चाहिए, यह नहीं देखना चाहिए कि ज्ञान देने वाला छोटा है अथवा बड़ा।

3. **प्रसंग**–प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक से **'कबीर के दोहे'** नामक पाठ से लिया गया है। इसमें **कबीर** ने कहा है कि हमें अपने निंदकों को हमेशा अपने पास रखना चाहिए।

व्याख्या–कबीरदास जी कहते हैं कि अपनी निंदा करने वालों को अपने घर तथा आँगन में अपने पास ही रखना चाहिए क्योंकि निन्दा सुनकर ही हमें स्वयं को निर्मल करने का विचार आ सकता है और इसके लिए हमें साबुन तथा पानी की आवश्यकता भी नहीं होती।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो और वाक्य बनाओ–

उत्तर– कुटुम	**परिवार**	उसका सारा **कुटुंब** एक जगह इकट्ठा हो गया।
मृग	**हिरन**	मारीच सोने का एक खूबसूरत **मृग** बन गया।

संगत	**साथ**	हमें अच्छे लोगों की **संगति** करनी चाहिए।
निर्मल	**स्वच्छ**	गंगा का जल बहुत-ही **निर्मल** और पावन है।

(ख) विलोम शब्दों से मिलान करो–

उत्तर–
सुख → दुःख
ज्ञान → अज्ञान
दयालु → निर्दय
क्षमा → दंड
धर्म → अधर्म
प्रेम → घृणा
पंडित → मूर्ख

(ग) भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर–

भूखा	**भूख**	नारी	**नारीत्व**
जाति	**जातीय**	बुरा	**बुराई**
पंडित	**पंडिताई**	स्व	**स्वत्व**

(घ) निम्नलिखित अविकारी शब्दों से एक-एक वाक्य बनाओ–

उत्तर– तथा – कबीर की जीवनी लिखिए **तथा** उनकी रचनाओं के संबंध में बताइए।
और – मीता **और** सागर बाजार गए।
तब – अगर मैं तुम्हें कुछ कहूँ **तब** कहना, वरना चुप रहो।
यहाँ – आज **यहाँ** तुम कैसे आ गए?
ओह – **ओह**! यह तुमने क्या किया?
हाय – **हाय**! मेरी तो जान ही निकल गई।

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।
2. कबीर जी के जीवन तथा उनके कवित्व के विषय में जानकारी एकत्र करो तथा उसे एक लेख के रूप में लिखो।

उत्तर– संत कबीरदास का जन्म सन् 1398 के लगभग लहरतारा ताल, काशी में हुआ था। नीरू और नीमा इनके पालक माता-पिता थे और इनकी पत्नी का नाम लोई था। इनकी दो संतानें थीं–कमाल (पुत्र) और कमाली (पुत्री)। इनकी कर्मभूमि काशी, बनारस रही और कर्मक्षेत्र कविताओं के द्वारा समाज सुधार करना रहा।

इनकी मुख्य रचनाएँ साखी, सबद और रमैनी हैं जिनमें अवधी, सधुक्कड़ी और पंचमेल खिचड़ी भाषा में सामाजिक विषय उठाए गए हैं। संत कबीरदास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। वे कर्मप्रधान समाज के पैरोकार थे। इसकी झलक उनकी रचनाओं में साफ झलकती है। उनका समस्त जीवन मानों लोककल्याण हेतु था। कबीर को वास्तव में एक सच्चे विश्वप्रेमी का अनुभव था। कबीर की सबसे बड़ी विशेषता थी–उनकी प्रतिभा में अबाघ गति और अदम्य प्रखरता। समाज में कबीर को जागरण युग का अग्रदूत कहा जाता है। इस महान व्यक्तित्व का निधन सन् 1518 के लगभग मगहर में हुआ माना जाता है।

3. कबीर जी द्वारा रचित दो अन्य दोहे संकलित करो तथा उनका भावार्थ स्पष्ट करो।

उत्तर– **दोहा** :

गुरु-गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।

भावार्थ–कबीरदास जी कहते हैं कि मेरे सामने गुरु तथा भगवान दोनों खड़े हुए हैं, मैं किसकी शरण में जाऊँ? फिर कबीर कहते हैं–मैं गुरु पर ही स्वयं को न्यौछावर करता हूँ क्योंकि उन्होंने ही मुझे ईश्वर तक जाने का मार्ग बतलाया है।

दोहा

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करें, आपहु सीतल होय।।

भावार्थ–कबीरदास जी कहते हैं कि हमें ऐसी (मीठी) वाणी बोलनी चाहिए जो सभी के मन को मोहित कर लें। जिसे सुनकर औरों के साथ-साथ स्वयं को भी शीतलता का अनुभव हो।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

9 हिम्मती सुमेरा (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** सुमेरा एक साहसी बालक था।

2. सुमेरा के पिता बस-अड्डे पर इधर-उधर माल ढोते थे।

3. सुमेरा ने अपने स्कूल के अध्यापक से काम करने के लिए कुछ रुपये उधार माँगे।

4. सुमेरा का सामान एक साइकिल वाले आदमी ने उठाया क्योंकि वह बिना लाइसेंस के सामान बेच रहा था।

5. राजा साहब ने सुमेरा को लाइसेंस तथा सौ रुपये दिए।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** सुमेरा के पिता ने उसे सच्चाई और ईमानदारी की अनूठी शिक्षा दे रखी थी।

2. पढने-लिखने के साथ-साथ सुमेरा को काम करने के लिए विवश होना पड़ा क्योंकि उसके पिता लकवे के शिकार हो गए थे तथा घर में खाने-पीने के लाले पड़ गए थे।

3. जब मास्टर साहब ने सुमेरा को पैसे देते हुए कहा कि इनाम समझकर रख लो, तब सुमेरा ने कहा, ''यह उधार है और ये पैसे मैं आपको लौटा दूँगा।'' सुमेरा की इस बात पर मास्टर साहब ने उसकी पीठ थपथपाई।

4. सब्जी मंडी में बिना लाइसेंस के सामान बेचने पर दो रुपये रोज देने पड़ते थे। सुमेरा के रुपये न देने पर कमेटी के लोग उसका सारा सामान उठा कर ले गए। किसी के द्वारा कोई मदद न मिलने पर उसे मदद के लिए राजा साहब के पास जाना पड़ा।

5. सुमेरा ने अपने परिश्रम के बल पर ही अपने जीवन को सुखमय बनाया क्योंकि आरंभ में उसके पास काम शुरू करने के लिए भी पैसे नहीं थे लेकिन अपनी मेहनत के बल पर वह एक बड़ा दुकानदार बन गया।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** सुमेरा को संतरे बेचकर धन कमाने की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि उसके पिता लकवाग्रस्त होने के कारण धन कमाने में असमर्थ थे।

2. सुमेरा ने संतरे खरीदने के लिए अपने स्कूल के मास्टर जी से रुपये उधार लिए।

3. सुमेरा ने शाम तक छत्तीस रुपये के संतरे बेचे।

4. मंडी = **थोक बिक्री का स्थान**, एकमात्र = **इकलौता**, आखिर = **अंततः**, शाम = **संध्या**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. सुमेरा ने, मास्टर साहब से

2. राजा साहब ने, सुमेरा से

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद करो–

उत्तर– हिम्मत	**ह् + इ + म् + म् + अ + त् + अ**
बेईमानी	**ब् + ए + ई + म् + आ + न् + ई**
अस्पताल	**अ + स् + प् + अ + त् + आ + ल् + अ**
गरीब	**ग् + अ + र् + ई + ब् + अ**
शिकायत	**श् + इ + क् + आ + य् + अ + त् + अ**
खिड़की	**ख् + इ + ड़् + अ + क + ई**

(ख इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखो–

उत्तर– मन	**हृदय**	**वजन करने वाला बाट**
पास	**निकट**	**उत्तीर्ण होना**
कर	**करना**	**हाथ**
मान	**मानना**	**सम्मान**

(ग) विशेषण और विशेष्यों का मिलान करो–

उत्तर– अच्छा	मास्टर
बड़ा	दरवाजा
ताजी	बालक
दयालु	सब्जियाँ
मजबूत	बाजार

(घ) वर्ग-पहेली से पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखो–

उत्तर– राजा	**राजन**	बच्चा	**बालक**
पिता	**जनक**	रात	**रजनी**
दिन	**दिवस**		

(ङ) भाववाचक संज्ञा पर (✓) का चिहन लगाओ–

उत्तर– बच्चा – बचपन (✓) बालक

इंसान	–	मनुष्य	इंसानियत (✓)
खुश	–	नाखुश	खुशी (✓)
कमाना	–	कमाई (✓)	कमाऊ
ईमानदार	–	सच्चा	ईमानदारी (✓)
गरीब	–	गरीबी (✓)	निर्धन
निपुण	–	कामकाजी	निपुणता (✓)

संप्रेषण

संवाद को आगे बढ़ाइए–

उत्तर– छात्र अ – ईमानदारी किसे कहते हैं?

छात्र ब – अपने काम को सच्चाई से पूरा करना तथा किसी को धोखा न देना ही ईमानदारी है।

छात्र अ – ईमानदार आदमी के साथ लोग कैसा व्यवहार करते हैं?

छात्र ब – ईमानदार आदमी को सभी प्रेम करते हैं तथा उसके साथ अपनेपन का व्यवहार करते हैं।

छात्र अ – व्यक्ति ईमानदारी कहाँ से सीखता है?

छात्र ब – व्यक्ति ईमानदारी अपने आस-पास तथा परिवार के लोगों से सीखता है।

छात्र अ – धन की कमी होने पर भी क्या ईमानदारी जिंदा रह सकती है?

छात्र ब – हाँ, धन की कमी होने पर भी ईमानदारी जिंदा रह सकती है।

छात्र अ – क्या इस भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था में हमें ईमानदारी छोड़ देनी चाहिए।

छात्र ब – नहीं, व्यवस्था कितनी भी भ्रष्ट हो, हमें ईमानदारी नहीं छोड़नी चाहिए।

छात्र अ – क्या वर्तमान समय में भी हमें ईमानदार लोग मिल सकते हैं?

छात्र ब – हाँ, वर्तमान समय में भी हमें ईमानदार लोग मिल सकते हैं।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) 'ईमानदारी एक अच्छी नीति है।' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– ईमानदारी एक ऐसा नैतिक गुण है जिसको सर्वत्र आदर तथा सम्मान मिलता है। व्यक्ति के जीवन में दुख-सुख आते-जाते रहते हैं, उतार-चढ़ाव लगे रहते हैं लेकिन विपरीत परिस्थितियों में भी संतुलन बनाये रखना व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचायक होता है। स्वभाव से ईमानदार व्यक्ति के जीवन में चाहे कितने ही

ऐसे दुखद क्षण आएँ जिनमें उसका ईमान डगमगा सकता है लेकिन वह उन क्षणों में भी अपने धैर्य को बनाये रखता है तथा अपनी हिम्मत तथा दृढ़ता का परिचय देता है और अंततः समाज में अपना स्थान बना ही लेता है।

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) दी गई पंक्ति का भावार्थ अपने शब्दों में स्पष्ट करो–

उत्तर– भावार्थ : जब सुमेरा ने राजा साहब को अपनी आपबीती सुनाई तो एक दस साल के बच्चे की इतनी हिम्मत देखकर राजा साहब आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने सुमेरा को अपने पास बुलाया और उसकी कमर थपथपाकर उसे शाबाशी दी।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

10 चरित्र ही सबसे बड़ा धन (जातक-कथा)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. आचार्य ने अपने शिष्यों को प्रांगण में बुलाकर अपनी कन्या के विवाह के लिए धन लाने को कहा।

2. आचार्य को यह सोचकर संकोच हो रहा था कि छात्रों के परिवार के लोग उन्हें लालची समझेंगे।

3. आचार्य ने अपने निर्धन शिष्यों के विषय में यह सोचकर निर्णय लिया कि कहीं वे गुरु-सेवा से वंचित न रह जाएँ इसलिए उनसे भी कुछ-न-कुछ मँगाया जाए।

4. आचार्य ने ये शब्द अपने उस शिष्य से कहे, जो उनके लिए कुछ भी न लाया था।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. आचार्य की चिंता का कारण यह था कि उनकी कन्या विवाह योग्य हो गई थी और आचार्य के पास उसके विवाह के लिए पर्याप्त धन नहीं था।

2. धनवान परिवारों के विद्यार्थियों ने आचार्य को धन लाने की तसल्ली दी क्योंकि आचार्य अपनी पुत्री के विवाह के लिए चिंतित थे।
3. आचार्य ने सबसे छिपाकर धन लाने को कहा।
4. धन न लाने वाले विद्यार्थी ने आचार्य से कहा, ''गुरुदेव, मैंने बड़ी चेष्टा की पर घर में कहीं भी ऐसा स्थान न मिला जहाँ मुझे कोई भी देख न रहा हो। अन्य कोई देखे या न देखे, मैं तो अपने कुकर्म को देखूँगा ही।''
5. आचार्य ने अपनी कन्या के लिए योग्य वर के रूप में उस शिष्य को चुना, जो उनके लिए कुछ नहीं लाया था, क्योंकि उसने आचार्य के कहने पर भी पाप का मार्ग नहीं अपनाया था।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. गुरुदेव को अपने विद्यार्थी से यह शिकायत थी कि वह उनके लिए कुछ भी नहीं लाया था।
2. विद्यार्थी अपने गुरु जी द्वारा बताया गया धन लाने में असफल रहा था।
3. गुरुदेव ने अपने विद्यार्थी की बात सुनकर बहुत गर्व महसूस किया।
4. गुरुदेव ने अपने शिष्यों की परीक्षा इसलिए ली क्योंकि वे ये देखना चाहते थे कि वे अपने शिष्यों को शिक्षित करने में कहाँ तक सफल हुए हैं।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. आचार्य ने विद्यार्थियों से कहा क्योंकि वह अपनी कन्या के विवाह के लिए छात्रों से धन मँगाना चाहते थे।
2. आचार्य ने एक छात्र से कहा क्योंकि वह आचार्य के लिए धन नहीं लाया था।
3. छात्र ने आचार्य से कहा क्योंकि आचार्य ने धन छुपाकर लाने के लिए कहा था।

भाषा ज्ञान आलोचनात्मक सोच

(क) इनके समानार्थी शब्द लिखो–

उत्तर–

यशस्वी	**कीर्तिमान**	छात्र	**विद्यार्थी**
आचार्य	**गुरु**	लाज	**शर्म**
वंचित	**के बिना**	निर्धन	**गरीब**

(ख) निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखो–

उत्तर–

विद्वान	**मूर्ख**	प्रसिद्ध	**गुमनाम**
प्रिय	**अप्रिय**	निर्धन	**धनी**

(ग) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर–

विद्वान	**विद्वत्ता**	योग्य	**योग्यता**
गुरु	**गुरुत्व**	वीर	**वीरता**

अच्छा	**अच्छाई**	निर्धन	**निर्धनता**

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में तिरछे सर्वनाम पाठ में किन संज्ञा शब्दों के लिए प्रयुक्त हुए हैं, लिखो–

उत्तर– **1.** आचार्य के लिए **2.** कन्या के लिए
3. छात्रों के लिए **4.** एक छात्र के लिए

(ङ) 'वान' लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

गुण	**गुणवान**	चरित्र	**चरित्रवान**
बल	**बलवान**	धन	**धनवान**
रूप	**रूपवान**	गाड़ी	**गाड़ीवान**

(च) पाठ में से चार विशेषण शब्द छाँटकर लिखो–

उत्तर– विशाल विद्वान धनवान निर्धन

(छ) इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखो–

उत्तर–

गुरु	**श्रेष्ठ**	**अध्यापक**
पास	**निकट**	**उत्तीर्ण**
भाव	**मूल्य**	**मन के विचार**
बस	**पर्याप्त**	**काबू में करना**

(ज) वाक्य के लिए एक शब्द लिखो–

उत्तर– **1.** विवाहित **2.** गुरु दक्षिणा **3.** संकोची
4. अविश्वसनीय **5.** गुरुदेव **6.** निर्धन।

(झ) निम्नलिखित के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

प्रकाश	**रोशनी**	**किरण**	**उजाला**
वृक्ष	**पेड़**	**विटप**	**तरु**
शरीर	**गात**	**काया**	**तनु**
कपड़ा	**अंबर**	**वस्त्र**	**पट**
रात	**रजनी**	**रात्रि**	**निशा**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) 'चरित्रवान व्यक्ति ही सबको प्रिय लगता है।' इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करो।

उत्तर– मानव जीवन में चरित्र का सर्वोपरि स्थान है। एक धनी व्यक्ति यदि चरित्रहीन है तो उसको हेय दृष्टि से देखा जाता है। एक निर्धन व्यक्ति भी यदि विद्वान तथा

चरित्रवान है तो उसकी सर्वत्र पूजा होती है। कहते हैं कि धन तो आता है और चला जाता है। खराब स्वास्थ्य भी ठीक हो सकता है परंतु चरित्र यदि एक बार चला जाए तो व्यक्ति का सब कुछ चला जाता है।

(ख) दी गई वर्ग-पहेली में कुछ शब्द छिपे हुए हैं, उन्हें ढूँढकर लिखो तथा उनके पर्यायवाची लिखो। उनको वाक्यों में भी प्रयोग करो–

उत्तर–

गुरु	आचार्य
कर्म	काम
इज्जत	सम्मान
व्यवहार	आचार
कन्या	बाला
भाग्य	किस्मत

वाक्य–गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है।
मानव को सदैव अच्छे कर्म ही करने चाहिए।
अच्छे कार्यों से व्यक्ति को सदैव इज्जत तथा सम्मान मिलता है।
हमें सभी के साथ सौम्यता का व्यवहार करना चाहिए।
वह छोटी-सी कन्या सबका मन मोह रही थी।
भाग्य का लिखा हुआ कोई नहीं मिटा सकता।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

11 धरती का स्वर्ग-कश्मीर (रूपक)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** कश्मीर भारतीय उपमहाद्वीप का हिस्सा है।

2. भारतीय कश्मीर घाटी में छः जिले हैं–श्रीनगर, बड़गाम, अनन्तनाग, पुलवामा, बारामुला और कुपवाड़ा।

3. झील में तैरते हुए घरों को हाउस बोट कहते हैं। इनमें दो या तीन सोने के कमरे, स्नान घर, बैठक सब कुछ होता है।
4. श्रीनगर का दूसरा प्रसिद्ध उद्यान है–'निशात बाग।' निशात का अर्थ होता है–प्रसन्नता। इसे शाहजहाँ के ससुर आसफजहाँ ने बनवाया था। यह भी सीढ़ीनुमा है।
5. सोनमर्ग समुद्र तल से लगभग 3000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। सिंधु नदी के दोनों और फैले यहाँ के मार्ग सोने जैसे सुंदर दिखाई देते हैं। इसलिए इसे सोने का मैदान भी कहा गया है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण यह पर्यटकों के लिए निराली सैरगाह है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. कश्मीर के बारे में कवियों ने कहा है कि–'गर फिरदौस बर रुए जमीन अस्त, हमीं अस्त, हमीं अस्त, हमीं अस्त।' (अगर इस धरती पर स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।)
2. प्राचीन काल से माना जाता है कि यहाँ पर भगवान शिव की पत्नी देवी सती रहा करती थीं, और उस समय यह वादी पूरी पानी से ढ़की हुई थी। यहाँ एक राक्षस नाग भी रहा करता था, जिसे वैदिक ऋषि कश्यप और देवी सती ने मिलकर हरा दिया और झेलम नदी के रास्ते बहा दिया। इस तरह इस जगह का नाम सतीसार से कश्मीर पड़ा। इससे अधिक तर्कसंगत प्रसंग यह है कि इसका वास्तविक नाम कश्यपमर (कछुओं की झील) था। इसी से कश्मीर नाम निकला।
3. झील में तैरते खेत शायद ही कहीं और हों। लकड़ी के बड़े-बड़े फट्टों पर मिट्टी, घास, बुरादा आदि जमाकर खेत तैयार किया जाता है। इन खेतों को अपनी नाव के साथ बाँधकर इनके मालिक इन्हें इधर-उधर कहीं भी ले जा सकते हैं।
4. मुगल बादशाहों द्वारा निर्मित कश्मीर के बाग-बगीचे यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं। गुलाब और रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियों, फव्वारों की कतारों तथा हरे-भरे वृक्षों से सजे ये उद्यान पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।
5. कश्मीर घाटी का हमारे पर्यटन में बहुत अधिक महत्त्व है। कश्मीर की घाटी का नयनाभिराम सौंदर्य बरबस ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। यहाँ लगभग पूरे वर्ष पर्यटकों का मेला-सा लगा रहता है। ग्रीष्म ऋतु में तो विशेषकर यह पूरा स्थान पर्यटकों से भर जाता है।

पर्यटन न केवल यहाँ की वरन् भारत के लिए भी आय उपार्जन का एक प्रमुख स्रोत है।

6. भारतीय कश्मीर जम्मू और कश्मीर प्रांत का एक खंड है। पाकिस्तान इस पर भारत का अधिकार नहीं मानता और इसे अधिकृत करना चाहता है। कश्मीर एक मुस्लिम बहुल प्रदेश है। आज यह आतंकवाद से जूझ रहा है। इसकी मुख्य भाषा कश्मीरी है।

(ग) दी गई पंक्ति का अर्थ बताओ–

उत्तर– **1.** अगर इस धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

उत्तर– **1.** कश्मीर एक **मुस्लिम** बहुल प्रदेश है।

2. इस तरह इस जगह का नाम **सतीसार** से कश्मीर पड़ा।

3. बादशाह **जहाँगीर** ने शालीमार बाग को सीढ़ीनुमा बनवाया।

4. **सोनमर्ग भी** कश्मीर की एक निराली सैरगाह है।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

धरती	**धरा**	**वसुधा**
दुनिया	**संसार**	**जग**
झील	**बहुत बड़ा तालाब**	**जलाशय**
बाग	**वाटिका**	**बगीचा**

(ख)

पाकिस्तान	-	प् + आ + क् + इ + स् + त् + आ + न् + अ
कश्मीर	-	क् + अ + श् + म् + ई + र् + अ
सैरगाह	-	स् + ऐ + र् + अ + ग् + आ + ह् + अ
कुपवाड़ा	-	क् + उ + प् + अ + व् + आ + ड़् + आ

(ग) भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर–

खूबसूरत	**खूबसूरती**	सजाना	**सजावट**
सती	**सतीत्व**	भव्य	**भव्यता**
विशाल	**विशालता**	मानव	**मानवता**

(घ) दिए गए वाक्यों में सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण छाँटिए–

उत्तर– **1.** यह स्थान **2.** वे कश्मीर **3.** वह पुस्तक

4. वह लेखक **5.** उस नदी।

(ङ) निम्न उपसर्ग लगाकर तीन-तीन शब्द बनाओ–

उत्तर–

'कु'	**कुसंग**	**कुचाल**	**कुविचार**
'सु'	**सुनीति**	**सुसंस्कृत**	**सुसंगति**

‘स्व’	**स्वजन**	**स्वराज्य**	**स्वतंत्र**
‘चिर’	**चिरकाल**	**चिरपरिचित**	**चिरस्थाई**
‘परा’	**पराजय**	**पराक्रम**	**पराभव**

(च) इनके अर्थ लिखो–

उत्तर–

अस्त	**छिपना**	बाग	**बगीचा**
हस्त	**हाथ**	भाग	**हिस्सा**
सेर	**तोल**	आदि	**और अन्य**
सैर	**घूमना**	आदी	**आदत**

संप्रेषण

संवाद को आगे बढ़ाओ–

विद्यार्थी अ – ग्रीष्मावकाश के दौरान मैं अपने परिवार के साथ कश्मीर घूमने गया था।
विद्यार्थी ब – कश्मीर के लिए बस कहाँ से मिलती है?
विद्यार्थी अ – कश्मीर के लिए बस जम्मू से मिलती है।
विद्यार्थी ब – लोग कश्मीर को ‘धरती का स्वर्ग’ कहते हैं। क्या यह सच है?
विद्यार्थी अ – हाँ, वाकई कश्मीर ‘धरती का स्वर्ग’ ही है।
विद्यार्थी ब – कश्मीर की क्या वस्तु प्रसिद्ध है?
विद्यार्थी अ – कश्मीर की केसर पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।
विद्यार्थी ब – अच्छा! मैं भी एक बार कश्मीर अवश्य जाना चाहता हूँ।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) ‘कश्मीर : धरती का स्वर्ग’ शीर्षक से एक सुंदर निबंध लिखो।

उत्तर– ‘कश्मीर : धरती का स्वर्ग’

कश्मीर भारतीय उपमहाद्वीप का एक खंड है जिस पर पाकिस्तान अपना आधिपत्य जमाना चाहता है। यह झेलम नदी की वादी में बसा हुआ एक खूबसूरत प्रदेश है जो अपनी सुंदरता के कारण ‘धरती का स्वर्ग’ कहलाता है।

श्रीनगर जम्मू कश्मीर की राजधानी है। यह शहर और उसके आस-पास के क्षेत्र संसार के सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थल माने जाते हैं; जैसे–डलझील, शालीमार और निशात बाग, पहलगाम, चश्मेशाही आदि। श्रीनगर डलझील के चारों ओर बसा है। इस झील में सुंदर शिकारे में बैठकर घूमने का अपना ही आनंद है।

श्रीनगर से दूर भी किसी दिशा में निकल जाएँ तो प्रकृति के इतने रूप देखने को मिलते हैं कि लगता है, जैसे उसने अपना सारा खजाना यहीं समेट रखा हो। गुलमर्ग, सोनमर्ग और पहलगाम आदि कश्मीर के निराले सैरगाह स्थल हैं।

कश्मीर के साथ-साथ वहाँ के निवासी और वहाँ की कारीगरी भी सुंदर है। वहाँ के कालीन, पश्मीना शॉल, लकड़ी की नक्काशी और पेपरमेशी के बारीक काम वाले सजावटी सामान का जवाब नहीं। यहाँ की केसर पूरे विश्व में मशूहर है। यहाँ पर चेरी, खूबानी और सेबों के आकर्षक बगीचे हैं।

कश्मीर ज्ञान-ध्यान की भूमि भी रही है। यहाँ पर कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की गई। संस्कृत के महाकवि कालिदास ने भी अपनी कई रचनाएँ इसी रमणीक भूमि पर सृजित कीं। अतः कहा जा सकता है कि इसकी उपमा कहीं भी नहीं है।

(ख) प्रिय पत्र को कश्मीर पर पत्र

230/A, अशोक विहार,
कानपुर।
दिनांक :
प्रिय समीर
नमस्ते!

प्रिय मित्र कुछ दिन पहले ही मै कश्मीर घाटी के दर्शन करके लौटा हूँ। मैं और मेरे पिताजी ही वहाँ गए थे। कश्मीर तो सच में ही धरती का स्वर्ग है मैंने वहाँ डल झील, निशात बाग, मोईन-ए-मुकद्दस, हजरतबल और बोट हाउस देखें। वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य से मैं अभिभूत हूँ। वहाँ के बर्फ से ढके पहाड़ और हरीकालीन से लगते मैदान तो सच में सपने जैसे लगते हैं।

अगली बार हम यदि गए तो तुम भी हमारे साथ चलना। अंकल-आंटी को मेरा नमस्ते कहना।

तुम्हारा मित्र
निशांत।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

12 भारत माता का मंदिर (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** भारत माता के मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ पर सभी समान हैं। कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

2. कवि प्रेम-उन्माद को भला इसलिए बताता है क्योंकि उससे शत्रुता का भाव पैदा नहीं होता।

3. अजातशत्रु बनने के लिए सबको मित्र बनाना होगा।

4. कवि भारत माता की प्रसव वेदना को समझने की बात करता है क्योंकि सभी जन उसके पुत्र हैं।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** शिव कल्याण से आशय है–सबका कल्याण हो तथा सभी सुखी हों।

2. भारत में निहित विविध धर्मों की विशेषता यह है कि सब एक ही ईश्वर को मानते हैं तथा सभी का संदेश है–मानवता की रक्षा करना।

3. भारतीय संस्कृति अपने आप में बहुत सारी विशेषताएँ समेटे हुए है। यहाँ सभी को आदर तथा सम्मान दिया जाता है, यहाँ सभी को समानता का दर्जा दिया जाता है तथा सभी के लिए कल्याण की भावना रखी जाती है।

4. कवि आदर्श चरित्र गढ़ने पर बल देता है।

5. इस कविता से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने राष्ट्र से प्रेम करना चाहिए तथा राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक मानव को बंधुत्व की भावना के साथ अपनाना चाहिए।

(ग) दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** भारत की धार्मिक विशेषता है–सबका स्वागत तथा आदर करना।

2. भारत के लोग सम्मान व आदर सबको प्रदान करते हैं।

3. इस कविता के कवि मैथिलीशरण गुप्त जी हैं।

4. आदर = **सम्मान**, सम = **समान**, सुलभ = **आसानी से मिलने वाला**, ध्यान = **चित्त की एकाग्रता**।

(घ) दिए गए पद्यांश का भावार्थ स्पष्ट करो–

उत्तर– **भावार्थ**–इन पंक्तियों में कवि देश के नागरिकों को संबोधित करते हुए कहता है कि आओ, हम अजातशत्रु बनकर सबके बीच से शत्रुता का भाव मिटा दें तथा सभी को अपना मित्र बना लें तथा अपने मन तथा हृदय से वैर-भाव को समाप्त कर दें।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के पर्याय छाँटकर लिखो–

उत्तर–

कल्याण	**हित**	बुद्धि	**ज्ञान**
पवित्र	**निर्मल**	हर्ष	**प्रसन्नता**
लाभ	**फायदा**	न्याय	**इंसाफ**

(ख) निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखो–

उत्तर–

आदर	**अनादर**	सुलभ	**दुर्लभ**
गुण	**अवगुण**	प्रेम	**घृणा**
हर्ष	**विषाद**	ज्ञान	**अज्ञान**

(ग) अब, नीचे दिए गए उपसर्गों से दो-दो नए शब्द बनाओ–

उत्तर–

उपसर्ग		**शब्द**	
अव	–	**अवगुण**	**अवधारणा**
निर	–	**निर्जन**	**निर्गुण**
प्र	–	**प्रकार**	**प्रभाव**
सम	–	**समभाव**	**समकोण**
उप	–	**उपकार**	**उपजाति**
अ	–	**असहिष्णु**	**असहनीय**

(घ) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताओ–

उत्तर–

प्रसाद	**पुल्लिंग**	माता	**स्त्रीलिंग**
शत्रु	**पुल्लिंग**	कंठ	**पुल्लिंग**
चित्र	**पुल्लिंग**	कली	**स्त्रीलिंग**

(ङ) विलोम शब्द पर (✓) का चिह्न लगाओ–

उत्तर–

समता	–	समानता	विषमता (✓)	बराबरी
सम्मान	–	अपमान (✓)	आदर	मान
प्रेम	–	प्यार	घृणा (✓)	अनुराग
मित्र	–	शत्रु (✓)	दोस्त	इंसान
हर्ष	–	खुशी	प्रसन्नता	विषाद (✓)

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. 'भारत माता का मंदिर' नामक यह कविता भारत की धार्मिक व सांस्कृतिक

विशेषताओं तथा समाज के स्वरूप का ज्ञान कराती है। इस कविता को ध्यानपूर्वक पढ़ो तथा उसको गद्य रूप में लिखो।

उत्तर– 'भारत माता का मंदिर' नामक यह कविता भारत की धार्मिक व सांस्कृतिक विशेषताओं तथा समाज के स्वरूप का ज्ञान कराती है। इस कविता में कवि ने भारत के नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा है कि हमारा यह देश भारत माता का मंदिर है। यहाँ सभी समान हैं। सभी का कल्याण हो। यहाँ सबका आदर तथा सम्मान किया जाता है तथा सभी धर्मों का एक ही संदेश है–मानवता को अपनाना। यहाँ अनेक संस्कृतियों का मिश्रण है लेकिन सभी का संदेश है–शत्रुता को मिटाकर प्रेम का संचार करना। हमें सारे ईर्ष्या भाव मिटाकर अपने हृदय को पवित्र बनाना होगा, तभी सबका कल्याण होगा इसलिए आओ! सबको अपना मित्र बना लें। हम अपने चरित्र को आदर्श बनाएँ तथा सामूहिक रूप से देश के लिए जयनाद करें। हम सत्य के मार्ग पर चलते हुए न्याय की बातें करें तथा अपने लाभ और कर्तव्य का ध्यान रखें। यह हमारी भारत माता का आँगन है तथा हम सब भाई-भाई हैं। हम उसकी पीड़ा को समझते हुए सभी के साथ अपनी खुशियाँ और दुख बाँटें। यह भारत माता का मंदिर है। यहाँ सभी का कल्याण हो।

2. 'राष्ट्रीय एकता में ही राष्ट्रीय शक्ति निहित है।' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– राष्ट्रीय एकता में ही राष्ट्रीय शक्ति निहित है क्योंकि जिस राष्ट्र के नागरिकों में एकता होती है वह राष्ट्र सभी दृष्टियों से मजबूत तथा शक्तिशाली होता है। यदि देश में स्थान-स्थान पर झगड़े तथा ईर्ष्या-द्वेष बढ़ते हैं तो राष्ट्र की अखंड़ता को नुकसान पहुँचता है। अतः देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश में एकता बनाए रखने का प्रयास करे तथा देश को सुदृढ़ बनाने में अपेक्षित सहयोग करे।

3. कविता से अपनी पसंद का पद्यांश चुनो और उसका भावार्थ नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखो–

उत्तर– **भावार्थ** : प्रस्तुत पद्य में बताया गया है कि हमारे देश भारत में अनेक संस्कृतियाँ हैं जो अपने विशिष्ट गुणों के कारण देश के गौरव को बढ़ाती हैं लेकिन हमें सभी संस्कृतियों के सार स्वरूप आपसी वैर-भाव को भुलाकर प्रेम का संचार करना चाहिए।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

13 अंधी भिखारिन (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. श्वेत वस्त्रधारी अंधी भिखारिन को पैसे देने की अपेक्षा झिड़कियाँ दिया करते थे।

2. अंधी भिखारिन ने अपनी जमा-पूँजी सेठ बनारसीदास के पास धरोहर के रूप में रखी।

3. अंधी भिखारिन ने अपने बेटे को स्वस्थ करने के लिए दवा-दारू के अतिरिक्त झाड़-फूँक तथा टोने-टोटके भी किए, परंतु सब व्यर्थ।

4. सेठ ने अंधी भिखारिन से बच्चे को इसलिए छीन लिया क्योंकि वह सेठ का खोया हुआ बच्चा था।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. अंधी भिखारिन अपने बच्चे को अच्छे से अच्छा खिलाती और अच्छे से अच्छा पहनाती थी। वह पहले बच्चे को पेट भरकर खिलाती फिर स्वयं खाती थी। रात को बच्चे को अपने वक्ष से लगाकर अपनी झोंपड़ी में पड़ी रहती। प्रातःकाल होते ही उसको खिला-पिलाकर फिर मंदिर के द्वार पर भीख माँगने चली जाती।

2. अंधी भिखारिन पैसे अपने बेटे के भविष्य के लिए बचाकर रखती थी।

3. सेठ जी ने झोंपड़ी में जाकर अंधी भिखारिन से कहा–''बुढ़िया, तुम्हारा बच्चा मर रहा है। डॉक्टर निराश हो गए हैं, रह-रहकर वह तुम्हें पुकारता है। अब तुम ही उसके प्राण बचा सकती हो। चलो और मेरे ..... नहीं, नहीं, अपने बच्चे के प्राण बचा लो।''

4. सेठ जी को इस बात का दुख हुआ कि जिस भिखारिन के रुपये उन्होंने बेईमानी से रख लिए थे उसने वे उसने वे रुपये उनके ही बेटे के लिए जमा किए थे।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** मोहन का अंधी के साथ प्रेम का संबंध था।

2. सेठ जी ने अंधी को अपने पास रखने की प्रार्थना अपने बेटे मोहन के लिए की।

3. सेठ जी अंधी को उसका इकट्ठा किया हुआ वह धन दे रहे थे जो उसने सेठ जी के पास धरोहर के रूप में रखा था।

4. विपरीतार्थक शब्द–

स्वस्थ = **अस्वस्थ**, सहमत = **असहमत**, विवश = **समर्थ**, पास = **दूर**।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

स्त्री	**महिला**	**नारी**
बच्चा	**बालक**	**शिशु**
जमीन	**धरती**	**धरा**
आँख	**नेत्र**	**अक्षि**

(ख) दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करो–

उत्तर– **1.** अंधी मंदिर के पास भीख माँगती थी।

2. अंधी की गोद में वह बालक कौन था?

3. अरे! मोहन मिल गया।

4. सेठ जी के पास धनी-निर्धन, भिखारी, ग्रामीण-शहरी सभी आते-जाते रहते थे।

(ग) विलोम शब्द पर (✓) का चिह्न लगाओ–

उत्तर–

सुबह	–	प्रातः	शाम (✓)
दयालु	–	निर्दय (✓)	सहृदय
घृणा	–	नफरत	प्रेम (✓)

(घ) दिए गए शब्दो के वाक्य बनाकर अर्थ-भेद स्पष्ट करो–

उत्तर–

दिन	–	उठ जाओ, **दिन** निकल आया है।
दीन	–	उसकी **दीन**-हीन अवस्था देखकर मुझे दया आ गई।
ओर	–	नदी के दोनों **ओर** वृक्ष हैं।
और	–	मेघा **और** राधा दोनों ही बुद्धिमान हैं।

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताओ–

उत्तर–

संसार	**पुल्लिग**	चम्मच	**स्त्रीलिंग**
नेत्र	**पुल्लिग**	गरमी	**स्त्रीलिंग**

(च) 'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर– सत्य	**सत्यता**	सुंदर	**सुंदरता**
सफल	**सफलता**	सम	**समता**
दयालु	**दयालुता**	सरल	**सरलता**

संप्रेषण

उत्तर– स्वयं कीजिए।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) इस कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर– सारांश–एक अंधी भिखारिन थी। वह भीख माँगकर अपना गुजारा करती थी। एक बार उसे एक रोता हुआ बच्चा मिला। उस दिन के बाद से बच्चा बूढ़ी के पास ही रहने लगा। वह उसका बहुत ध्यान रखती थी। उसको अच्छे-से-अच्छा खिलाने-पिलाने का प्रयास करती थी। अंधी भिखारिन ने एक हाँडी में कुछ पैसे जोड़े और वह उनको उस नगर के सेठ के पास धरोहर के रूप में रख आई ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह उन पैसों का उपयोग कर सके। एक बार बच्चे को बुखार हो गया। भिखारिन ने बहुत इलाज कराया परंतु लड़का ठीक न हुआ। पैसों की आवश्यकता पड़ने पर बूढ़ी भिखारिन सेठ के यहाँ अपने रुपये लेने पहुँची लेकिन सेठ के मन में लोभ आ गया और उसने रुपये देने से इंकार कर दिया। बूढ़ी भिखारिन निराश हो गई। फिर कुछ सोचकर वह बच्चे को गोद में लेकर सेठ के दरवाजे पर जाकर बैठ गई। सेठ ने जैसे ही बच्चे को देखा, उसने उसे तुरंत पहचान लिया कि वह उसका कई साल पहले खोया हुआ बेटा है। सेठ ने बूढ़ी से बच्चा छीन लिया। बूढ़ी बहुत रोई, गिड़गिड़ाई लेकिन सेठ पर कोई असर न हुआ। बूढ़ी थककर अपनी झोंपड़ी पर चली गई। अच्छा इलाज कराने से बच्चे का बुखार तो उतर गया लेकिन वह बूढ़ी भिखारिन को याद करने लगा। अब बच्चे को फिर से बुखार हो गया। बुखार परेशान होकर सेठ ने बूढ़ी से बच्चे के पास चलने की विनती की। पहले तो बूढ़ी भिखारिन ने मना कर दिया किंतु सेठ के रोने पर बूढ़ी भिखारिन का दिल पसीज गया और वह सेठ के साथ उसके घर चली गई। बूढ़ी भिखारिन का ममता भरा स्पर्श पाकर बच्चा जल्दी ही स्वस्थ हो गया। बच्चे के स्वस्थ हो जाने पर जब बूढ़ी भिखारिन चलने लगी तो सेठ उसको उसके रखे हुए रुपये देने लगे। लेकिन बूढ़ी ने उन्हें लेने से इंकार कर दिया और कहा, "ये रुपये तो मैंने मोहन के लिए इकट्ठे किए थे, उसी को दे देना।"

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखो।

(i) धन से बड़ा मन होता है। (ii) मानव-सेवा ही ईश्वर की सेवा है।

उत्तर– (i) छात्र स्वयं करें।

(ii) हम सभी किसी-न-किसी प्रकार ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं और इसके लिए हम नाना प्रकार के यत्न करते हैं; जैसे पूजा करना, प्रसाद बाँटना, भंडारे लगाना, दान-दक्षिण देना आदि। ऐसा करते हुए हम अनेक बार यह भूल जाते हैं कि ईश्वर का वास्तविक स्थान तो मानव हृदय है। यदि हम मंदिर में अपने आराध्य को कीमती आभूषण भेंट करते हैं और उसी मंदिर के बाहर खड़े किसी असहाय व्यक्ति की ओर देखते भी नहीं हैं या घृणा से देखते हैं, तो हम वस्तुतः ईश्वर की पूजा नहीं कर रहे होते हैं। ईश्वर हम पर तभी प्रसन्न हो सकते हैं, जब हम निःस्वार्थ भाव से किसी की सच्ची सेवा तथा सहायता करें। अतः कहा जा सकता है कि मानव-सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

14 पंच परमेश्वर की जय (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** जुम्मन तथा अलगू चौधरी के बीच गाढ़ी मित्रता थी।

2. जुम्मन ने अपनी खालाजान को रोटी-कपड़ा देने का वचन दिया था।

3. खाला को पंचायत इसलिए बुलानी पड़ी, क्योंकि जायदाद नाम होते ही जुम्मन का खाला के प्रति व्यवहार बदल गया।

4. जुम्मन अलगू चौधरी से इसलिए नाराज था क्योंकि अलगू ने जुम्मन की उम्मीद के विपरीत फैसला दिया था।

5. समझू साहू ने जुम्मन को सरपंच के रूप में चुना।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. जुम्मन की पत्नी खाला के साथ बहुत बुरा व्यवहार करती थी।

2. खाला ने पंचों के बारे में कहा कि "पंच न किसी के दोस्त होते हैं न दुश्मन।"

3. अलगू चौधरी के सरपंच चुने जाने पर जुम्मन इसलिए खुश था क्योंकि वह सोच रहा था कि मित्र होने के कारण अलगू उसके ही हित की बात करेगा।

4. समझू साहू ने अलगू से एक बैल खरीदा था और एक महीने में दाम चुकाने का वादा किया था। परंतु बैल से अधिक काम लेने तथा उसके चारे-पानी का ध्यान न रखने के कारण बैल मर गया और समझू साहू अलगू चौधरी को बैल का दाम चुकाने में आनाकानी करने लगा। धीरे-धीरे यह विवाद बढ़ता चला गया।

5. सरपंच के आसन पर बैठकर जुम्मन ने महसूस किया कि "मैं इस वक्त इंसाफ के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से जो निकलेगा, वह खुदा की जुबान होगी। अतः मेरा सत्य से डिगना उचित नहीं है।" इसी कारण वह समझू साहू के पक्ष में फैसला न दे सका।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. जुम्मन शेख का झगड़ा अपनी खालाजान से था।

2. जुम्मन शेख को अलगू चौधरी से यह उम्मीद नहीं थी कि अलगू उसके विपरीत फैसला देगा।

3. इस फैसले ने जुम्मन शेख को अलगू चौधरी का दुश्मन इसलिए बना दिया क्योंकि इस फैसले से सबके बीच जुम्मन का सिर नीचा हो गया था।

4. विपरीतार्थक शब्द–
उम्मीद–**नाउम्मीदी**, मित्रता–**शत्रुता**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. जुम्मन ने अपनी खालाजान से, क्योंकि जुम्मन को पता था कि जीत उसी की होगी।

2. खालाजान ने पंचों से, क्योंकि उन्हें पंचों के फैसले पर कोई संदेह नहीं था।

3. जुम्मन ने स्वयं से, क्योंकि सरपंच के आसन पर बैठकर जुम्मन को अपनी जिम्मेदारी का अहसास हुआ।

4. अलगू चौधरी ने पंचों से, क्योंकि पंचों ने सही फैसला किया था।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

मित्र	**सखा**	**बंधु**
बेटा	**पुत्र**	**तनय**
बैल	**वृष**	**वृषभ**
पानी	**नीर**	**वारि**

(ख) भाववाचक संज्ञा और विशेषण शब्द छाँटकर लिखो–

उत्तर–

भाववाचक संज्ञा	**विशेषण**
मित्रता	बूढ़ी
धृष्टता	गरीब
सच्चाई	दैनिक

(ग) विपरीतार्थक शबद पर (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर–

मित्रता	–	दोस्ती	शत्रुता (✓)
दोस्त	–	मित्र	दुश्मन (✓)
धरती	–	आकाश (✓)	जमीन
सत्य	–	सच	असत्य (✓)

(घ) 'बे' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

बस	**बेबस**	वा	**बेवा**
दर्द	**बेदर्द**	अदब	**बेअदब**
हिसाब	**बेहिसाब**	स्वाद	**बेस्वाद**

(ङ) 'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

मित्र	**मित्रता**	शत्रु	**शत्रुता**
सफल	**सफलता**	धृष्ट	**धृष्टता**
नम्र	**नम्रता**	सुंदर	**सुंदरता**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– उत्तर छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

15 घोड़ा (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** कवि घोड़ा बनने की कल्पना करता है।

2. कवि कल्पना कर रहा है कि जब वह घोड़ा बनकर बच्चों को आबादी में घुमाने ले जाता तो किसी घर के आगे रुककर वह बच्चों को दूध तथा छाछ माँगकर पिलाता।

3. कवि घोड़ा बनकर बच्चों को तरह-तरह के भोले-भाले इंसानों से मिलवाना चाहता है।

4. घोड़े पर सवार होकर बच्चे जंगल में रंग-बिरंगी चिड़ियाँ, प्यारे-प्यारे खरगोश, मेमने, हिरन, चीते आदि देखते हैं।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** कवि घोड़ा बनकर बच्चों को दूर पहाड़ी की वादी में तथा जंगल में ले जाता तथा उन्हें छाछ और दूध पिलाता तथा उन्हें मीठे-मीठे फल खिलाता।

2. बच्चे उगते हुए सूरज के दर्शन नदी के किनारे से करते।

3. बच्चे जंगल में प्राणियों के पैरों के निशान खोजते हुए आते।

4. कवि दुनिया को नकली इसलिए बताता है क्योंकि दुनिया के अधिकतर लोग प्रकृति के सानिध्य से विलग हो चुके हैं।

5. प्रस्तुत कविता में कल्पना करते हुए कवि कहता है–अगर मैं लंबा-चौड़ा घोड़ा होता तो तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर बहुत तेज दौड़ता। हवा से बातें करता हुआ मैं पलक झपकते ही तुम्हें पहाड़ों की वादियों में, जंगलों में तथा फिर घनी आबादी में ले जाता। फिर किसी घर से माँगकर तुम्हें दूध और छाछ पिलाता और वहाँ के भोले-भाले लोगों से तुम्हें मिलाता। फिर हम उनके साथ बैठकर मीठे फल खाते और अपनी अलग पहचान बनाते।

वहाँ मैं तुम्हें तरह-तरह के पशु-पक्षियों से मिलाता तथा तुम अपनी आँखों से उनके सारे क्रियाकलाप देखते और फिर हम भी वहाँ पर अपने पैरों के निशान छोड़ आते। फिर हमें भी वहाँ पर खोजने अन्य लोग आते और हम बहुत खुश होते, इस नकली दुनिया के लोगों को देखकर। हम स्वयं पर किसी को हावी न होने देते और एक-दूसरे को देखकर खुश होते।

(ग) दिए गए पद्यांश की व्याख्या अपने शब्दों में करो–

उत्तर– **व्याख्या**–कवि कहता है कि यदि मैं घोड़ा होता तो तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर जंगल की सैर कराता। झाड़ी में दुबककर तुम्हें प्यारे-प्यारे खरगोश दिखाता और खेलते हुए मेमनों के साथ तुम्हें भी खिलाता। सारी रात ढोल मँजीरे बजते और रात नाचते-गाते बीतती और हम हरे-भरे जंगल में खूब मस्ती करते।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

घोड़ा	**अश्व**	**हय**
दूध	**क्षीर**	**दुग्ध**
जंगल	**कानन**	**वन**
सूरज	**भास्कर**	**आदित्य**
नदी	**तरंगिणी**	**सलिला**

(ख) विपरीतार्थक शब्द पर (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर–

सुबह	–	प्रातः	शाम **(✓)**
शांत	–	अशांत **(✓)**	खामोश
खुश	–	नाखुश **(✓)**	प्रसन्न

(ग) निम्नलिखित गुणवाचक विशेषण शब्दों के लिए उपयुक्त विशेष्य लिखो–

उत्तर–

मोटा	**रस्सा**	कच्ची	**कली**
मीठा	**आम**	लंबी	**कड़ी**
सफेद	**घोड़ा**	चतुर	**लोमड़ी**

(घ) सही प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ–

उत्तर–

दिखा	+	ता	–	**दिखाता**
महत्त्व	+	पूर्ण	–	**महत्त्वपूर्ण**
बल	+	वान	–	**बलवान**
मस्त	+	ई	–	**मस्ती**
पागल	+	पन	–	**पागलपन**
गुण	+	वती	–	**गुणवती**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. एक बार एक व्यक्ति सपना देखता है कि वह घोड़ा बन गया है। लम्बा-चौड़ा घोड़ा! घोड़ा बनकर वह अपने मित्रों को पीठ पर बिठाकर बहुत तेज दौड़ता। वह उन्हें वादियों में, जंगलों में तथा घनी आबादी में घूमाता। वह गाँव में किसी से माँगकर उन्हें दूध-छाछ पिलाता। वह उन्हें मीठे फल खिलाता और तरह-तरह के पशु-पक्षी दिखाता। वह उन्हें प्रकृति की वास्तविकता और जीवन के नकलीपन से अवगत कराता। तभी अचानक उसकी आँख खुले गई। उसने अगले दिन अपने मित्रों से अपने सपने के बारे में बताया। सब बहुत हँसे और फिर खेलेने जंगल में चले गए।
2. घोड़ा मनुष्य द्वारा पाला जाने वाला एक प्रमुख पशु है प्राचीन काल से ही मानव इसका प्रयोग करता आ रहा है अपने मजबूत शरीर और तेज गति के कारण यह यातायात के साधन के रूप में बहुत लोकप्रिय रहा है।

   मध्यकाल में घोड़ो का युद्ध में बड़े पैमाने पर प्रयोग होता था। अपनी स्वामी भक्ति के लिए भी घोड़े प्रसिद्ध हैं। चेतक नामक महाराणा प्रताप का घोड़ा अपनी स्वामीभक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। घोड़ा हिन्दू धर्म में खास महत्व रखता है भगवान विष्णु के एक अवतार हयग्रीव में वे आधे घोड़े-आधे पुरुष का रूप लेते हैं। आज घुड़ दौड़ विश्व का एक बहुत लोकप्रिय खेल है। आज भी गरीब देशों में और परंपराओं के पालन के लिए घोड़े का यातयात के साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि घोड़ा हमारे लिए अत्यंत उपयोगी पशु है।
3. इस कविता से आपको जो शिक्षा मिलती है, उसे लिखो।

उत्तर– इस कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कृत्रिमता का जीवन छोड़कर अधिक-से अधिक प्रकृति के सानिध्य में रहने का प्रयत्न करना चाहिए तथा प्रत्येक जीव से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए।

4. छात्र स्वयं करें।

5. कविता में आए इन जंतुओं के नाम बताओ–

उत्तर–

हिरण

तीतर

कबूतर

कठफोड़वा

तेंदुआ

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

16 पर्यावरण के प्रदूषण की आवाज

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. पर्यावरण प्रदूषण पर्यावरण का दूषित हो जाना है। यह समस्या एक भयंकर रूप ले रही है क्योंकि यह समस्या किसी एक व्यक्ति, समूह या देश की समस्या नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व की समस्या है।

2. प्रकृति पर्यावरण में जब किन्हीं दो तत्वों का अनुपात इस रूप में बदलने लगता है, जिसका जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका होती है, तब कहा जाता है कि पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

3. वायुप्रदूषण का मुख्य कारण औद्योगिक संस्थान तथा यातायात के साधन हैं इनका प्रभाव मनुष्यों तथा अन्य जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य पर पड़ता है।

4. जल के मुख्य स्रोतों में दूषित एवं विषैले तत्वों का समावेश होना जल प्रदूषण कहलाता है। इसे नियन्त्रित करने के लिए ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि कम व्यर्थ पदार्थ बाहर निकले तथा इन्हें उपचारित करके ही निकाला जाय। इसके अतिरिक्त नगरीय कूड़ा-करकट को भी जैसे-तैसे नष्ट कर देना चाहिए तथा जल स्रोतों में मिलने से रोकना चाहिए।

5. पर्यावरण में ध्वनियों का बढ़ जाना ही ध्वनि प्रदूषण है। विद्वानों का कहना है कि शोर व्यक्ति को समय से पहले बूढ़ा कर देता है। "जिस तरह से यातायात के साधन, फैक्ट्रियाँ, लाउडस्पीकर आदि का दिन पर दिन उपयोग बढ़ता हैं। जिससे ध्वनि प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। एक दिन ऐसा आयेगा जब मनुष्य को स्वास्थ्य के सबसे बड़े शत्रु शोर से संघर्ष करना होगा क्योंकि शोर का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. आज के युग की अति गम्भीर समस्या पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या है। यह समस्या किसी एक व्यक्ति, समूह या देश की समस्या नहीं है बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। पर्यावरण प्रदूषण का कुप्रभाव न केवल मानव जाति पर पड़ रहा है। अपितु यह थलचर, जलचर तथा नभचर सभी जीव जन्तुओं को कुप्रभावित कर रहा है।

2. प्रदूषण तीन प्रकार का होता है–वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण।

वायु प्रदूषण–वायुमण्डल में विभिन्न प्रकार की गैसें एक विशिष्ट अनुपात में प्रकृति में पायी जाती हैं। जब इन गैसों का प्रकृति में अनुपात बिगड़ जाता है तो इसे वायु प्रदूषण कहते हैं।

जल प्रदूषण–जल के मुख्य स्रोतों में दूषित एवं विषैले तत्वों का समावेश होना जल प्रदूषण कहलाता है।

ध्वनि प्रदूषण–पर्यावरण में शोर अर्थात् ध्वनियों का बढ़ जाना ही ध्वनि प्रदूषण है।

3. वायु प्रदूषण से फेफड़ों के रोग मुख्य रूप से होते हैं। इसके अतिरिक्त सिरदर्द, आँखें का दुखना, आँखों में चिरमिराहट होना, खॉसी, दमा, ब्रोंकाइटिस, गले का रोग, हृदय रोग आदि कई रोग हो जाते हैं। हमें वायु प्रदुषण को रोकने के लिए ऊँची चिमनियाँ लगाई जानी चाहिए तथा उसमें छनने लगे होने चाहिए। सड़क पर चलने वाले वाहनों का काबोरिटर तथा धुआँ निकलने वाला भाग बिल्कुल ठीक होना चाहिए। वाहनों के धुआँ निकालने वाले सिलेण्डर के मुँह पर फिल्टर लगाने चाहिए। रेलगाड़ियों का विद्युतीकरण करके काफी हृद तक वायु प्रदूषण को नियन्त्रित किया जा सकता है।

4. प्रदूषित जल के सेवन से मुख्य रूप से पाचनतन्त्र सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन रोगों में मुख्य हैं–हैजा, पेचिस, पीलिया, टाइफाइड तथा पैराटाइफाइड आदि। ये सभी रोग संक्रामक रूप से फैलते हैं तथा घातक सिद्ध होते हैं।

5. पर्यावरण में शोर अर्थात् ध्वनियों का बढ़ जाना ही ध्वनि प्रदूषण है। शोर वे कारण रक्तचाप, श्वसनगति, नाड़ीगति में उतार-चढ़ाव, जठरांत्र गतिशीलता में कमी रुधिर परिसंचरण में परिवर्तन तथा हदय–पेशी के गुणों में भी परिवर्तन होता है। शोर से शारीरिक एवं मानसिक तनाव बढ़ता है। अत्यधिक शोर से निस्टैग्मस हो जाता है और चक्कर आने लगते हैं।

6. ध्वनि प्रदूषण का प्रभाव कान के अतिरिक्त पाचन तन्त्र, हृदय, केन्द्रीय तंत्रिक तन्त्र पर भी शोर का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

7. पर्यावरण प्रदूषण से बचाव के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त रूप से प्रयास किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति को भी इस समस्यों के प्रति सजग रहना चाहिए तथा इसके नियन्त्रण में अपना योगदान देना चाहिए।

(ग) दिन-व-दिन बढ़ती गाड़ियों, संगीत के नाम पर बजते कर्णभेदी उपकरण और कल-कारखानों से आती तीव्र ध्वनियों के कारण एक दिन मानव के स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव पड़ने लगेगा। अभी भी ध्वनि प्रदूषण के कारण हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। परंतु यदि ऐसे ही यह बढ़ता रहा तो मानव को इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क)

पर्यावरण	–	परि + आवरण	जीवनाधार	–	जीवन + आधार
प्रतिकूल	–	प्रति + अनूकूल	औद्योगिक	–	उद्योग + योगिक
कदापि	–	कद + अपि	विषाक्त	–	विष + आक्त
कीटाणु	–	कीट + अणु	जलाशय	–	जल + आशय

(ख)

अतिवृष्टि	–	अनावृष्टि	मृत्यु	–	जीवन
असन्तुलन	–	सन्तुलन	झूठ	–	सत्य
असम्भव	–	सम्भव	नाखुशी	–	खुशी
शुद्ध	–	अशुद्ध	अस्वीकृति	–	स्वीकृति
कुप्रभाव	–	प्रभाव	शत्रु	–	मित्र

(ग) **1.** जलचर **2.** नभचर **3.** बंजर **4.** स्वार्थी **5.** धनी

अंतर-विषयक अधिगम

उत्तर– **1. पर्वत** पर्वतों द्वारा ही विभिन्न नदियाँ निकलती हैं।
पर्वतों द्वारा ही वर्षा संभव होती हैं।

2. समुद्र समुद्र द्वारा जल-परिवहन किया जाता है।
समुद्र में मछली पकड़ कर लोग जीवन यापन करते हैं।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर–छात्र स्वयं करें।

कला एकीकरण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

17 कर्तव्यपालन (ऐतिहासिक कथा)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. रणथंभौर पर राणा हमीर का राज था।

2. रणथंभौर में शरणागत के रूप में माहमशाह आया था।

3. बादशाह ने माहमशाह को फाँसी की सजा सुनाई थी।

4. राणा हमीर के सलाहकारों ने उनसे कहा कि–''महाराज, माहमशाह की तलवार आज आपके द्वार शरणार्थी है, पर कल तक वह हमारे खून की प्यासी थी। हम उसे अपनी छाया में लें, दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्यौता क्यों दें?''

5. अलाउद्दीन खिलजी ने राणा को संदेश भिजवाया कि–''क्या तुम नहीं जानते, हमीर! जो तुमने माहम को यों अपनी छत दी! खैर, मैं भूलों को माफ करना जानता हूँ। कोई बात नहीं–माहम को अपनी देख-रेख में मेरे सुपुर्द करो और अपने कसूर की माफी माँगो!''

6. राणा हमीर ने राजपूती वचन को निभाने के लिए अदम्य साहस और सर्वस्व बलिदान का प्रदर्शन किया और हर मूल्य पर अपने शरणागत की रक्षा की।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. माहमशाह ने राणा हमीर ने सामने हाजिर होकर उनसे निवेदन किया कि महाराज, ''मेरा नाम माहमशाह, काम सिपहगिरी। बादशाह अलाउददीन खिलजी का खादिम। एक मामूली बात पर बादशाह नाराज हो गए और मेरे लिए फाँसी का हुक्म दे दिया। वे घड़ियाँ नजदीक थीं जब फाँसी का फँदा दम घोट कर मेरी लाश को चील और कुत्तों के लिए एक स्वादिष्ट नाश्ते की तरह फेंक दे कि मैं जेल से फरार हो गया और अपने प्राणों की रक्षा के लिए यों आपकी शरण में हाजिर हुआ हूँ। मेरी रक्षा कीजिए, महाराज।''

2. राणा ने यह जानते हुए भी कि माहमशाह को अपने यहाँ शरण देना दिल्ली के तख्त से दुश्मनी मोल लेना है, उसको शरण दी, क्योंकि वह अपना कर्तव्यपालन करना चाहता था।

3. राणा ने माहमशाह को तसल्ली देते हुए कहा, ''माहमशाह, रणथंभौर अब तुम्हारा घर है। आराम से यहाँ रहो ओर विश्वास रखो कि अब किसी की हिम्मत नहीं कि तुम्हारी तरफ तिरछी आँखों से देखे। कोई कष्ट हो तो हमें कहना, जाओ!''
4. अलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर पर आक्रमण इसलिए किया क्योंकि राणा हमीर ने उसके एक चोर खादिम को अपने यहाँ शरण दी थी। इस युद्ध में पूरा रणथंभौर नष्ट हो गया।
5. राणा हमीर एक राजपूत राजा था जो अपने वचन का पक्का था। वह एक दयालु तथा कर्तव्यनिष्ठ शासक था जिसने अपने प्राण देकर भी माहमशाह को दिए गए वचन को निभाया। वह अत्यंत वीर था जिसके लिए उसका वचन और राजपूती आन-बान-शान उसके अपने जीवन से बढ़कर थी।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. उक्त कथन राणा हमीर द्वारा कहे गए।
2. माहम अलाउद्दीन खिलजी का एक जेल से फरार खादिम था। और वह अपनी रक्षा चाहता था।
3. माहमशाह को शरण देना ही दिल्ली के तख्त की क्रोधाग्नि को न्यौता देना था।
4. समानार्थी शब्द–न्यौता–**बुलावा**, स्वर्ग–**जन्नत**, पूर्वज–**पुरखे**, चुभन–**दर्द**, अनुभव–**तजुर्बा**।

(घ) दी गईं पंक्तियों की व्याख्या अपने शब्दों में करो–

उत्तर– **व्याख्या**–माहमशाह को शरण देने की बात पर जब राणा हमीर ने कर्तव्यपालन की दुहाई दी तो माहमशाह को शरण देने की सहमति न होने पर भी हमीर के सिपाही तथा सामंत हमीर के द्वारा कहीं गईं भावपूर्ण बातों में बह गए और उन्होंने राणा हमीर की जयजयकार की।

(ङ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. माहमशाह ने राणा हमीर से कहा क्योंकि वह हमीर से शरण लेना चाहता था।
2. अलाउद्दीन खिलजी ने राणा हमीर से कहा क्योंकि वह हमीर से माहमशाह को लेना चाहता था।
3. राणा हमीर ने माहमशाह से कहा क्योंकि माहमशाह राणा को नुकसान से बचाने के लिए स्वयं अलाउद्दीन के पास जाना चाहता था।

(क) विशेषण शब्द पर (✓) का चिह्न लगाओ–

उत्तर– दीनता	–	दीन (✓)	दयनीय
स्वर्ग	–	जन्नत	स्वर्गिक (✓)
समाज	–	सामाजिक (✓)	सामजिकता

(ख) विलोम शब्दों से मिलान करो–

उत्तर–
- प्यासी → तृप्त
- पवित्र → अपवित्र
- उम्मीद → नाउम्मीद
- जीवन → मरण
- जीत → हार

(ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो–

उत्तर– शरणागत, सलाहकार, घमंडी, असीमित, आगामी।

(घ) दिए गए शब्दों से प्रत्यय अलग करके बताओ–

उत्तर– शक्तिवान	**शक्ति**	+	**वान**
बहादुरी	**बहादुर**	+	**ई**
पीड़ित	**पीड़ा**	+	**इत**
पवित्रता	**पवित्र**	+	**ता**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) राजस्थान प्रदेश का ही प्राचीन नाम राजपूताना था। राजपूतों का शासन और उनका बाहुल्य होने के कारण इसे राजपूताना कहा जाता था। विशाल भूभाग में विस्तृत यह क्षेत्र एक ओर थार मरूस्थल से घिरा है तो दूसरी ओर अरवली की पहाड़ियों से। अपने किलों और महलों के लिए यह विश्व प्रसिद्ध है। परंतु इससे भी ज्यादा प्रसिद्ध है यहाँ के वीरों और वीरांगनाओं का बलिदान। राजपूताना के वीर युद्ध से या तो जीतकर आते थे या मृत। इस पावन भूमि पर ही महाराणा प्रताप जैसे वीर हुए। यहीं पर पद्मावती जैसी महान नारियाँ जन्मीं। इस प्रदेश का भारत के इतिहास में अमिट योगदान है। वर्तमान में यह भारत का सबसे बड़ा राज्य है और निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखो–

उत्तर– शरणार्थी की रक्षा करना वीर का धर्म

शरण में आए हुए की रक्षा करना मानव-धर्म है। वही व्यक्ति वीर कहलाता है जो अपने हानि-लाभ, जय-पराजय की परवाह न करके अपने शरण में आने वाले की रक्षा करता है फिर चाहे वह उसका शत्रु ही क्यों न हो। शरण देने वाले के लिए सबसे बड़ा धर्म शरणागत की रक्षा करना ही है। एक बार किसी को शरण देने के पश्चात् यह नहीं सोचना चाहिए कि इसमें लाभ अधिक है या हानि अधिक। इतिहास सदैव उन्हें याद रखता है जिन्होंने इस प्रकार का प्रण लिया और अपनी अंतिम साँस तक उसे निभाया।

(ग) छात्र स्वयं करें।

(घ) नीचे दिए गए संवादों को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाओ–

उत्तर– छात्र अ – राजीव, हमें घर आए मेहमानों का आदर-सत्कार करना चाहिए न।

छात्र ब – हाँ रमन, हमें घर आए मेहमानों का हृदय से आदर-सत्कार करना चाहिए।

छात्र अ – हमारी संस्कृति हमें और क्या-क्या सिखाती है?

छात्र ब – हमारी संस्कृति हमें और भी बहुत-सी बातें सिखाती है; जैसे कि सदा सच बोलना, अच्छे कर्म करना आदि।

छात्र अ – हमें अपनी संस्कृति पर क्यों गर्व करना चाहिए?

छात्र ब – क्योंकि हमारी संस्कृति सभी संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ है।

छात्र अ – क्या हमें शरण में आए हुए की रक्षा करनी चाहिए?

छात्र ब – हाँ, हमें हर प्रकार से यत्न करके शरण में आए हुए की रक्षा करनी चाहिए।

छात्र अ – भारतीय संस्कृति में अतिथि को क्या कहा गया है?

छात्र ब – भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता कहा गया है।

छात्र अ – क्या हमें पुरातनपंथी होना चाहिए?

छात्र ब – नहीं, हमें पुरातनपंथी नहीं बनना चाहिए।

छात्र अ – अंधविश्वास किसे कहते हैं?

छात्र ब – किसी बात पर बिना सोचे-समझे विश्वास करना अंधविश्वास कहलाता है।

छात्र अ – विश्व-बंधुत्व की भावना से क्या तात्पर्य है?

छात्र ब – विश्व को परिवार के समान समझना ही विश्व-बंधुत्व की भावना है।

छात्र अ – भारतीय संस्कृति में धर्म किसको कहा गया है?

छात्र ब – भारतीय संस्कृति में सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाना ही धर्म कहा गया है।

छात्र अ – हमारे सांस्कृतिक मूल्य कौन-से हैं?

छात्र ब – हमारे सांस्कृतिक मूल्य–त्याग, दया, करुणा, ममता, प्रेम, भाईचारा, विश्व बंधुत्व की भावना इत्यादि हैं।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

1 जलियाँवाला बाग में बसंत (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** जलियाँवाला बाग में कौए शोर मचाते हैं।

2. परिमल-हीन पराग से आशय है–सुगंध विहीन पुष्परज।

3. कवयित्री हवा को अपने साथ दुख की आहें उड़ा ले जाने से मना करती हैं।

4. कवयित्री भँवरों से कष्ट की कथा सुनाने का अनुग्रह करती हैं।

5. कवयित्री जलियाँवाला बाग को शोक-स्थान कहकर संबोधित करती हैं।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** प्रथम पद्यांश के माध्यम से कवयित्री यह कहना चाहती हैं कि जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद भी उस स्थान पर वीरानी छाई हुई है, तथा वहाँ के संकेत चिह्न चीख-चीख कर वहाँ की दासतां बयान कर रहे हैं।

2. कवयित्री कोयल से रोने का राग गाने को तथा भँवरों से कष्टों की कथा सुनाने को इसलिए कहती हैं ताकि आने वाली पीढ़ी को उस वेदना का पता चल सके।

3. इस पद्यांश में कवयित्री जलियाँवाला बाग हत्याकांड की दुखद घटना का वर्णन करते हुए कहती हैं कि इस हत्याकांड में बहुत-से छोटे-छोटे बच्चों ने भी गोलियाँ खाईं। यहाँ न जाने कितने हृदयों की आशाएँ टूट गईं और न जाने कितने ही लोग अपने परिवारों से बिछड़ गए।

4. इस कविता में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद के वातावरण का जिक्र करते हुए कवयित्री कहती हैं कि इस स्थान पर अब कोयल नहीं, बल्कि कौए शोर मचाते हैं। काले-काले कीट उड़कर भँवरें होने की भ्रांति पैदा करते हैं। आधी खिली कलियाँ काँटों के समान लगने लगीं तथा पौधे तथा फूल ऐसे लगते हैं, जैसे वे या तो झुलस गए हैं अथवा सूख गए हैं। इस बाग में सुगंधित पुष्परज अब धब्बे के समान दिखलाई पड़ते हैं। इस बाग में चारों तरफ रक्त ही रक्त फैला हुआ है। हे ऋतुराज बसंत! तुम यहाँ

अपनी छटा मत बिखराना। हे पवन, तुम अपने संग आहें और सिसकियाँ उड़ाकर मत लाना। हे कोयल तुम रोने वाला राग ही सुनाना। हे भ्रमर, तुम गूँज-गूँज कर इन सेनानियों के कष्ट की कथा सुनाना। यहाँ पर अधिक सुगंधित वाले पुष्प मत लाना और जो लाना वह भी, प्रेम के प्रतीक न हों, बल्कि केवल उन लोगों की पूजा हेतु हों। जो छोटे-छोटे बच्चे इस हत्याकांड में मरे हैं, उनको पुष्पांजलि देने के लिए थोड़ी-सी कलियाँ लाकर गिरा देना। यहाँ पर न जाने कितने हृदयों की आशाएँ अधूरी रह गईं और न जाने कितने लोग अपने परिवारों से बिछड़ गए। इसलिए कुछ अधखिली कलियाँ लाकर यहाँ बिखरा देना। और कुछ वृद्ध, जो गोली खाकर मरे हैं, उनकी याद में कुछ सूखे फूल लाकर यहाँ गिरा देना। और यह सब बहुत धीरे से करना क्योंकि यह स्थान शोक का है, यहाँ शोर मचाना मना है।

(ग) दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** इस कविता की रचना श्रीमती सुभद्राकुमारी 'चौहान' ने की है।

2. कवयित्री हवा को मंद चाल से चलने को इसलिए कहती हैं क्योंकि वहाँ का वातावरण गमगीन है।

3. कवयित्री रोने के राग गाने के लिए कोयल को कहती हैं।

4. **अर्थ–**मंद = **धीमा**, कोकिल = **कोयल**, राग = **संगीत शास्त्र का लययुक्त स्वर**, कष्ट = **दुख**, संग = **साथ**, भ्रमर = **भँवरा**।

(घ) कविता की निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करो–

उत्तर– **प्रसंग–**उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी 7 के **'जलियाँवाला बाग में बसंत'** नामक कविता से ली गई हैं। इनकी रचयिता **श्रीमती सुभद्राकुमारी 'चौहान'** हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री ने 'जलियाँवाला बाग हत्याकांड का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है।

व्याख्या–जो छोटे-छोटे बालक गोलियों के शिकार हुए उनकी श्रद्धांजलि हेतु थोड़ी-सी कलियाँ लाकर यहाँ गिरा देना। यहाँ पर कितने ही हृदयों की आशाएँ टूट गईं तथा कितने ही लोग अपने परिवारों से बिछड़ गए। उनके लिए भी कुछ फूल ले आना।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखो–

उत्तर–

कोकिला	**कोयल**	पुष्प	**पुहुप**
काक	**कौआ**	स्मृति	**स्मरण**
भ्रमर	**भँवरा**	अश्रु	**आँसू**

(ख) विलोम शब्द से मेल करो–

उत्तर–

पुष्प	निराशा
प्यारा	विदेश
राग	कंटक
प्रिय	दुश्मन
आशा	द्वेष
देश	अप्रिय

(ग) वर्ण विच्छेद करो–

उत्तर– कोकिला – **क् + ओ + क् + इ + ल् + आ**
शुष्क – **श् + उ + ष् + क् + अ**
पुष्प – **प् + उ + प् + व् + अ**
उपहार – **उ + प् + अ + ह् + आ + र् + अ**
परिवार – **प् + अ + र् + इ + व् + आ + र् + अ**

(घ) कविता में से छह भाववाचक संज्ञा शब्द ढूँढकर लिखो–

उत्तर– प्यारा कोमल
गुँजार तड़प
सुगंध शुष्क

(ङ) दिए गए निपातों से वाक्य बनाओ–

उत्तर– तो – तुम्हें **तो** उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए।
भी – मैं **भी** तुम्हारे साथ चलूँगा।
मात्र – केवल **मात्र** कहने से कुछ नहीं होता।
ही – मेरा यह काम तुम **ही** कर सकते हो।

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) इस पद्यांश से राष्ट्र-प्रेम का जो संदेश मिलता है, उसे अपने शब्दों में लिखो–

उत्तर– व्याख्या–कवि कहता है कि जिसके मन में अपने देश के प्रति भक्ति की भावना है, जिसके मन में अपनी मातृभूमि के प्रति स्नेह है, तथा जो अपने गौरव (सम्मान) की रक्षा कर सकता है और जो अपने देश के काम आ सकता है, वहीं ध्रुवतारा बनकर चमकेगा अर्थात् उसी को दुनिया याद करेगी और धरती भी चाहेंगी कि ऐसे पुत्र बार-बार जन्म लें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर–छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

वर्तनी-ज्ञान

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

2 जन्मदिन के बहाने (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** अर्पिता तथा अर्चना ने अपनी माँ से पूछा, मम्मी हमारा जन्मदिन जून में क्यों पड़ता है?

2. अर्पिता ने मम्मी को अपनी समस्या बताई कि हमारी सारी सहेलियाँ छुट्‌टियाँ होते ही बाहर चली जाती हैं ओर हमारे जन्मदिन का सारा मजा ही खत्म हो जाता है।

3. काम वाली लक्ष्मी की बेटी का नाम कमलेश था।

4. दोनों बहनों ने मिलकर बारह फ्रॉकें बनाईं।

(ख) लेखनी (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** माँ ने अर्पिता और अर्चना के जन्मदिन की ऐसी योजना बनाई कि उनको अपना जन्मदिन यादगार ओर सच्चा सुख देने वाला लगा।

2. माँ चाहती थीं कि अर्चना और अर्पिता घर में काम करने वाली लक्ष्मी की बेटी कमलेश के लिए फ्रॉकें बनाएँ क्योंकि उसका जन्मदिन भी उसी दिन था, जिस दिन अर्चना और अर्पिता का था।

3. अर्पिता ने मम्मी से कहा, ''मम्मी, हमारे इस जन्मदिन का उपहार तो आपने हमें जन्मदिन से पहले ही दे दिया।''

4. जन्मदिन की शुरुआत एक अनोखे ढंग से हुई। दोनों बहनें नहा-धोकर पिकनिक पर जाने के लिए तैयार हुईं। उसके बाद दोनों बहनों ने अपने हाथों से बनी हुई फ्रॉकें कमलेश तथा लक्ष्मी को दीं। वे दोनों बहुत खुश हुईं। उन्हें विदा करके सब लोग पिकनिक पर निकले तो अर्पिता ने भावुक स्वर में कहा, ''मम्मी, आपने सच कहा था। यह जन्मदिन यादगार और सच्चा सुख देने वाला है।''

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. फ्रॉकें, घर में काम करने वाली लक्ष्मी की बेटी कमलेश के लिए बनाई जा रही थीं।

2. माँ ने साड़ी निकालते हुए कहा, कि तुम दोनों कमलेश के लिए कुछ फ्रॉकें बनाकर उसके जन्मदिन पर उपहारस्वरूप दो।

3. अर्चना और अर्पिता इसलिए खुश थीं क्योंकि उन्होंने कई सुंदर फ्रॉकें बना ली थीं।

4. समानार्थी शब्द–

मम्मी = **माँ**, ग्रहण = **लेना**, महीना = **मास**, खुशी = **प्रसन्नता**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. मम्मी ने अर्चना और अर्पिता से, क्योंकि वे दोनों अपना जन्मदिन जून में पड़ने का कारण जानना चाहती थीं।

2. अर्चना ने मम्मी से, क्योंकि उन्हें कमलेश के लिए फ्रॉकें बनवानी थीं।

3. अर्चना ओर अर्पिता ने मम्मी से, क्योंकि मम्मी ने उनसे आशा लगा रखी थी।

4. मम्मी ने अर्पिता से, क्योंकि वे अर्पिता की बातों से बहुत प्रसन्न थीं।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) समानार्थी शब्दों पर (✓) का निशान लगाइए–

उत्तर– बेटी	–	आत्मजा (✓)	आत्मज
मम्मी	–	अंबु	अंबा (✓)
रात	–	निशा (✓)	शशि
लड़की	–	बाला (✓)	बाल

(ख) विलोम शब्दों से मिलान करो–

उत्तर–
स्वीकृति → अस्वीकृति
खुशी → नाखुशी
सच → झूठ
जन्म → मृत्यु

(ग) विशेषण बनाओ–

उत्तर– मास	**मासिक**	सुंदरता	**सुंदर**
दिन	**दैनिक**	नेकी	**नेक**

(घ) दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करो–

उत्तर– 1. ''मम्मी, हमारा जन्मदिन जून में क्यों पड़ता है?''

2. ''ओह! तो यह समस्या है।''

3. ''मम्मी बोलीं, अर्चना तुम्हें फ्रॉक बनानी हैं।''

4. अर्चना, अर्पिता और उनकी माँ सभी पिकनिक पर गए।

(ङ) निम्न शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द बनाओ–

उत्तर–

घर	**गृह**	**सदन**	**मकान**
जीवन	**जिंदगी**	**वृत्ति**	**जीविका**
गुण	**विशेषता**	**अच्छा स्वभाव**	**विशेषण**
शरीर	**गात**	**काया**	**तन**
हाथ	**हस्त**	**कर**	**पाणि**

संप्रेषण

संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर–

विद्यार्थी अ – कल मेरा जन्मदिन है। मैं अपने जन्मदिन पर एक पार्टी का आयोजन कर रहा हूँ।

विद्यार्थी ब – क्या आपने सभी मित्रों को निमंत्रण दे दिया है?

विद्यार्थी अ – हाँ, मैंने अपने सभी मित्रों का निमंत्रण दे दिया है। अब तुम्हें दे रहा हूँ। तुम्हें भी अवश्य आना है।

विद्यार्थी ब – मैं अवश्य आऊँगा।

विद्यार्थी अ – तुम्हें खाने में क्या-क्या पसंद है?

विद्यार्थी ब – मैं चाऊमीन, बर्गर तथा रसगुल्ला बड़े शौक से खाता हूँ।

विद्यार्थी अ – तुम अपने साथ अपनी छोटी बहन को भी ले आना।

विद्यार्थी ब – ठीक है, मैं उसे अवश्य लाऊँगा।

विद्यार्थी अ – चलो, कल मिलते हैं, समय से आ जाना।

विद्यार्थी ब – अच्छा, विदा! मैं समय से आ जाऊँगा।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।

2. **इस पाठ से आपने जो शिक्षा प्राप्त की, उसके विषय में लिखो–**

उत्तर– इस पाठ से हमने यह शिक्षा प्राप्त की कि दूसरों के लिए किया गया कोई भी काम हमें जो मानसिक सुख प्रदान करता है वह सुख हमें अपने लिए किए गए काम से भी नहीं मिलता। हम किसी के लिए यदि छोटा-सा कोई काम करते हैं

तो उससे वह व्यक्ति, जिसके लिए वह कार्य किया गया है, अत्यधिक प्रसन्नता अनुभव करता है तथा हमें प्रत्युत्तर में अपनी शुभ कामनाएँ देता है जिनसे हमारे चरित्र को एक नई ऊँचाई मिलती है। वह दूसरों से हमारे बारे में बढ़-चढ़कर बताता है जिससे हमारा कद अन्य लोगों की नजरों में भी ऊँचा उठता है। इसलिए हमें केवल अपने विषय में न सोचकर दूसरों के लिए भी कार्य करने चाहिए।

3. **परोपकार मनुष्य को सबका मित्र बनाता है।**

किसी कवि ने कहा है कि यह पशु प्रवृत्ति है कि आप ही आप चरे, वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे। इस प्रकार परोपकार करना ही अपको सच्चे अर्थों में मानव बनाता है। परोपकारी मनुष्य अपने निन्दकों तथा शत्रुओं को भी अपना मित्र और प्रिय बना लेता है। हर कोई ऐसे व्यक्ति का सम्मान करता है जो दूसरों के हित का सोचता है। हमारे संत, महापुरूष, उद्योगपति, नेता आदि ऐसे कई लोग हैं, जो अपने परोपकार के कारण ही सबके प्रिय बने।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

3 स्वामी विवेकानंद (निबंध)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. अमेरिका में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन सन् 1893 में हुआ।

2. स्वामी विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेंद्र था।
3. युवक नरेंद्र को रामकृष्ण परमहंस से उनके पड़ोसी सुरेन बाबू ने मिलवाया।
4. युवक नरेंद्र ने रामकृष्ण परमहंस से पूछा–"जगत में अलग-अलग धर्म क्यों हैं? क्या हर धर्म का भगवान अलग होता है?"
5. बेलूर मठ के लिए जमीन उनकी शिष्याओं धीरामाता और मिस मूलर ने खरीद कर दी।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 में कोलकाता के एक संभ्रांत परिवार में हुआ।

2. रामकृष्ण परमहंस से स्वामी विवेकानंद की मुलाकात उनके एक पड़ोसी सुरेन बाबू ने कराई। सुरेन बाबू के यह बताने पर कि स्वामी जी को गीत बहुत पसंद हैं, स्वामी विवेकानंद ने उन्हें 'चल रे मन, निज निकेतन' नामक गीत सुनाया। रामकृष्ण परमहंस को उनका गीत बहुत अच्छा लगा और उन्होंने उन्हें दक्षिणेश्वर आने का न्यौता दिया। इस तरह उनकी मुलाकात रामकृष्ण परमहंस से हुई।

3. नरेंद्र का प्रश्न सुनकर रामकृष्ण ने जल से भरे एक बर्तन की ओर इशारा किया और बोले, "इस बर्तन में जल भरा है। इसे कुछ लोग 'जल' कहते हैं, कुछ लोग 'पानी' कहते हैं और अंग्रेजी पढ़े लोग इसे 'वाटर' कहते हैं। इसे चाहे जो नाम दे दो, पर यह तो वही रहता है और एक ही काम करता है, यानि प्यास बुझाना। इसी प्रकार ईश्वर भी एक है, केवल लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं।"

4. नरेंद्र के यह पूछे जाने पर कि ईश्वर साकार है या निराकार, रामकृष्ण परमहंस बोले–"जल जब बर्फ बनकर जम जाता है तो वह साकार हो जाता है–दिखाई देता है। जब उसे भाप बना देते हैं तो वह दिखाई नहीं देता, और जब वह किसी बर्तन में रखा जाता है तो वह उस बर्तन का आकार ग्रहण कर लेता है। इसी प्रकार ईश्वर हर मनुष्य में निवास करता है, वह अलग-अलग व्यक्तियों के विश्वास के अनुसार अलग-अलग रूपों में दिखाई देता है। वास्तव में ईश्वर एक ही है।"

5. 'रामकृष्ण मठ' नामक संस्था की स्थापना स्वामी विवेकानंद और उनके शिष्यों ने मिलकर की। इस संस्था का उद्देश्य था–मानव-सेवा करना।

(ग) रिक्त स्थान भरो–

1. विश्वनाथ दत्त **2.** रामकृष्ण **3.** स्वामी विवेकानंद **4.** रामकृष्ण मठ

(घ) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** जन-सेवा का आह्वान करने वाले व्यक्ति स्वामी विवेकानंद थे।

2. 'रामकृष्ण मिशन' नामक संस्था की स्थापना स्वामी विवेकानंद ने की।

3. रामकृष्ण मिशन की स्थापना का उद्देश्य था–जाति-पाँति की सीमाओं से परे मानव को ईश्वर का अंश जानकर उसकी सेवा करो। यही ईश्वर की सच्ची सेवा है।

4. **अर्थ–** आहवान = **बुलाना**, धन = **रुपये-पैसे**, मठ = **भिक्षुओं के रहने का स्थान**, संस्था = **संगठन**।

(ङ) निबंध से लिए गए इन अधूरे वाक्यों को पूरा करो–

उत्तर– 1. रामकृष्ण परमहंस एक बहुत **ही पहुँचे हुए महात्मा और ज्ञानी पुरुष थे।**

2. नरेंद्र का प्रश्न सुनकर **रामकृष्ण परमहंस मुस्कराए।**

3. उनके आहवान पर सैकड़ों **युवक-युवतियाँ इस काम में लग गए।**

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) समानार्थी शब्द लिखो–

उत्तर– आज	**वर्तमान**	शिष्य	**चेला**
मधुर	**मीठा**	अंश	**भाग**

(ख) दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करो और उनके भेद लिखो–

उत्तर–
1. तुम; मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम
2. मैं; उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम
3. उसकी; अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
4. उन्होंने; अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
5. तुमने; मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

(ग) इनके विलोम शब्द लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर–
1. जन्म – **मरण**
   जन्म और मृत्यु जीवन के अनिवार्य सत्य हैं।
2. मधुर – **कर्कश**
   अचानक एक **मधुर** ध्वनि मेरे कानों में पड़ी।
3. प्रसन्न – **दुखी**
   अपना मन **प्रसन्न** हो, तो सभी प्रसन्न नजर आते हैं।
4. साकार – **निराकार**
   मेरा सपना **साकार** हो गया।
5. सच्ची – **झूठी**
   यह कहानी एक **सच्ची** घटना पर आधारित है।

(घ) इनके तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर– ईश्वर	–	**भगवान**	**प्रभु**	**देव**
पानी	–	**वारि**	**जल**	**अंबु**
शिष्य	–	**विद्यार्थी**	**चेला**	**शिक्षार्थी**
मनुष्य	–	**नर**	**मानव**	**जन**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. स्वामी विवेकानंद के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करो और लिखो।

उत्तर– भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत महापुरुषों में स्वामी विवेकानंद का अन्यतम स्थान है। भारतीय पुनर्जागरण के महान सेवक स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 में कलकत्ता के एक सम्मानित परिवार में हुआ था। इनका पहला नाम नरेंद्रनाथ था। शारीरिक दृष्टि से नरेंद्रनाथ हृष्ट-पुष्ट व शौर्यवान थे। उनकी बुद्धि विलक्षण थी, जो पाश्चात्य दर्शन में ढाली गई थी। प्रारंभ में वे ब्रह्मसमाज की शिक्षाओं से प्रभावित हुए परंतु वैज्ञानिक अध्ययनों के कारण ईश्वर से उनका विश्वास उठ गया था। जब विवेकानंद स्वामी परमहंस से मिले तो उनकी आयु केवल 25 वर्ष की थी। 31 मई सन् 1893 में वे अमेरिका गए और 11 सितंबर सन् 1893 में शिकागो में उन्होंने विश्वधर्म संसद में अत्यंत प्रतिभाशाली सारगर्भित भाषण दिया। विवेकानंद का सबसे प्रमुख उद्देश्य भारतीयों को शक्ति सृजन और निर्भयता का संदेश देना था। वे अत्यंत साहसी, निर्भीक और शक्तिशाली व्यक्ति थे। स्वामी जी का कथन था कि प्रत्येक भारतवासी को ज्ञान, चरित्र तथा नैतिकता की शक्तियों का सृजन करना चाहिए। 14 जुलाई, सन् 1902 में उनका स्वर्गवास हो गया।

2. 'जन-सेवा ही ईश्वर-सेवा' शीर्षक से एक अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– मानव सेवा ही ईश्वर की सेवा है। आज के भौतिकवादी युग में पीड़ित मानव की सेवा करना अत्यंत दुर्लभ कार्य है। भारतीय दर्शन में सेवाभाव को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, जो हमें निष्काम कर्म के लिए प्रेरित करती है। गरीबों और पीड़ितों के प्रति करुणा व दया ही ईश्वर के प्रति हमारा कर्तव्य है। ईश्वर हमसे कुछ पाना नहीं चाहते। ईश्वर समस्त सृष्टि के रक्षक हैं, वे प्रेम व करुणा की मूर्ति हैं। हम उस प्रेम व करुणा को आत्मसात कर सकें तो ही हम अपना विकास कर पाएँगे। हम भगवद् कृपा के पात्र तभी बनेंगे जब हम जीवमात्र के प्रति स्नेह और सब की निष्काम भाव से सेवा करने का भाव रखेंगे। निष्काम सेवा से अंतकरण शुद्ध होता है। अतः अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर को प्रसन्न करने हेतु मानव सेवा ही सर्वोपरि है।

3. नीचे दिए गए चित्रों को पहचान कर उनके नाम लिखो–

उत्तर–

महावीर स्वामी

महात्मा बुद्ध

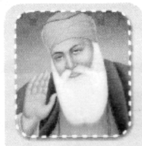

गुरु नानक

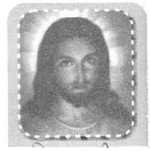

ईसा मसीह।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– उत्तर छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

4 सत्य की जीत (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** घोघा बापा ऐसे आगे बढ़ रहे थे जैसे कोई तैराक समुद्र की तरंगों को चारों ओर फेंकता हुआ आगे बढ़ता है।

2. गजनी की नजर महाप्रतापी घोघा राजा की पत्थर की बनी हुई प्रतिमा पर पड़ी।

3. सुलतान ने प्रतिमा बनाने वाले शिल्पी की तलाश करने को कहा।

4. शिल्पी ने मृत्यु के बारे में कहा कि मृत्यु सबकी निश्चित है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** केसरिया पगड़ी चौहान सैनिक पहने हुए थे।

2. गजनी ने पत्थर की प्रतिमा को देखा। वह ऐसी लग रही थी मानो–वह प्रस्तर मानव-मूर्ति पराक्रम का प्रतीक हो। आकाश की ओर उठी हुई वे पैनी आँखें। स्वर्ग से अमृत को लाने वाले गरुड़ की दृष्टि थी वह। पैरों में लिपटे हुए नागों को वह हाथों से मसलकर नष्ट कर रहा था–मानो पक्षीराज गरुड़ ही हो।

3. सुलतान ने शिल्पी की निर्भीकता पर कहा–"कलाकार! तुम्हारा हाथ पत्थर से स्वर्ग का निर्माण भले ही करे, किंतु तुम्हारी जिह्वा तुम्हें रसातल की ओर ले जा सकती है।"
4. शिल्पी घोघा राणा की प्रतिमा को अपनी श्रेष्ठतम कृति इसलिए बताता है क्योंकि उस प्रतिमा से साक्षात् किसी वीरपुरुष की अनुभूति हो रही थी।
5. सुलतान शिल्पी से प्रभावित होकर कहता है कि–"आज तुमने मेरी आँखें खोल दीं। शस्त्र की जीत अंतिम जीत नहीं होती। सत्य की ही विजय होती है–यह ज्ञान मुझे मिल गया।"

(ग) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. अमीर ने, लोगों की भीड़ से, क्योंकि वह उस सुंदर प्रतिमा बनाने वाले शिल्पी को देखना चाहता था।
2. शिल्पी ने, सुल्तान से, क्योंकि वह सुल्तान को यह बताना चाहता था कि एक दिन आपकी भी मृत्यु अवश्य होगी।
3. अमीर ने, शिल्पी से, क्योंकि शिल्पी के जवाब से उसकी आँखें खुल गई थीं।

(घ) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरो–

उत्तर– 1. उनकी **गर्जना** दूर तक सुनाई देती थी।
2. गजनी की नजर पत्थर की एक **प्रतिमा** पर पड़ी।
3. क्या मूर्ति का शिल्पी इसी **नगर** में रहता है?
4. **मृत्यु** से कौन बच सकता है, सुलतान।
5. यह मेरी **श्रेष्ठतम** कृति है।

(ङ) दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. ये कथन शिल्पी द्वारा बोले गए।
2. कलाकार राजनीति को वीरांगना कहता है।
3. परमसत्ता से तात्पर्य है–सबसे बड़ी शक्ति।
4. **समानार्थी शब्द–**
जिह्वा = **जीभ**, कलाकार = **किसी कला को जानने वाला**, आलोक = **प्रकाश**, वीरांगना = **वीर स्त्री।**

(च) इस संवाद का भावार्थ अपने शब्दों में स्पष्ट करो–

उत्तर– **भावार्थ–**जब सुलतान ने शिल्पी को आदेश दिया कि तुम्हें इस मूर्ति को तोड़ना होगा तो। कुछ क्षण के लिए वहाँ खड़ी हुई भीड़ में सन्नाटा छा गया। थोड़ी देर बाद सुलतान ने ही शांति भंग की।

(क) विलोम शब्द लिखकर उनसे वाक्य बनाओ–

उत्तर– कठोरता – **कोमलता** – उसने स्वर को **कोमलता** से परिपूर्ण बनाते हुए कहा–आपको बुरा तो नहीं लगा।

शक्ति – **शक्तिहीनता** – अन्याय का विरोध न करना **शक्तिहीनता** का परिचायक होता है।

चंचल – **शांत** – सोनाली बहुत शांत स्वभाव की लड़की है।

नीरोग – **रोगी** – किसी **रोगी** की सेवा करना बहुत-बड़ा मानव धर्म है।

उपयोगी – **अनुपयोगी** – हमें **अनुपयोगी** वस्तुओं को नहीं रखना चाहिए।

(ख) पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग बताओ–

उत्तर–

अग्नि	**स्त्रीलिंग**	वाणी	**स्त्रीलिंग**
मसाला	**पुल्लिंग**	विद्यार्थी	**पुल्लिंग**
नदी	**स्त्रीलिंग**	हाथ	**पुल्लिंग**

(ग) निम्नलिखित शब्दों को पढ़ो, समझो और उदाहरण के अनुसार लिखो–

उत्तर–

भाववाचक संज्ञा	**विशेषण**	**विशेष्य**
एकाग्रता	**एकाग्र**	**विद्यार्थी**
मेहनत	**मेहनती**	**किसान**
संयम	**संयमी**	**व्यक्ति**
सफलता	**सफल**	**कारीगर**
सुख	**सुखी**	**लड़की**

(घ) निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखो–

उत्तर– **1.** भविष्यत् काल, **2.** वर्तमान काल,
3. भूतकाल, **4.** भविष्यत् काल।

(ङ) चित्र देखकर उनके तीन-तीन नाम लिखो–

उत्तर–

अग्नि आग अनल

रास्ता पथ मार्ग

	बालक	बच्चा	लड़का
	कर	हाथ	हस्त

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) नीचे दिए गए श्लोक में विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताए गए हैं। उनके विषय में जानो और लिखो–

उत्तर– 1. कौए की तरह प्रयास करना।

2. बगुले की तरह ध्यान लगाना।

3. स्वान की तरह नींद लेना।

4. थोड़ा खाना तथा

5. घर का मोह त्यागना! विद्यार्थी के ये पाँच लक्षण बताए गए हैं।

(ख) निम्नलिखित विषयों पर लघु अनुच्छेद लिखो–

उत्तर 1. जीवन में सत्य का बहुत्त महत्व होता है। सच में वह शक्ति होती है जो बड़े-बड़े साम्राज्य तक को हिला देती है। असत्य का व्यवहार बच्चे अपने घर में बचपन से ही देखते हैं। बच्चों को टालने के लिए प्रायः माता-पिता झूठ बोलते हैं, जिसका असर उनके कोमल मन पर बहुत गहरा पड़ता है। और वे बड़ों की देखा-देखी झूठ बोलने के अभ्यस्त होने लगते हैं। कमोवेश हम सब की स्थिति भी यही है। हमें इस विषय पर मनन करने की बहुत आवश्यकता है। पूरी प्रकृति सत्य का पालन करती है। प्रकृति से सीख लेते हुए हमें भी सत्य का व्यवहार करना चाहिए। असत्य बोलकर हम दुनिया से तो बच सकते हैं पर, वो जो कण-कण में विद्यमान है, उसकी नजर से नहीं बच सकते। और उससे भी आगे हम अपने अंतःकरण से नहीं बच सकते। वह हरपल हमें असत्य आचरण के लिए कचोटता रहेगा। इसलिए ऋषि-मुनि ईश्वर से प्रार्थना करते हैं–'असतो मा सद् गमय।' अर्थात् हे ईश्वर! हमें असत्य मार्ग से हटाकर सत्य की ओर ले चलो। अतः सत्य पर हम असत्य का कितना भी आवरण क्यों न चढ़ा लें, अंत में जीत सत्य की ही होती है।

2. हिंसा करना और स्वार्थवश साहसी कार्य करने से व्यक्ति वीर नहीं बनता। वह वीर बनता है अपने वीरोचित आचरण से। वीर का यह कर्त्तव्य होता है कि वह दूसरे वीर की कदर करे। वह व्यक्ति जो पीठ पीछे से वीरों पर वार करते हैं, निहत्थे वीरों पर शस्त्रों का प्रहार करते हैं, कभी भी वीर नहीं कहला सकते। एक सच्चा वीर वह होता है जो शत्रु पक्ष के वीरों का भी सम्मान करता है और उनपर अनुचित वार नहीं करता। हमारा इतिहास ऐसे वीरों से भरा पड़ा है जो सही मायनों में वीर थे। उन्होंनें हमेशा अन्य वीरों की कदर करी।

(ग) सुल्तान ने अंत में कहा कि–'कलाकार, शस्त्र की जीत अंतिम जीत होती है, यही आज तक मेरा विश्वास था। परंतु आज तुमने आँखें खोल दीं। बताओ, उन्होंने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर– सुलतान ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि, सुलतान ने सोचा था कि उसके क्रोधित होने पर शिल्पी डरकर अपनी जिद छोड़ देगा और उसके कहेनुसार प्रतिमा को तोड़ देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अतः यह पता चल गया कि, शस्त्रों के बल पर हर किसी को नहीं जीता जा सकता है। इसलिए उन्होंने उपरोक्त वचन कहे।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 अमरता की प्यास (लोककथा)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. सिकंदर यूनान का बादशाह था।

2. सिकंदर ने देश के बुज़ुर्गों को दरबार में इसलिए बुलाया क्योंकि वह एक ऐसा उपाय जानना चाहता था, जिससे वह हमेशा जीवित रहे।

3. जुल्मत नामक प्रदेश फारस देश के विशाल मरुस्थल को पार करने के बाद आता था।
4. झरने के रक्षक ने सिकंदर को झरने का पानी पीने की अनुमति दी।
5. सुरंग से बाहर आते ही सिकंदर और उसके साथियों ने पानी की गगरी को एक पेड़ की डाल पर बाँध दिया और सब सो गए।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. सिकंदर की यह चिंता थी कि यदि वह जीवित न रहा, तो उसके बाद उसके साम्राज्य का क्या होगा।

2. बूढ़े ने सिकंदर से कहा–फारस देश के विशाल मरुस्थल को पार करके जुल्मत नामक एक अँधेरा प्रदेश आता है1 वहाँ पानी का एक झरना है। उसका पानी पीने से चिरजीवन मिलता है। उस झरने की रखवाली ख्वाजा खिजर नामक एक बूढ़ा करता है। बूढ़ा अभी तक जिंदा है क्योंकि उसने भी उस झरने का पानी पीया है।

3. सिकंदर अपने चालीस घुड़सवार लेकर झरने की खोज में निकला क्योंकि उसे भी झरने का पानी पीना था।

4. सिकंदर का चिरजीवन का सपना इसलिए साकार न हो सका, क्योंकि उसने वहाँ सुरंग के पास झरने का पानी नहीं पीया और पानी की गगरी को लाकर एक पेड़ पर बाँध दिया। उसके बाद सब सो गए। तभी वहाँ पर एक कौआ आया। उसने कुछ पानी पीया, बाकी जमीन पर गिरा दिया। इस प्रकार सिकंदर झरने का पानी नहीं पी सका।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. सुरंग से बाहर आते ही सिकंदर और उसके साथियों ने आराम करने का फैसला किया।

2. उन्होंने चिरजीवन के पानी से भरी गगरी को पेड़ से बाँधा।

3. गगरी में रखा पानी नीचे इसलिए बह गया क्योंकि कौए ने गगरी लुढ़का दी थी।

4. **पर्यायवाची शब्द–**

गगरी = **कुंभ, घड़ा**; पेड़ = **वृक्ष, पादप**; कौआ = **काक, कागा**; पानी = **जल, अंबु**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. बूढे ने सिकंदर से, क्योंकि सिकंदर चिरजीवन चाहता था।

2. सिकंदर ने ख्वाजा खिजर नामक बूढ़े से, क्योंकि वह झरने की रखवाली

करता था।

3. बूढ़े ख्वाजा खिजर ने सिकंदर से, क्योंकि सिकंदर उससे झरने का पता पूछ रहा था।
4. सिकंदर ने अपने साथी घुड़सवारों से, क्योंकि वह उस पानी को एक बड़े जलसे में पीना चाहता था।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) वचन बदलो–

उत्तर–	रात	**रातें**	बादशाह	**बादशाहों**
	बूढ़ा	**बूढ़े**	रक्षक	**रक्षकों**
	यात्रा	**यात्राएँ**	झरना	**झरनें**

(ख) समानार्थी शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

उत्तर–	दिन	वार (✓)	वारि
	बूढ़ा	युवक	वृद्ध (✓)
	पानी	जल (✓)	अंबा
	सुरंग	गुफ्फा	गुफा (✓)
	दीवार	प्राचीर (✓)	प्राची

(ग) दिए गए शब्दों में से संयुक्ताक्षर अलग करके लिखो और उस संयुक्ताक्षर से बनने वाले दो-दो शब्दों के उदाहरण दो–

	शब्द	**संयुक्ताक्षर**	**नए शब्द**	
उत्तर–	साम्राज्य	**ज्य**	**भाज्य**	**राज्य**
	जुल्मत	**ल्म**	**जुल्म**	**गुल्म**
	रास्ते	**स्त**	**सूर्यास्त**	**अस्त**
	अन्य	**न्य**	**अन्याय**	**अनन्य**
	प्रयत्न	**त्न**	**यत्न**	**रत्न**

(घ) दिए गए शब्दों के वर्ण-विच्छेद करो–

उत्तर–	बादशाह	–	**ब् + आ + द् + अ + श् + आ + ह् + अ**
	जुल्मत	–	**ज् + उ + ल् + म् + अ + त् + अ**
	मरुस्थल	–	**म् + अ + र् + उ + स् + थ् + अ + ल् + अ**
	सिकंदर	–	**स् + इ + क् + अं + द् + अ + र् + अ**
	अनुमति	–	**अ + न् + उ + म् + अ + त् + इ**

(ङ) विपरीतार्थक शब्द लिखो–

उत्तर–

निडर	–	**डरपोक**	जीवित	–	**मृत**
विशाल	–	**लघु**	अनुमति	–	**इंकार**
बादशाह	–	**भिखारी**	बूढ़ा	–	**जवान**
खुशी	–	**दुख**	रक्षक	–	**भक्षक**

(च) भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर–

बूढ़ा	–	**बुढ़ापा**	निडर	–	**निडरता**
गरम	–	**गरमी**	अच्छा	–	**अच्छाई**
खुश	–	**खुशी**	निराश	–	**निराशा**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. चिरजीवन अर्थात् अमरता प्राप्त करना तो असंभव है, परंतु एक स्वस्थ और दीर्घायु जीवन भी किसी चिरजीवन से कम नहीं है। परंतु यह चिरजीवन किसी झरने का पानी पीने से नहीं बल्कि अच्छी जीवनशैली और तनावमुक्त रहने से होता है। अच्छी जीवनशैली में व्यायाम, अच्छा भोजन, भरपूर नींद और शुद्ध वातावरण शमिल होता है। तनावमुक्त जीवन के लिए ध्यान, योगासन, ब्रह्मचर्य, संतोष आदि की आवश्यकता होती है। इस प्रकार स्वस्थ और तनावमुक्त रहकर हम चिरजीवन प्राप्त कर सकते हैं।
2. सिकंदर महान के विषय में जानकारी संकलित करो तथा प्राप्त जानकारी के आधार पर एक लेख लिखो।

उत्तर– सिकंदर (20 जुलाई, 356 ईसा पूर्व से 11 जून 323 ईसा पूर्व) मकदूनियाँ (मेसेडोनिया) का ग्रीक प्रशासक था। वह एलेक्जेंडर तृतीय तथा एलेक्जेंडर मेसेडोनिया नाम से भी जाना जाता है। इतिहास में वह सबसे कुशल और यशस्वी सेनापति माना गया है। अपनी मृत्यु तक वह उस तमाम भूमि को जीत चुका था, जिसकी जानकारी प्राचीन ग्रीक लोगों को थी। इसलिए उसे विश्वविजेता भी कहा जाता है। उसने अपने कार्यकाल में ईरान, सीरिया, मिश्र, मेसोपोटामिया, फिनीशिया, जुदेआ, गाझा, बक्ट्रिया और भारत में पंजाब तक के प्रदेश पर विजय हासिल की थी। सिकंदर ने भारत पर आक्रमण 327 ई0 पू0 में किया। वह भारत आकर कुछ राज्यों पर विजय प्राप्त करके लौट रहा था तभी उसने तक्षशिला के पास एक उद्यान में बहुत-से मुनियों को तपस्यारत

देखा। उनमें एक कल्याण मुनि थे, जिनसे सिकंदर ने यूनान में धर्म-प्रचार करने की प्रार्थना की। मुनि कल्याण ज्योतिष शास्त्र में निपुण थे। उन्होंने सिकंदर की मृत्यु को भी पहले ही घोषित कर दिया था। फारसी में सिकंदर को एस्कंदर-ए-मक्दुनी और हिंदी में सिकंदर महान कहा जाता है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 न्यायमंत्री (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** परदेशी ने शिशुपाल से विनती करते हुए कहा, ''क्या मुझे रात काटने के लिए स्थान मिल जाएगा?''

2. सिपाही को देखकर शिशुपाल इसलिए सहम गए क्योंकि सिपाही ने उन्हें दरबार में चलने को कहा।

3. सम्राट अशोक ने शिशुपाल को न्यायमंत्री के पद पर नियुक्त किया।

4. न्यायमंत्री ने उच्चाधिकारी धनवीर को सम्राट को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी।

5. फाँसी पर, सम्राट अशोक के स्थान पर उनकी मूर्ति को लटकाया गया।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** शिशुपाल के घर आने वाला परदेसी स्वयं सम्राट अशोक थे। उनके बीच देश की अवस्था तथा न्याय-अन्याय को लेकर बातचीत हुई।

2. सम्राट अशोक ने शिशुपाल को न्यायमंत्री इसलिए बनाया क्योंकि उन्होंने कहा था कि ''यदि मुझे अवसर मिला तो मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।''

3. पहरेदार की हत्या सम्राट अशोक ने की थी। शिशुपाल ने उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई।

4. सम्राट अशोक को हत्यारा होते हुए भी मृत्युदंड इसलिए नहीं दिया गया, क्योंकि वह एक राजा थे और शास्त्रों के अनुसार राजा ईश्वर का रूप होता है, जिसे केवल ईश्वर ही दंड दे सकता है।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. पहरेदार की हत्या सम्राट अशोक ने की थी।

2. शिशुपाल के लिए सबसे मुश्किल काम सम्राट को अपराधी घोषित करना था।
3. न्याय की दृष्टि से सम्राट को दंड देना आवश्यक था।
4. **शब्दों के अर्थ–**

अपराधी – **दोषी**
वाक्य–अपराधी को दंड देना आवश्यक था।

सम्राट – **राजा**
वाक्य–सम्राट का चेहरा क्रोध से लाल हो गया।

हत्या – **मारना**
वाक्य–पहरेदार की **हत्या** सम्राट अशोक ने की थी।

सेवक – **सेवा करने वाला**
वाक्य–शिशुपाल न्यायमंत्री होने के साथ सम्राट के **सेवक** भी थे।

न्याय – **नियमों के अनुसार बात**
वाक्य–न्यायमंत्री का **न्याय** सुनकर सब जय-जयकार करने लगे।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. शिशुपाल ने, अतिथि से, क्योंकि वे देश की अवस्था पर बात कर रहे थे।

2. अतिथि ने, शिशुपाल से, क्योंकि अतिथि शिशुपाल की परीक्षा लेना चाहते थे।
3. सम्राट अशोक ने, शिशुपाल से, क्योंकि वे शिशुपाल को परखना लेना चाहते थे।
4. शिशुपाल ने, दरबार में आए हुए सभी लोगों से, क्योंकि वे सभी लोगों को समझाना चाहते थे।

(ङ) खाली स्थान भरो–

उत्तर– 1. उनके सामने एक **नवयुवक** खड़ा था।

2. **अतिथि** को लेकर शिशुपाल घर में गए और उनका **आदर-सत्कार** किया।
3. अब शिशुपाल **न्याय** मंत्री थे।
4. स्वयं **सम्राट** ने उस पहरेदार की हत्या की थी।

5. सम्राट का चेहरा क्रोध से **लाल** हो गया।

6. आपका **साहस** प्रशंसनीय है।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) विलोम शब्दों से मिलान करो–

उत्तर–
अंधकार → प्रकाश
बाहर → भीतर
न्याय → अन्याय
सरल → कठिन
शांति → अशांति
इच्छा → अनिच्छा

(ख) निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाओ–

उत्तर–

बाहर	**बाहरी**	सुंदरता	**सुंदर**
पवित्रता	**पवित्र**	अन्याय	**अन्यायी**
परदेस	**परदेसी**	अच्छाई	**अच्छा**
मोटापा	**मोटा**	निर्दयता	**निर्दयी**
झूठ	**झूठा**	सच्चाई	**सच्चा**

अब, इन विशेषण शब्दों को उचित विशेष्यों के आगे लिखो–

बाहरी	द्वार	**सुंदर**	फूल
परदेसी	मजदूर	**अन्यायी**	राजा
पवित्र	रिश्ता	**सच्चा**	बालक
झूठा	सेवक	**मोटा**	व्यक्ति
निर्दयी	शिकारी	**अच्छा**	मौसम

(ग) वर्णों को जोड़कर शब्द लिखो–

उत्तर–

1.	श् + इ + श् + उ + प् + आ + ल् + अ	**शिशुपाल**
2.	श् + इ + क् + आ + य् + अ + त् + अ	**शिकायत**
3.	अ + ध् + इ + क् + आ + र् + ई	**अधिकारी**
4.	प् + अ + र् + अ + द् + ए + स् + ई	**परदेसी**
5.	ध् + अ + न् + य् + अ + व् + आ + द् + अ	**धन्यवाद**
6.	न् + य् + आ + य् + अ	**न्याय**
7.	स् + व् + ई + क् + आ + र् + अ	**स्वीकार**

(घ) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो–

उत्तर– **1.** न्यायी, **2.** हथकड़ी, **3.** न्यायमंत्री, **4.** दुर्गम, **5.** वाचाल, **6.** सर्वज्ञ, **7.** दानी।

(ङ) इनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

ब्राह्मण	**विप्र**	**पंडित**
सम्राट	**पृथ्वीपति**	**भूपति**
मृत्यु	**मौत**	**मरण**
हाथ	**हस्त**	**कर**

(च) नीचे दिए गए समस्त पदों के विग्रह करो–

उत्तर–

न्यायमंत्री	**न्याय का मंत्री**	यशप्राप्त	**यश को प्राप्त**
सिरदर्द	**सिर में दर्द**	महाराज	**महान है जो राजा**
गंगाजल	**गंगा का जल**	देशभक्ति	**देश के लिए भक्ति**

(छ) 'ता' तथा 'ई' प्रत्यय वाले तीन-तीन शब्द लिखो–

उत्तर–

पवित्रता	अपराधी
धड़कता	न्यायी
निस्तब्धता	ऊँचाई

(ज) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग करके लिखो–

उत्तर–

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
अन्याय	**अ**	**न्याय**
अवगुण	**अव**	**गुण**
निर्दोष	**निर्**	**दोष**
अपमान	**अप**	**मान**
सुप्रबंध	**सु**	**प्रबंध**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. न्याय का अर्थ है नियम के अनुसार कार्य का होना। सच्चा न्याय वह है जो निष्पक्ष है तथा प्रभावी भी है। यदि न्याय करने वाले अधिकारी राजा और रंक में भेद करते हैं। तो वह न्याय नहीं अन्याय है। हमारी प्राचीन परंपरा में और धर्म में भगवान को भी शापित होते दिखाया गया है। वर्तमान में भारतीय संविधान में भी नागरिकों पर बिना किसी भेदभाव के समान कानून लागू किया गया है न्याय की दृष्टि में सभी समान होते हैं।
2. सम्राट अशोक के विषय में जानकारी एकत्र करो और लिखो।

उत्तर– चक्रवर्ती सम्राट अशोक (ईसा पू० 304 से ईसा पू० 232) विश्वप्रसिद्ध एवं शक्तिशाली भारतीय मौर्य राजवंश के महान सम्राट थे। सम्राट अशोक का पूरा

नाम देवनांप्रिय अशोक मौर्य (देवताओं का प्रिय) था। उनका राज्यकाल ईसा पू० 272 से 232 तक प्राचीन भारत में था। सम्राट अशोक का विशाल मौर्य साम्राज्य आज तक का सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य रहा है। सम्राट अशोक को 'चक्रवर्ती सम्राट अशोक' कहा जाता है, जिसका अर्थ है–'सम्राटों का सम्राट।' यह सम्मान भारत में केवल सम्राट अशोक को मिला है। सम्राट अशोक को अपने विस्तृत साम्राज्य से, बेहतर कुशल प्रशासन तथा बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भी जाना जाता है। सम्राट अशोक ने संपूर्ण एशिया में तथा अन्य आज के सभी महाद्वीपों में भी बौद्ध धर्म का प्रचार किया। सम्राट अशोक प्रेम, सहिष्णुता, सत्य, अहिंसा एवं शाकाहारी जीवन प्रणाली के सच्चे समर्थक थे, इसलिए उनका नाम इतिहास में महान परोपकारी सम्राट के रूप में दर्ज हो चुका है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

7 सुभागी (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** सुभागी तुलसी महतो की लड़की थी।

2. हरिहर ने सुभागी को विवाह के लिए समझाते हुए कहा,–"बेटी, हम तेरे ही भले के लिए कहते हैं। माँ-बाप अब बूढ़े हो गए हैं, उनका क्या भरोसा। तुम इस तरह कब तक बैठी रहोगी?"

3. रामू सुभागी से ईर्ष्या इसलिए करता था क्योंकि वह रामू को काम करने के लिए कभी मना नहीं करती थी।

4. गाँव के लोग सुभागी की तारीफ इसलिए करते थे क्योंकि, वह दो जनों का काम अकेली करती थी तथा माँ-बाप की सेवा भी करती थी।

5. सुभागी ने एक बेटे के कर्तव्य को निभाया क्योंकि, भाई के अलग हो जाने पर वह माँ-बाप के साथ रही तथा उनकी जी-जान से सेवा की और अंत में माँ का दाह-संस्कार भी किया।
6. सजनसिंह के रुपये देकर सुभागी की सहायता की।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. तुलसी महतो को यह चिंता थी कि उनके बाद सुभागी का क्या होगा।
2. भाई के अलग हो जाने पर सुभागी अपने माता-पिता के साथ ही रही तथा उनके काम में हाथ बँटाकर हर प्रकार से उनकी सेवा-सहायता की। माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने पर उसने कर्ज लेकर उनकी अन्त्येष्ठि की। इस प्रकार उसने पुत्री होते हुए भी एक पुत्र के कर्तव्य को पूरा किया।
3. तुलसी महतो को बँटवारे के लिए विवश इसलिए होना पड़ा, क्योंकि सुभागी का भाई रामू सुभागी से ईर्ष्या करने लगा था तथा उसको भला-बुरा कहने लगा था।
4. तुलसी महतो की मौत के बाद उनकी पत्नी लक्ष्मी की दशा अत्यंत शोचनीय हो गई थी। उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया था, जिससे वह बहुत दुर्बल हो गईं, फलस्वरूप जल्दी ही बीमार हो गईं और अंत में वह भी इस संसार से विदा हो गईं।
5. सजनसिंह ने सुभागी से प्रार्थना करते हुए कहा, ''मेरी इच्छा है कि तुम मेरे घर की बहू बनकर मेरे घर को पवित्र करो।'' सुभागी ने उनका यह प्रस्ताव सिर झुकाकर स्वीकार कर लिया।

(ग) खाली स्थान भरो–

उत्तर– 1. तुलसी महतो अपनी लड़की **सुभागी** से बहुत प्यार करते थे।
2. रात को कभी माँ के **सिर** में तेल डालती, कभी उसकी **देह** दबाती।
3. दूसरों के बल पर वाहवाही लेना **आसान** है।
4. पुत्र को **रत्न** समझा था और पुत्री को पूर्व-जन्म के **पापों** का दंड।
5. गाँव के मुखिया बाबू **सजनसिंह** बड़े सज्जन पुरुष थे।
6. **दुर्बलता** ने जल्द ही खाट पर डाल दिया।
7. तुम साक्षात् **भगवती** का अवतार है।

(घ) नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. कभी माँ के सिर में तेल डालकर, कभी उनकी देह दबाकर सुभागी माँ की सेवा किया करती थी।

2. सुभागी के अपने माता-पिता के प्रति प्रेम का उदाहरण इस बात से मिलता है कि वह अपने माता-पिता को कोई काम नहीं करने देती थी।
3. सुभागी अपने भाई को काम करने से इसलिए नहीं रोकती थी क्योंकि, वह सोचती थी कि यह तो जवान आदमी हैं, काम न करेंगे तो गृहस्थी कैसे चलेगी।
4. **समानार्थी शब्द–**
   माँ = **माता**, बाप = **पिता**, बेटा = **पुत्र**, आदमी = **मनुष्य**।

(ङ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. हरिहर ने, सुभागी से, क्योंकि वह चाहते थे कि सुभागी विवाह कर ले।
2. रामू ने, अपने पिता से, क्योंकि पिता ने उसे सुभागी से लड़ने से रोका था।
3. तुलसी महतो ने, सुभागी से, क्योंकि वह स्वयं को अलग कर देने के लिए कह रही थी।
4. सुभागी ने, सजनसिंह से, क्योंकि उसने सजनसिंह से रुपये उधार लिए थे।

(च) भावार्थ स्पष्ट करो–

उत्तर– भावार्थ–इन पंक्तियों में सजनसिंह सुभागी से अपनी पुत्रवधू बनने की प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि, मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि तुम मेरी पुत्रवधू बनकर मेरे घर को पवित्र करो। मेरा लड़का भी तुम्हें पसंद करता है। अगर तुम्हें मेरा प्रस्ताव स्वीकार हो तो हाँ कर दो।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) इनके दो-दो पर्यायवाची शबद लिखो–

उत्तर–

लड़की	**बाला**	**बालिका**
पिता	**जनक**	**पालनकर्ता**
भाई	**भ्राता**	**सहोदर**
बेटी	**पुत्री**	**तनया**
पानी	**जल**	**वारि**

(ख) 'सु' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

भागी	**सुभागी**	फल	**सुफल**
पुत्र	**सुपुत्र**	गम	**सुगम**
दूर	**सुदूर**	कर्म	**सुकर्म**

(ग) निम्नलिखित वाक्यों का काल लिखो–

उत्तर– **1.** भूतकाल, **2.** भविष्यत् काल
3. वर्तमान काल, **4.** वर्तमान काल।

(घ) विलोम शब्द लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर– कामचोर – **परिश्रमी**
कामचोर व्यक्ति को कोई भी पसंद नहीं करता।

विधवा – **सधवा**
सुभागी बहुत छोटी उम्र में ही **विधवा** हो गई थी।

विपदा – **संपदा**
सुभागी पर अचानक एक और **विपदा** आन पड़ी।

कड़वी – **मीठी**
बच्चा **कड़वी** दवाई खाने में आनकानी करने लगा।

पाप – **पुण्य**
पाप का घड़ा भरने में अभी समय लगेगा।

सज्जन – **दुर्जन**
सजनसिंह एक **सज्जन** पुरुष थे।

(ङ) इनके दो-दो अर्थ लिखो–

उत्तर–

बड़ा	–	**महान**	**दहीबड़ा (खाद्य पदार्थ)**
पानी	–	**जल**	**इज्जत (सम्मान)**
कर	–	**हाथ**	**करना (क्रिया)**
जीवन	–	**जिंदगी**	**निर्वाह**
स्वर	–	**ध्वनि**	**वर्ण (व्याकरण संबंधी)**

(च) पाठ से स्वर सहित 'र' और स्वर रहित 'र' के तीन-तीन शब्द छाँटकर लिखो–

उत्तर–

स्वर सहित 'र'	**उम्र**	**क्रिया**	**व्रत**
स्वर रहित 'र'	**गर्व**	**कर्ज**	**पूर्व**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।

2. सुभागी का चरित्र-चित्रण लिखो।

उत्तर– सुभागी का चरित्र-चित्रण

कहानी की नायिका सुभागी घर तथा खेती-बाड़ी के कार्यों में निपुण एक होशियार बालिका है। थोड़ी बड़ी हुई तो योग्य वर देखकर उसका विवाह कर दिया गया लेकिन, कुछ ही दिनों बाद दुर्भाग्यवश उसका पति चल बसा और वह पिता के घर में ही रहने लगी। दूसरे विवाह के प्रस्ताव को वह विनम्रतापूर्वक मना कर देती है। वह एक आत्मविश्वासी लड़की है। भाई द्वारा ताना मारने पर वह कहती है–''मैंने तुम्हारा आसरा कभी नहीं किया और भगवान ने चाहा तो कभी करूँगी भी नहीं।'' वह बहुत मेहनती है। दिन-रात काम में लगी रहती है तथा माँ-बाप की बहुत सेवा करती है। इसी कारण वह सबकी प्रशंसा का पात्र बन गईं, जिससे उसका भाई रामू उससे ईर्ष्या-भाव रखने लगा। भाई के अलग हो जाने पर वह साहस के साथ सारी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लेती है। स्वभाव से वह बहुत ही विनम्र है। अपने इन्हीं गुणों के कारण उसने सबके हृदयों में अपना स्थान बना लिया। पहले पिता, उसके बाद माता का स्वर्गवास हो जाने पर, वह उनकी बीमारी में लिए गए कर्ज को दिन-रात मेहनत करके चुकाती हैं। उसके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर गाँव के मुखिया उसके सामने अपनी पुत्रवधू बनने का प्रस्ताव रख देते हैं तथा उसके सहर्ष मान लेने पर खुश होकर कहते हैं–''बेटी, तुमने मेरी बात रख ली। मुझ-सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा?''

3. मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी 'मंत्र' को पढ़ो तथा उसके उद्‌देश्य लिखो।

उत्तर– प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। उनकी कहानियों में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, दलितों आदि की समस्याएँ गंभीरता से चित्रित हुई हैं। प्रेमचंद की अनेक कहानियों में एक हृदयस्पर्शी कहानी है–'मंत्र'। जिसमें उन्होंने अमीर तथा गरीब के बीच गहरी खाई को दर्शाया है। इस कहानी के एक पात्र डॉ० चड्‌ढा के माध्यम से उन्होंने यह बताया है कि, जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन की ऊँचाइयाँ चढ़ता जाता है, उसके हृदय से दया, ममता, परोपकार जैसी भावनाएँ समाप्त होती जाती हैं लेकिन, साथ ही कहानी के मुख्य नायक बूढ़े भगत के माध्यम से यह बताया है कि हमें हमेशा दया, परोपकार, त्याग आदि गुणों को अपनाना चाहिए। क्योंकि मानव का मानव के काम आना ही सच्चा धर्म है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

8 ऐसी वाणी बोलिए (निबंध)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** जिसको सुनकर चित्त द्रवित होता है वही मधुर वाणी कहलाती है।

2. माधुर्य हृदय-द्वार खोलने की कुंजी है।

3. बाणभट्ट के मरने के समय यह प्रश्न उत्पन्न हो गया था कि उनकी अधूरी 'कादंबरी' कौन पूरी करेगा?

4. वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है।

5. कृपया शब्द शिष्टता का परिचायक होता है इसलिए किसी से कोई काम कहते समय कृपया शब्द का प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** तुलसीदास ने मधुर वाणी के विषय में कहा है कि कि कोयल किसी को कुछ नहीं देती है और कौआ किसी से कुछ नहीं लेता है। कोयल केवल मीठी बोली के द्वारा संसार को अपना बना लेती है।

2. भाव को प्रभावशाली भाषा में व्यक्त कर देना ही साहित्य है।

3. व्यक्ति के कर्म जब उसके वचनों के अनुकूल होते हैं तभी मनुष्य वंदय बनता है।

4. मन, वाणी और कर्म का सामंजस्य ही मनुष्य को श्रेष्ठ पद पर पहुँचाता है।

5. यदि किसी बात के लिए इनकार करना पड़े तो उसमें अधिकार और अभिमान की गंध नहीं आनी चाहिए। इनकार मजबूरी के कारण ही होना चाहिए।

6. व्यापारिक बातचीत नपी-तुली हो सकती है किंतु वह अशिष्ट नहीं होनी चाहिए। निजी संबंध की बातचीत आत्मीय होनी चाहिए। कुछ लोग सबके साथ निजी संबंध की तरह ही वार्तालाप करते हैं, यह गलत नहीं है किंतु बात उतनी ही कही जाए जितनी निभाई जा सके।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. मधुर वचनों के पीछे शिष्ट और मधुर भाव होने चाहिए।

2. हृदय की मलिनता ओर मधुर वचनों का योग नहीं हो सकता।

3. वचन के अनुकूल जब कर्म होते हैं, तभी मनुष्य वंदय बनता है।

4. समानार्थी शब्द–

मधुर = **मीठा**, बेकार = **व्यर्थ**, मलिनता = **गंदगी**, वंदय = **वंदनीय**।

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

उत्तर– 1. भाषा द्वारा मनुष्य की **सामाजिकता** कायम है।

2. **वचनों** का माधुर्य हृदय द्वारा खोलने की कुंजी है।

3. **वार्तालाप** की शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है।

4. मनुष्य के चरित्र के असली परिचायक उसके **कर्म** भी होते हैं।

(ङ) दिए गए गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में स्पष्ट करो–

उत्तर– भावार्थ–भाषा द्वारा ही एक-दूसरे से मधुर संपर्क बनाए जाते हैं। मधुर वाणी के द्वारा हम एक-दूसरे से मिल जाते हैं लेकिन, कड़वी बोली हमें एक-दूसरे से अलग कर देती है।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए शब्दों के प्रत्यय अलग करके लिखो–

उत्तर–

उन्नति	**उन्नत**	+	**इति**
सामाजिकता	**सामाजिक**	+	**ता**
सांसारिक	**संसार**	+	**इक**
वांछनीय	**वांछना**	+	**ईय**

(ख) विलोम शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

उत्तर–

सबल	–	निर्बल (✓)	बलवान
मधुर	–	मीठा	कर्कश (✓)
आदर	–	मान	अनादर (✓)
असली	–	वास्तविक	नकली (✓)

(ग) क्या आप जानते हैं?

उत्तर– पढ़िए और समझिए।

(घ) नीचे लिखे शब्द स्त्रीलिंग हैं अथवा पुल्लिंग–

उत्तर–

भाषा	**स्त्रीलिंग**	सीढ़ी	**स्त्रीलिंग**
लेखक	**पुल्लिंग**	वाणी	**स्त्रीलिंग**

काया	**स्त्रीलिंग**	पोशाक	**स्त्रीलिंग**
लड़का	**पुल्लिंग**	वस्तु	**स्त्रीलिंग**

(ङ) उचित मिलान करो–

उत्तर–

मनुष्य	मानव, इनसान, मनुज
मित्र	दोस्त, सखा, मीत
घर	गृह, भवन, आलय
वन	जंगल, अरण्य, कानन

(च) इनके विशेषण बनाओ–

उत्तर–

समाज	**सामाजिक**	मिठास	**मीठा**
दिन	**दैनिक**	कटुता	**कटु**
मृत्यु	**मृत**	दूध	**दूधिया**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. 'मधुर वचन मित्रता को तथा कटु वचन शत्रुता को बढ़ावा देते हैं।' इस विषय पर अपने विचार प्रकट करो।

उत्तर– शब्दों का जादू बड़ा जबर्दस्त होता है। मधुर वचन सामने वाले के मन में विश्वास उत्पन्न कर देते हैं। जिससे सामने वाला व्यक्ति सहज हो जाता है। वचनों का जीवन में बहुत महत्त्व है। मधुर भाषण अच्छे व्यक्तित्व का परिचायक होता है लेकिन यदि मधुर वाणी के साथ कर्म भी अच्छे हों, तो व्यक्ति वंदय बन जाता है। इसके विपरीत कटु वचन व्यक्ति को रुष्ट कर देते हैं। जहाँ एक मधुर शब्द दो रूहों को मिला देता है, वहीं एक कटु शब्द दो मित्रों के मन में वैमनस्य का जहर घोल देता है। जिस प्रकार मधुर वचन बिगड़े हुए कार्यों को बना देते हैं, उसी प्रकार एक कटु वचन सारे किए धरे पर पानी फेर सकता है। मधुर वचन और सुकर्म ही व्यक्ति को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाते हैं, अतः हमें वाणी की मधुरता का महत्त्व जानते हुए मीठा बोलने का प्रयास करना चाहिए।

2. **बाणभट्ट के बारे में जानकारी एकत्र करो तथा उसे लेख के रूप में लिखो।**

उत्तर– बाणभट्ट सातवीं शताब्दी के संस्कृत गद्य लेखक और कवि थे। बाण संस्कृत के कुछ गिने-चुने लेखकों में से एक थें, जिनके जीवन एवं काल के विषय में निश्चित रूप से ज्ञात है। कादम्बरी की भूमिका तथा हर्षचरितम् के प्रथम दो उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश के संबंध में विस्तारपूर्वक बताया है। सोन नदी के तट पर स्थित प्रीतिकूट नामक ग्राम में वात्स्यायनगोत्रीय विद्ववत् ब्राह्मण

कुल में बाण ने जन्म लिया। बाण के पिता का नाम चित्रभानु था। उनके शैशवकाल में ही उनकी माता की मृत्यु हो गई थी। चौदह वर्ष की अवस्था में उनके पिता भी चल बसे। बाण कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन के राजकवि थे। कादम्बरी और हर्षचरितम् के अतिरिक्त मार्कण्डेय पुराण के देवी महात्म्य पर आधारित दुर्गा का स्रोत चंडीशतक भी इनकी रचना है। पार्वती परिणय भी बाण द्वारा रचित माना जाता है। बाण की कृतियों में भावों की समृद्धता एवं अभिव्यक्ति की प्रचुरता होने से वे सहृदयों के हृदयों पर व्यापक प्रभाव डालती हैं।

3. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

9 भक्ति के पद (पद)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** तुलसीदास जी झूठ को सत्य समझने के भ्रम को दूर करने की बात कर रहे हैं।

2. भोर होते ही मधुबन में गाय चराने कृष्ण जी जाते हैं।

3. कबीर के अनुसार ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में निवास करते हैं।

4. गुरुनानक जी ईश्वर को इधर-उधर खोजने से इसलिए मना करते हैं, क्योंकि उनके अनुसार ईश्वर तो प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में बसता है।

5. साँप का पिटारा मीरा के पास जाकर सालिगराम में बदल गया।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** तुलसीदास रघुपति की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं, कि जब तक रघुपति की कृपा-दृष्टि नहीं होगी, तब तक इस संसार के आवागमन से

मुक्ति नहीं मिलेगी और रघुपति का भजन किए बिना दुखों और कठिनाइयों से मुक्ति नहीं मिलेगी।

2. कृष्ण गवाल-बालों की शिकायत करते हुए कहते हैं कि मेरा हाथ छींके तक नहीं पहुँच सकता था क्योंकि, मैं तो बहुत छोटा हूँ और छींका ऊँचाई पर टँगा हुआ है। ग्वाल-बालों ने जबरदस्ती मेरे मुख पर माखन लगा दिया है क्योंकि, उन्होंने मुझसे लड़ाई कर रखी है।
3. हमें ईश्वर को अपने अंदर ही तलाश करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में ईश्वर निवास करता है।
4. राणा द्वारा मीरा के लिए भेजा गया जहर का प्यारा अमृत में बदल जाता है।
5. मीरा श्रीकृष्ण के गुण गाने में मस्त रहती है क्योंकि वह हमेशा श्रीकृष्ण की भक्ति तथा प्रेम में लीन रहती हैं।
6. ईश्वर को जानने के लिए अपने आपको पहचानना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि ईश्वर स्वयं हमारे अंदर ही निवास करते हैं।

(ग) नीचे दी गई पंक्तियों की व्याख्या करो–

उत्तर– व्याख्या–

1. तुलसीदास जी कहते हैं, अनेक प्रकार की बाधाओं तथा अनेक प्रकार के रोग हो जाने पर ऐसा लगता है; जैसे मृत्यु निकट आ गई हो, वैद्य अनेक प्रकार से चिकित्सा करता है परंतु, जब तक व्यक्ति नहीं जागता। (भगवान में ध्यान नहीं लगाता) तब तक दुख दूर नहीं होता।
2. यशोदा माँ को समझाते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं, कि हे माँ! मैं तो चारपहर तक वन में भटकता रहा, साँझ होने पर ही घर आया हूँ। और फिर मैं तो बालक हूँ, मेरी बाँहें भी छोटी हैं, मैं छींके तक कैसे पहुँच सकता हूँ?

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–	साधु	**शैतान**	गुण	**अवगुण**
	भारी	**हल्का**	जहर	**अमृत**
	सत्य	**असत्य**	उपस्थिति	**अनुपस्थिति**

(ख) इनके दो-दो अर्थ लिखो–

उत्तर–	कमल	**पानी में होने वाला सुंदर फूल का एक पौधा**	**ब्रह्मा**
	पक्षी	**खग**	**विहग**

रघुपति	**श्रीराम**	**रघुकुल में श्रेष्ठ**
पीर	**दुख**	**मुस्लिमों के धर्मगुरु**

(ग) नीचे दिए गए शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखो–

उत्तर–

बास	**निवास**	**गंध**
गिरा	**सरस्वती**	**गिरा (क्रिया)**
मन	**हृदय**	**वजन करने वाला बाट**
सूल	**भाला**	**माला के ऊपर का फुलरा**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

10 पूस की रात (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर–
1. हल्कू के घर रुपये लेने सहना आया था।
2. मुन्नी रुपये देने से इसलिए मना कर रही थी क्योंकि उनके पास तीन ही रुपये थे और उन्हें कंबल लेना था।
3. पूस की अँधेरी रात में हल्कू को अपने खेत पर ईख की रखवाली के लिए जाना पड़ता था।
4. हल्कू ने जबरा की पीठ थपथपाते हुए कहा, कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे।

5. हल्कू ने अपनी अकर्मण्यता को छुपाने के लिए मुन्नी के सामने पेट-दर्द का बहाना बनाया।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. सहना एक कठोर मिजाज का व्यक्ति था। हल्कू उससे इसलिए डरता था क्योंकि सहना उसको घुड़कियाँ तथा गालियाँ देता था।

2. मुन्नी मजदूरी करके गुजारा करने को खेती करने से अच्छा इसलिए मानती थी क्योंकि जो भी उपज होती थी, वह कर्ज चुकाने में चली जाती थी।

3. हल्कू जबरा को समझाते हुए कहता है कि ''आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।''

4. पता होने पर भी हल्कू ने अपने खेत को नील गायों से बचाने का प्रयास इसलिए नहीं किया, क्योंकि इस जाड़े-पाले की रात में अपनी जगह से हिलना तथा खेत में जानवरों के पीछे दौड़ना उसे असह्य लग रहा था।

5. पूस की उस अँधेरी और ठंडी रात में हल्कू अपने खेत में अपने कुत्ते के साथ खेत की रखवाली कर रहा था। रात काटने के लिए हल्कू बार-बार हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। हल्कू ने जबरा को अपनी गोद में लिटा लिया था। जब ठंड असहनीय हो गई तो उसने वहाँ घास-फूस इकट्ठी करके उनमें आग लगा दी और दोनों आग तापने लगे। इस तरह उन दोनों ने वह रात बिताई।

6. लेखक इस कहानी के माध्यम से समाज को किसानों की दयनीय स्थिति से परिचित कराना चाहता है। साथ ही इससे हमें यह भी संदेश मिलता है कि हमें अकर्मण्यता को त्यागकर कर्म करना चाहिए।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. हल्कू अनिश्चय की स्थिति में था।

2. हल्कू को सहना की गालियों और घुड़कियों से डर लग रहा था।

3. पूस की रात में सर्दी से बचने के लिए कंबल की आवश्यकता थी।

4. **अर्थ–**

दशा = **हालत**, हार = **पराजय**, पूस = **विक्रम संवत के अनुसार हिंदू पंचाग का दसवाँ महीना**, खुशामद = **मिन्नत**, उपाय = **युक्ति**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. मुन्नी ने, हल्कू से, क्योंकि वे रुपये कंबल खरीदने के लिए रखे हुए थे।

2. हल्कू ने, मुन्नी से, क्योंकि उसे सहना के स्वभाव से डर लगता था।

3. हल्कू ने, जबरा से, क्योंकि जबरा ठंड से कूँ-कूँ कर रहा था।
4. मुन्नी ने, हल्कू से, क्योंकि नीलगाएँ सारा खेत चर गई थीं।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखो–

उत्तर–

स्त्री	**महिला**	**नारी**
कुत्ता	**श्वान**	**कुक्कुर**
रात	**रात्रि**	**निशा**
मित्र	**मीत**	**सखा**

(ख) इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखो–

उत्तर–

पास	**निकट**	**उत्तीर्ण**
मन	**हृदय**	**वजन करने वाला बाट**
उत्तर	**एक दिशा**	**जवाब**

(ग) अब, दिए गए रिक्त स्थानों में उचित समुच्चयबोधक अव्यय भरो–

उत्तर– 1. हल्कू **और** जबरा दोनों खेत की रखवाली के लिए गए।
2. उसने बहुत प्रयत्न किया, **किंतु** अपनी जगह से उठ न सका।
3. जबरा केवल कुत्ता ही नहीं, **बल्कि** हल्कू का मित्र भी था।
4. आप आ जाना **वरना** मुझे आना पड़ेगा।

(घ) उचित विशेषण शब्द चुनकर विशेष्यों के आगे लिखो–

उत्तर–

निर्दयी	सहना	**ऊनी**	कंबल
गरीब	किसान	**अँधेरी**	रात
वफादार	कुत्ता	**बड़ा**	खेत
लंबी	पूँछ	**गर्म**	अलाव

(ङ) विपरीतार्थक शब्द लिखो–

उत्तर–

अँधेरा	**उजाला**	दीर्घ	**लघु**
दीनता	**कठोरता**	मैत्री	**शत्रुता**
ठंडा	**गरम**	निर्दय	**सदय**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. हल्कू का चरित्र-चित्रण लिखो।

उत्तर– हल्कू एक शरीफ तथा ईमानदार गरीब किसान है। वह मेहनती तो है, लेकिन भीरू स्वभाव का भी है। सहना की घुड़कियों से बचने के लिए वह अपनी पत्नी मुन्नी की खुशामद करता है। वह पशु प्रेमी भी है। अपने कुत्ते जबरा को हमेशा अपने साथ ही रखता है। जब खेत में जाने पर जबरा को ठंड लगती है तो वह एक पिता की तरह उसको अपनी गोद में सुला लेता है। इतनी अच्छाई होने के बाद उसके चरित्र में कुछ खामियाँ भी हैं। वह थोड़ा आलसी भी है। जब वह सर्दी की रात में अपने खेत की रखवाली के लिए जाता है तो एक जगह बैठ जाता है तथा यह आहट होने पर भी कि जानवर उसके खेत को तहस-नहस कर रहे हैं, अपनी जगह से उठ नहीं पाता फलस्वरूप उसका सारा खेत नष्ट हो जाता है। अपने बचाव के लिए वह पत्नी द्वारा, खेत के बारे में पूछने पर झूठ बोलकर स्वयं को बचा लेता है।

2. **छात्र स्वयं करें।**

3. **मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित किसी अन्य कहानी को पढ़ो तथा उसकी समीक्षा अपने शब्दों में लिखो।**

उत्तर– मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'दो बैलो की कथा' उनकी श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। कहानी में झूरी के दो बैलों हीरा और मोती के बारे में बताया गया है। दोनों बड़े प्रेम से एक साथ रहते हैं तथा एक-दूसरे का सुख-दुख बाँटते हैं। झूरी उनको बहुत प्यार करता है। लेकिन अपने साले द्वारा माँगे जाने पर बैलों को कुछ दिनों के लिए उसे दे देता है। लेकिन वहाँ उनका मन नहीं लगता और वे वहाँ से रस्सा तोड़कर भाग आते हैं तथा मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ उठाते हुए झूरी के पास आकर ही दम लेते हैं। कहानी में मूक पशुओं के मनोभावों का बहुत ही हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया है। कई स्थानों पर तो उनकी दशा मन को छू लेती है। कहानी में संदेश दिया गया है कि मूक पशु भी प्रेम के भूखे होते हैं, उन्हें भी प्यार तथा देख-भाल की आवश्यकता होती है। सभी दृष्टियों से कहानी बहुत अच्छी बन पड़ी है। इसे प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक माना जाता है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

11 इतने ऊँचे उठो (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** कवि दुनिया को स्वर्ग के रूप में देखना चाहता है।

2. मलय पवन से आशय है–मलय पर्वत पर बहने वाली सुगंधित हवाएँ।

3. कवि युग की नई मूर्ति रचना करने की बात कहता है।

4. हम धरती पर समानता लाकर धरती को स्वर्ग का रूप दे सकते हैं।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** कवि संसार में समानता के भावों से भरी हुई बारिश की कामना करता है।

2. दूसरे पद्यांश के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि हमें अपनी सोच में परिवर्तन लाकर अपना वर्तमान सँवारना चाहिए और कृत्रिमता को त्यागकर अपना स्वाभाविक रूप अपनाना चाहिए।

3. कवि अतीत से उन अनुभवों को लेने की बात करता है जो हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं तथा जिनको आधार बनाकर हम जीवन में लाभ उठा सकते हैं।

4. इस पंक्ति का भाव यह है कि हमें अपना स्वभाव इतना सुंदर तथा अच्छा बना लेना चाहिए कि सब हमारी तरफ आकर्षित हों।

5. कवि अंधविश्वास तथा प्राचीन परंपराओं के बंधनों को तोड़ने की बात करता है क्योंकि ऐसे विचार हमारे जीवन को आगे नहीं बढ़ने देते।

(ग) दिए गए पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करो–

उत्तर– **प्रसंग**–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक की **'इतने ऊँचे उठो'** नामक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता **द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी** हैं। इन पंक्तियों में कवि ने नए कीर्तिमान बनाने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या–कवि कहता है कि तुम पुरानी बातों को छोड़कर वर्तमान में जीना शुरू करो। नए परिवेश, नए विचार तथा नवीन धारणाओं को अपनाओं तथा स्वयं को कृत्रिमता से निकालकर सरलता के साथ जीना शुरू करो। तथा स्वयं का व्यक्तित्व ऐसा बनाओ कि तुम्हें सब पसंद करें।

(क) उचित मिलान करो–

उत्तर–
गगन → अंबर, आकाश, आसमान
धरा → पृथ्वी, धरती, वसुंधरा
पवन → हवा, वायु, समीर
सूरज → सूर्य, रवि, भानु
चाँद → चंद्रमा, शशांक, चंद्र

(ख) इनके दो-दो अर्थ लिखो–

उत्तर–

भाव	**मूल्य**	**विचार**
कर	**करना**	**हाथ**
जीवन	**प्राण**	**आयु**
जग	**पानी रखने वाला पात्र**	**संसार**

(ग) विपरीतार्थक शब्द पर (✓) का चिह्न लगाओ–

उत्तर–

नई	–	नूतन	पुरानी (✓)
राग	–	प्रेम	द्वेष (✓)
जीवन	–	प्राण	मरण (✓)
स्वर्ग	–	नरक (✓)	जन्नत
अतीत	–	भूतकाल	वर्तमान (✓)
सुंदर	–	कुरूप (✓)	आकर्षक

(घ) दिए गए शब्दों से वाक्य बनाओ–

उत्तर–
वृष्टि – समानता की भाव **वृष्टि** से इस धरा को सिंचित करो।
तूलिका – नई **तूलिका** से इन चित्रों में रंग भरो।
नूतन – अपनी भाषा को **नूतन** अक्षर दो।
शाश्वत – परिवर्तन प्रकृति का **शाश्वत** नियम है।
सलोना – मुरली मनोहर का यह रूप बड़ा ही **सलोना** है।

संप्रेषण

दिए गए पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर–
1. सरिता का जल शीतल और निर्मल है।
2. सरिता का उद्गार ऊँचे पहाड़ों की पिघलती हुई बर्फ से होता है।
3. सरिता के जल की तुलना दूध से की गई है।
4. सरिता का जल नीचे बहते हुए कलकल-छलछल की ध्वनि उत्पन्न करता है।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) इस कविता को गद्य के रूप में लिखो।

उत्तर– गगन के समान ऊँचे उठो। इस सारी दुनिया को एक ही दृष्टि से देखो तथा इस धरा को समता के भावों की बारिश से सिंचित करो। जाति भेद, धर्म वेश, तथा काले-गोरे की रंग-द्वेष रूपी अग्नि से जलते इस संसार में मलय पवन के समान शीतल बनकर बहो। अपने वर्तमान का रूप नए हाथ से सँवारो। चित्रों के रंग नई तूलिका से उभारो। नए राग को नूतन स्वर दो, भाषा को नूतन अक्षर दो, युग की नई मूर्ति की मौलिक रचना करो। अतीत से उतना ही ग्रहण करो जितना आवश्यक हो, जीर्ण-शीर्ण से मोह मत करो क्योंकि यह मृत्यु का द्योतक है। जीवन की निरंतरता को रोकने वाले सारे बंधन तोड़ दो और जीवन के सत्य तथा शाश्वत प्रवाह में इतने गतिमान बन जाओ जितना स्वयं परिवर्तन है। हम इस धरती को स्वर्ग बनाना चाह रहे हैं और अगर कहीं पर स्वर्ग है तो उसे धरती पर लाना चाह रहे हैं। सूरज, चाँद, चाँदनी तथा तारे हर पल हमारे साथ हैं। कुरूप को सलोना रूप देकर आकर्षण के समान सुंदर बन जाओ।

(ख) द्वारिका प्रसाद 'माहेश्वरी' द्वारा रचित किसी अन्य कविता को पढ़ो और लिखो।

उत्तर– उठो लाल अब आँखें खोलो,
पानी लाई हूँ मुँह धो लो।
बीती रात कमल-दल फूले,
उनके ऊपर भँवरें डोले।
चिड़िया चहक उठी पेड़ों पर,
बहने लगी हवा अति सुंदर।
नभ में न्यारी लाली छाई,
धरती ने प्यारी छवि पाई।
भोर हुआ सूरज उग आया,
जल में पड़ी सुनहरी छाया।
ऐसा सुंदर समय न खोओ,
मेरे प्यारे अब मत सोओ।

रचनात्मक और नवीनता **उत्तर–** छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य **उत्तर–** छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम **उत्तर–** छात्र स्वयं करें।

12 कड़वी मिठाई (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** अतजल आलसी बालक था।

2. अतजल इसलिए मरना चाहता था, क्योंकि उसे पता था कि मरने के बाद सब स्वर्ग में जाते हैं और स्वर्ग में कोई काम नहीं करना पड़ता।

3. अतजल के पिता डॉ० योत्स के पास इसलिए गए क्योंकि अतजल ने मरने की जिद ठान ली थी।

4. अतजल स्वर्ग में उदास इसलिए हो गया था क्योंकि वहाँ पर उसे परियों और देवदूतों के अलावा कोई नहीं मिला था।

5. अंत में अतजल ने स्वर्ग के बारे में कहा कि, ''माँ, स्वर्ग अच्छी जगह नहीं है।''

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** अतजल चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गया। जो भी उसे उठाने आता, उससे कह देता, ''मैं तो मर गया हूँ।'' और उसने खाना-पीना छोड़ दिया। माँ बहुत दुखी हो गईं। उसे बहुत समझाया, पर वह बोला, ''माँ, तुम मुझसे कैसे बात कर रही हो? मैं तो मर चुका हूँ।''

2. अतजल की बेवकूफी भरी जिद के कारण उसके माता-पिता की चिंता का ठिकाना न रहा। वे सोचने लगे कि अपनी इकलौती संतान को कैसे बचाएँ, क्योंकि अपनी बेतुकी हठ के कारण वह मौत के दरवाजे पर जा पहुँचा था।

3. डॉ० योत्स ने अतजल को राह पर लाने के लिए उसके घर में झूठ-मूठ के स्वर्ग को माहौल बनाया तथा उसको उस स्वर्गनुमा कमरे में लिटा दिया गया ताकि उसे लगे कि वह मर गया है और इस समय स्वर्ग में है।

4. स्वर्ग में अतजल को केवल मीठा खाने को मिलता था तथा वहाँ पर उससे कोई बात भी नहीं करता था। हर समय मीठी चीजें खाने से वह परेशान हो गया तथा अकेलापन उसे डराने लगा। फलस्वरूप उसका मन वहाँ से जल्दी ही ऊब गया।

5. स्वर्ग में जब अतजल ने देवदूत से धरती के लोगों से मिलने की इच्छा प्रकट की तो देवदूत ने उससे कहा, ''यह नहीं हो सकता। यहाँ सबका अपना-अपना स्वर्ग है। जो जहाँ हैं, वहीं रहता है। वह कहीं आ-जा नहीं सकता है।''

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. अतजल स्वर्ग इसलिए जाना चाहता था क्योंकि वह आलसी था और उसने सुन रखा था कि स्वर्ग में काम नहीं करना पड़ता।

2. अतजल ने स्वर्ग में देवदूतों और परियों को देखा।

3. अतजल चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गया, उसने खाना-पीना छोड़ दिया। अगर उसे कोई उठाने आता तो वह कह देता कि मैं तो मर चुका हूँ।

4. समानार्थी शब्द–

आँख = नेत्र, हैरानी = **आश्चर्य**, खुश = **प्रसन्न**, दोस्त = **मित्र**।

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

उत्तर– 1. कादिश का इकलौता बेटा था **अतजल**।

2. आखिर अतजल के पिता कादिश **डॉ० योत्स** के पास गए।

3. कई नौकर परियों के पंख लगाकर **देवदूत** बन गए।

4. माँ, **स्वर्ग** अच्छी जगह नहीं है।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) समानार्थी शब्द पर सही (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर– अमीर	–	गरीब	धनवान (✓)
बेवकूफी	–	मूर्खता (✓)	समझदारी
पानी	–	अंबा	अंबु (✓)
माँ	–	अत्मजा	जननी (✓)

(ख) दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करो–

उत्तर– 1. "माँ, तुम मुझसे कैसे बात कर रही हो?"

2. उसने कहा, "अतजल, स्वर्ग में तुम्हारा स्वागत है।"

3. "अरे! अतजल तुम आ गए?"

(ग) नीचे दिए गए द्‌वित्व एवं संयुक्त व्यंजनों से दो-दो शब्द बनाओ–

उत्तर– क्क	–	**पक्का**	**चक्कर**
च्च	–	**सच्चा**	**कच्चा**
स्व	–	**स्वजन**	**स्वीकार**
त्स	–	**वत्स**	**तत्सम**

(घ) अब शब्द बनाओ–

उत्तर– सम्	+	बंध	**संबंध**	सम्	+	भाव	**संभाव**
सम्	+	हार	**संहार**	सम्	+	हार	**संहार**
सम्	+	गम	**संगम**	सम्	+	सार	**संसार**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. 'धरती से बड़ा स्वर्ग कहीं नहीं है।' इस विषय पर एक सुंदर अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– धरती से बड़ा स्वर्ग कहीं नहीं है। इस धरती पर प्रकृति ने अपना ऐसा अमूल्य खजाना बिखेर रखा है जिसकी तुलना कहीं भी नहीं है। ऊँचे-ऊँचे पहाड़, कल-कल करती बहती नदियाँ, अनेक घने वन-उपवन आदि इस धरती की वह अनमोल निधि है जो मानव को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हमारी इस प्यारी धरा पर प्रकृति ने अपनी बहुमूल्य संपदा लुटा रखी है जो हमें निशुल्क उपहार में मिली है। अतः हमारा भी कर्तव्य बन जाता है कि हम अपनी भूमि पर बिखरे हुए इस अप्रीतम सौंदर्य का आनंद लेते हुए इसको सुरक्षित तथा दीर्घगामी रखने का प्रयास करें।

2. **आलसी व्यक्ति कभी स्वस्थ व प्रसन्न नहीं रह सकता**

आलस मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है यह न केवल मानव की उन्नति में वाधक होता है, अपितु उसके स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होता है। आलसी व्यक्ति अक्सर अपने आवश्यक कामों को टालते रहते हैं और परिश्रम से जी चुराते हैं इस कारण वे योग्य होने पर भी सफल नहीं हो पाते। आलसी व्यक्ति दिनभर सिर्फ बैठे रहते हैं, इस कारण उनका स्वास्थ्य भी गड़बड़ा जाता है। ऐसे लोग व्यायाम करने में भी आलस करते हैं।

3. **इस कहानी का शीर्षक 'कड़वी मिठाई' क्यों रखा गया है? इसकी उपयुक्तता या अनुपयुक्तता को सिद्ध करते हुए अपने विचार प्रकट करो।**

उत्तर– इस कहानी का शीर्षक 'कड़वी मिठाई' इसलिए रखा गया है, क्योंकि कहानी के मुख पात्र अतजल को आराम करना पसंद था। उसको वह आराम रूपी मिठाई मिली तो लेकिन उसका स्वाद कड़वा लगा क्योंकि वह उस आराम रूपी मिठाई से बुरी तरह ऊब गया था। यहाँ पर यह संदेश भी दिया गया है कि अधिकता हर चीज की बुरी होती है और मनचाही वस्तु की अत्यधिक मात्रा सुख प्रदान करने के स्थान पर बोझ बन जाती है।

4. **कहानी में आए एक संवाद को अपनी भाषा में लिखो–**

उत्तर– जब अतजल ने देवदूत से कहा, कि वह धरती से आए हुए बच्चों से मिलना चाहता है तो देवदूत ने कहा कि यहाँ पर ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। यहाँ सब अपने-अपने स्थान पर रहते हैं। यहाँ कोई किसी से मिल नहीं सकता। और न ही कहीं आ-जा सकता है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

13 शहीदों की मज़ारों पर (एकांकी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर–
1. रामप्रसाद बिस्मिल गोरखपुर जेल में बंद थे।
2. रामप्रसाद बिस्मिल की काल-कोठरी बहुत ही छोटी, अँधेरी, गंदी तथा घुटन-भरी थी।
3. सुमेर रामप्रसाद बिस्मिल को उनकी मौत का फरमान पढ़कर सुनाते हैं।
4. रामप्रसाद को रोते देखकर उनकी माँ उनसे कहती हैं कि मुझे नहीं पता था कि मेरा बेटा मौत से डरता है। तुम्हें यदि रोकर मरना था तो व्यर्थ ही इस काम में आए।
5. फाँसी के तख्त पर जाने से पहले बिस्मिल ने नित्य-कर्म से निवृत्त होकर स्नान किया, पूजा करके चंदन की बिंदी लगाई और धोती-कुर्ता पहनकर पूर्णाहुति के लिए तैयार हो गए।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर–
1. रामप्रसाद बिस्मिल काल-कोठरी में बैठे हुए अपनी आत्मकथा लिख रहे थे।
2. रामप्रसाद बिस्मिल संस्कृत का निम्न श्लोक बोलते हैं–
   ब्रह्मव्याधाम कर्माणि संगं व्यक्त्वा करोति।
   यः लिप्यते न स पापेभ्योः पद्मपत्रमिवाम्भसः।।
3. रामप्रसाद बिस्मिल से जेल में मिलने उनके पिता, उनके भाई, उनकी माँ तथा उनकी पार्टी के आदमी शिव वर्मा आते हैं।
4. जेल में माँ से मिलने पर जब बिस्मिल रोने लगते हैं तो उनकी माँ उन्हें चुप कराते हुए कहती हैं कि यह मेरा सौभाग्य है कि तुम जैसे वीर देशभक्त ने

मेरी कोख से जन्म लिया है। तू धन्य है, तेरी कीर्ति भारत के इतिहास में युगों-युगों तक रहेगी। उन्हें रोते देखकर जब माँ कहती हैं कि मुझे नहीं पता था कि मेरा बेटा मौत से डरता है तो वे कहते हैं–कि माँ! ये आँसू मृत्यु के भय के नहीं वरन् तेरे मोह के थे। मैं मृत्यु से नहीं डरता और मेरा विश्वास है कि मैं उत्तम शरीर धारण कर पुनः किसी निकटवर्ती संबंधी या इष्ट मित्र के घर जन्म लूँगा, ताकि शीघ्र ही देश परतंत्रता से मुक्ति पा जाए।

5. रामप्रसाद बिस्मिल फाँसी के लिए जाने से पूर्व निम्न देशभक्ति गीत गाते हैं–
मालिक तेरी रजा रहे और तू-ही-तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र था तेरी ही जुस्तजू रहे।।

(ग) दिए गए गद्यांश की व्याख्या करो–

उत्तर– **व्याख्या**–बिस्मिल कहना चाहते हैं कि देश के लिए कुर्बान होना उनके लिए बहुत गर्व की बात है और इसके लिए उन्हें किसी भी प्रकार का कोई पछतावा नहीं है। वे चाहते हैं कि उनकी फाँसी की सजा को जल्द से जल्द मुकम्मल किया जाए ताकि अंग्रेजी सरकार का यह कपटपूर्ण न्याय अपने अंतिम फैसले तक पहुँच सके। वे ये भी कहते हैं कि हालाँकि वे अपने प्रयास में सफल नहीं हुए तो इसका अर्थ यह नहीं हैं कि उनके बाद आने वाले क्रांतिकारी भी इस प्रयास में सफल नहीं होंगे। वो कहते हैं कि एक-न-एक दिन भारत आजाद होकर रहेगा।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– **1.** बिस्मिल के पिता ने, जेल अधिकारी से, क्योंकि वे अपने बेटे को देखने के लिए उत्सुक थे।

2. बिस्मिल ने, अपने भाई सुमेर से, क्योंकि उन्होंने अपनी जेब से एक छोटा-सा सरकारी कागज निकाला था।

3. बिस्मिल की माँ ने, बिस्मिल से, क्योंकि वह माँ को देखकर रोने लगे थे।

4. पहरेदार ने, बिस्मिल से, क्योंकि उसे बिस्मिल को फाँसी के लिए लेकर जाना था।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय लिखो–

उत्तर– लाश **शव** वतन **देश**

कातिल	**हत्यारा**	आबरू	**इज्जत**
इशारा	**संकेत**	जुदा	**बिछड़ना**
इम्तहां	**परीक्षा**	मुद्दत	**लंबा समय**

(ख) विलोम शब्द पर सही (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर–

निर्भीक	–	निडर	भयभीत (✓)
तरल	–	ठोस (✓)	द्रव
कीर्ति	–	यश	अपकीर्ति (✓)
मृत्यु	–	जन्म (✓)	मौत

(ग) नीचे दिए गए शब्दों से उपसर्ग अलग करके लिखो–

उत्तर–

शब्द	**उपसर्ग**		**मूल शब्द**
सशस्त्र	**स**	+	**शस्त्र**
आबाद	**आ**	+	**बाद**
विभोर	**वि**	+	**भोर**
परतंत्रता	**पर**	+	**तंत्रता**
विवश	**वि**	+	**वश**
विजय	**वि**	+	**जय**

(घ) नीचे लिखे शब्दों के दो-दो अर्थ लिखो–

उत्तर–

काल < **समय**, **मौत**

पत्र < **पत्ता**, **चिट्ठी**

कर < **करना (क्रिया)**, **हाथ**

पास < **निकट**, **उत्तीर्ण**

संप्रेषण

संवाद को आगे बढ़ाओ–

उत्तर–

छात्र – क्या तुम रामप्रसाद बिस्मिल के बारे में जानती हो?

छात्रा – हाँ, जानती हूँ। वे एक महान क्रांतिकारी नेता थे।

छात्र – उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दिन किस जेल में बिताए थे?

छात्रा – उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दिन गोरखपुर जेल में बिताए थे।

छात्र – उनको फाँसी लगने के बाद नेपथ्य में क्या स्वर गूँजता है?

छात्रा – उनको फाँसी लगने के उपरांत नेपथ्य में गूँजता है–"शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।"

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।
2. रामप्रसाद बिस्मिल के बारे में जानकारी एकत्र करो और उसे एक लेख के रूप में लिखो।

उत्तर– रामप्रसाद बिस्मिल (11 जून, 1897-19 दिसंबर 1927) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रांतिकारी विचारधारा के एक प्रमुख सेनानी थे। जिन्हें 30 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सरकार ने फाँसी दे दी थी। वे मैनपुरी षड्यंत्र व काकोरी कांड जैसी कई घटनाओं में शामिल थे तथा हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य भी थे। रामप्रसाद एक कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषा-भाषी, इतिहासकार व साहित्यकार भी थे। बिस्मिल उनका उर्दू तखल्लुस (उपनाम) था। जिसका हिंदी में अर्थ होता है–आत्मिक रूप से आहत। बिस्मिल के अतिरिक्त वे राम और अज्ञात के नाम से भी लेख व कविताएँ लिखते थे। शुक्रवार ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी (निर्जला एकादशी) विक्रमी संवत 1954 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में जन्मे रामप्रसाद को तीस वर्ष की आयु में सोमवार पौष कृष्ण एकादशी (सफला एकादशी) विक्रमी संवत 1984 को शहादत प्राप्त हुई।

3. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

14 प्रायश्चित्त (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** रामू की बहू को कबरी बिल्ली से घृणा थी।

2. रामू की बहू ने बिल्ली की हत्या करने का फैसला इसलिए लिया क्योंकि बिल्ली ने उसको परेशान कर दिया था।

3. मिसरानी ने कहा, "माँ जी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है।"

4. पंडित परमसुख ने बिल्ली की हत्या के पाप से मुक्ति का तरीका प्रायश्चित्त करना बताया।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. रामू की बहू कबरी बिल्ली से इसलिए परेशान थी क्योंकि वह रामू की बहू द्वारा रखे गए दूध मलाई आदि समान को खा जाती थी।

2. पंडित परमसुख चौबे छोटे-से मोटे-से आदमी थे। लंबाई चार फुट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच। चेहरा गोलमटोल, मूँछ बड़ी-बड़ी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुँची हुई।

कहा जाता है कि मथुरा में जब पंसेरी खुराक वाले पंडितों को ढूँढ़ा जाता था तो पंडित परमसुख जी को उस सूची में प्रथम स्थान दिया जाता था।

3. पंडित परमसुख ने पूजा के लिए सामग्री बताते हुए कहा–दान के लिए करीब दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मन-भर तिल, पाँच मन जौ और पाँच मन चना, चार पंसेरी घी और मन-भर नमक भी लगेगा। बस इतने से काम चल जाएगा।

4. इस कहानी के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि कि, प्राचीन रूढ़ियों एवं परंपराओं का हमारे आधुनिक जीवन में कोई महत्त्व नहीं है क्योंकि प्राचीन रूढ़ियों को अपनाने से बहुत-सी हानियाँ होती हैं।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. पूजा रामू की माँ करवाना चाहती थीं, क्योंकि रामू की बहू के हाथ से बिल्ली की हत्या हो गई थी।

2. पूजा करने वाले पंडित का नाम परमसुख चौबे था।

3. पंडित जी ने पूजा के सामान के अतिरिक्त एक सोने की बिल्ली की माँग की थी।

4. समानार्थी शब्द–

सामान = **वस्तु**, पंसेरी = **पाँच सेर**, करीब = **निकट**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. महरी ने, रामू की माँ से, क्योंकि बिल्ली बिना हिले-डुले पड़ी हुई थी।

2. रामू की माँ ने, महरी से, क्योंकि वह बिल्ली के मरने से घबरा गई थी।

3. पंडित परमसुख ने, रामू की माँ से, क्योंकि उनके अनुसार इस पाप का प्रायश्चित्त इसी प्रकार से हो सकता था।

4. महरी ने, रामू की माँ से, क्योंकि बिल्ली उठकर भाग गई थी।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) 'बंदी', 'आनी' और 'इति' प्रत्यय लगाकर तीन-तीन शब्द बनाओ–

उत्तर–

शराबबंदी	जेठानी	संगति
नोटबंदी	देवरानी	दुर्गति
नशाबंदी	नौकरानी	सद्गति

(ख) विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

घृणा	**प्रेम**	पवित्र	**अपवित्र**
जिंदा	**मृत**	मुश्किल	**आसान**
पंडित	**मूर्ख**	पाप	**पुण्य**

(ग) प्रत्येक के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

बालिका	**बाला**	**छोटी बच्ची**
दूध	**दुग्ध**	**पय**
पति	**नाथ**	**भर्ता**
आदमी	**मनुष्य**	**मानव**

(घ) द्वंद्व समास के कोई छह उदाहरण दो–

उत्तर–

समस्त पद	**विग्रह**
माता-पिता	माता और पिता
अमीर-गरीब	अमीर और गरीब
हानि-लाभ	हानि और लाभ
अपना-पराया	अपना और पराया
खरा-खोटा	खरा और खोटा
भला-बुरा	भला और बुरा

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) निम्नलिखित में से किसी विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– अंधविश्वास और रूढ़ियाँ भ्रम का कारण बनती हैं

अंधविश्वास और रूढ़ियाँ भ्रम का कारण बनती हैं क्योंकि अंधविश्वासी व्यक्ति पुरातनपंथी सोच वाला बन जाता है और इसी कारण वह अपनी हानि कर

बैठता है। वह किसी नई परंपरा को अपनाने से भी डरता है। ऐसे लोगों को कोई नया काम करते हुए यह डर लगता है कि कहीं ईश्वर उसके इस कार्य से नाराज न हो जाएँ और उसे कोई दंड न दे दें। वह यह सोचता है कि जो प्राचीन परंपराएँ तथा मान्यताएँ हैं, वे ईश्वर की बनाई हुई हैं और उनका पालन उसे अनिवार्य रूप में करना ही पड़ेगा अन्यथा उसे ईश्वर के कोप का सामना करना पड़ेगा। इसी कारण वह अपनी कोई उन्नति नहीं कर पाता। अतः हमें इन अंधविश्वासों और रूढ़ियों को न अपनाकर आधुनिक सोच को ही अपने जीवन का आधार बना लेना चाहिए।

(घ) संवाद लिखो–

उत्तर– ''रामू की माँ, यह तो खुशी की बात है। अगर तुम्हें यह अखरता है तो न करो–मैं चला।''

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

15 मुक्ति मार्ग (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** झींगुर को अपने लहलहाते खेतों पर घमंड था।

2. बुद्धू झींगुर से इसलिए नाराज था क्योंकि झींगुर ने उसकी भेड़ों को बहुत ही निर्दयता के साथ पीटा था।

3. बुद्धू ने अपने अपमान का बदला झींगुर के ऊख के खेत में आग लगाकर लिया।

4. झींगुर ने बुद्धू से मेलजोल इसलिए बढ़ाया क्योंकि वह बुद्धू को यह दिखाना चाहता था कि उसे बुद्धू पर बिल्कुल भी संदेह नहीं है।

5. हरिहर ने लक्ष्मी मैया के बारे में कहा, कि ''लक्ष्मी मैया जिसके घर में आती हैं, उसकी आँखों में सील आ जाता है।''

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. झींगुर अपनी ऊख की फसल देखकर मन में सोच रहा था कि तीन बीघे में ऊख है। इसके छह सौ रुपए तो खुशी-खुशी मिल ही जाएँगे। और जो कहीं भगवान ने कृपा कर दी तो बस कहना ही क्या।

2. ऊख के खेत में आग बुद्धू ने ही लगाई थी यह जानते हुए भी कोई बुद्धू को कुछ न कह सका क्योंकि किसी के पास कोई सबूत नहीं था।

3. झींगुर ने बुद्धू से अपना बदला लेने के लिए उसकी भेड़ों के झुंड में अपनी बछिया को बाँध दिया था और हरिहर ने उसको कुछ खिला दिया था फलस्वरूप बछिया मर गई और बुद्धू के सिर गौ-हत्या का पाप लग गया।

4. बुद्धू को बछिया की हत्या के आरोप में दो मास का भिक्षादंड, सात तीर्थस्थानों की यात्रा, पाँच सौ ब्राह्मणों को भोजन तथा पाँच गऊओं के दान का प्रायश्चित्त करना पड़ा।

5. इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें वैर-विरोध से बचना चाहिए तथा बुराई का बदला बुराई से नहीं देना चाहिए।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. आग ऊख के खेत में लगाई गई थी।

2. लोग आग के कारण हुए सर्वनाश के लिए झींगुर को जिम्मेदार इसलिए ठहरा रहे थे क्योंकि उससे झगड़ा हो जाने पर ही बुद्धू ने उसके खेत में आग लगाई थी जिसके कारण उनके खेत भी जल गए थे।

3. बुद्धू एक गडरिया था।

4. **विपरीतार्थक शब्द–**

मुश्किल = **आसान**, दिन = **रात**, गाँव = **शहर**, धरती = **आकाश**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. बुद्धू ने झींगुर से, क्योंकि घूमकर आने में उसे बहुत समय लगता।

2. झींगुर ने बुद्धू से, क्योंकि वह बुद्धू के मन में से हर प्रकार के संदेह को मिटा देना चाहता था।

3. हरिहर ने बुद्धू से, क्योंकि वह झींगुर से मिला हुआ था।

4. बुद्धू ने झींगुर से, क्योंकि पश्चात्ताप के कारण उसका मन शुद्ध हो गया था।

(क) दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक लिखो–

उत्तर–

रोगी	**नीरोगी**	छाया	**धूप**
खुशी	**दुख**	आदर	**निरादर**
दंड	**पुरस्कार**	फायदा	**नुकसान**
अंधकार	**प्रकाश**	न्याय	**अन्याय**

(ख) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

किसान	**कृषक**	**खेतिहर**
ऊख	**ईख**	**गन्ना**
अग्नि	**आग**	**ज्वाला**
दिन	**दिवस**	**दिवा**

(ग) दिए गए वाक्यों में से विशेषण और विशेष्य छाँटकर लिखो–

उत्तर–

1.	लाल	पगड़ी
2.	दो	बैल
3.	घना	कुहरा
4.	ताजा	भोजन

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

(क) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– 1. घमंड हमेशा नुकसान का कारण बनता है।

जब व्यक्ति अपने आप को सर्वेसर्वा समझने लगता है तो उसके अंदर अहंकार घर कर जाता है और वह अपने सामने सभी को तुच्छ समझने लगता है। उसकी इसी भावना को घमंड का नाम दिया गया है। घमंडी व्यक्ति से सब बचने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति को दूसरे के मान-सम्मान की कोई परवाह नहीं होती। उसे यह लगने लगता है कि सब कुछ उसी के बल पर हो रहा है और वह चाहता है कि सब उसकी महत्ता को समझें। लेकिन इंसान अपने कर्मों से पहचाना जाता है। इंसान के कर्म ही उसे समाज में स्थान दिलाते हैं। फिर चाहे वह अच्छे कर्म करे या बुरे। समाज में अपनी जगह बनाने के लिए हमें केवल अपने कर्म और व्यवहार अच्छा रखना चाहिए। पहचान तो स्वतः ही मिल जाती है। अतः घमंड से होने वाली

हानियों को ध्यान में रखते हुए हमें अपना व्यवहार तथा व्यक्तित्व अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

(ख) छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

16 संस्कृति क्या है? (निबंध)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. संस्कृति मनुष्य का आंतरिक गुण है और सभ्यता बाहरी।

2. आदिमानव का जीवन पिछड़ा हुआ था।

3. संस्कृति बहुत ही सूक्ष्म और महीन होती है क्योंकि वह हमारी प्रत्येक पसंद तथा आदत में छिपी रहती है।

4. आदमी के अंदर छिपे हुए छह विकार हैं–काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर।

5. संस्कृति आदान-प्रदान से बढ़ती है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. मनुष्य की भीतरी उन्नति में संस्कृति सहायक होती है। इसके द्वारा व्यक्ति दया, माया और परोपकार सीखता है तथा गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है।

2. मनुष्य की बाहरी तरक्की में उसका सभ्य बनने का प्रयास सहायक होता है। इस प्रयास ने ही उसे वनों से निकालकर गाँवों और फिर नगरों में बसाया। यह उसकी सभ्य बनने की उत्कृष्ट इच्छा ही थी जिसने उसे पशु से मानव बनाया और उसे इस योग्य बनाया कि आज उसका समस्त जीवों पर शासन है।

3. आदमी के अंदर जो छह विकार (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सर) होते हैं वे प्रकृति द्वारा दिए हुए हैं। ये विकार ही आदमी के पतन का कारण बनते हैं। यदि इन पर नियंत्रण न किया जाए और इनको बेरोक-टोक छोड़ दिया जाए तो आदमी इतना गिर जाएगा कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाएगा।

4. भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों का मिश्रण है। अपनी उदारता तथा सहिष्णुता के कारण भारतीय संस्कृति आज पूरे विश्व की संस्कृतियों का आइना बन गई है। भारतीय संस्कृति का नाम संसार में बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। अपनी अनेकानेक विशेषताओं के कारण भारतीय संस्कृति भारतीयों के लिए गर्व का विषय है।

5. चार अध्यायों में पहला अध्याय वह है जब आर्य इस देश में आए और द्रविड़ जाति से मिलकर उन्होंने उस संस्कृति की नींव डाली, जिसे हम हिंदू अथवा भारतीय संस्कृति कहते हैं। दूसरा अध्याय वह है, जबकि यह संस्कृति कुछ पुरानी हो गई और उसके खिलाफ महात्मा बुद्ध और महावीर ने विद्रोह किया, जिसके फलस्वरूप बहुत-सी रूढ़ियाँ दूर हुईं और यह संस्कृति एक बार फिर से नवीन हो गई। तीसरा अध्याय वह है, जब इस देश में मुसलमान आए और हिंदू-धर्म का इस्लाम से संबंध हुआ। और चौथा अध्याय वह है, जब भारत की मिट्टी पर हिंदुत्व और इस्लाम, दोनों का संबंध ईसाई धर्म और यूरोप के विज्ञान और बुद्धिवाद से हुआ।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. हथियार गढ़ना सभ्यता का काम है।

2. संस्कृति हथियारों के बारे में यह बताती है कि उस हथियार से किसी को मारना ठीक है या नहीं।

3. बमों और हथियारों का प्रयोग होने से दुनिया के विनाश का खतरा उत्पन्न हो गया है।

4. **पर्यायवाची शब्द–**

दुनिया = **जग, संसार**; काम = **कर्म, कार्य**; धन = **पैसा, रकम**।

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

उत्तर– 1. आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा त्यों-त्यों **वह सभ्य** होता गया।

2. अच्छे भोजन का सामान हम **सभ्यता** के जरिए पैदा करते हैं।

3. **संस्कृति** का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है।

4. एक देश की आदत दूसरे देश की **आदत** में समा जाती है।

(ङ) सही/गलत बताओ–

उत्तर– **1.** सही, **2.** गलत, **3.** गलत, **4.** सही, **5.** सही, **6.** सही

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर– योग्य	**योग्यता**	लोभी	**लोभ**
सभ्य	**सभ्यता**	ऊँचा	**ऊँचाई**
आदमी	**आदम**	उदार	**उदारता**

(ख) इनके अर्थ लिखो–

उत्तर– ओर	**तरफ**	उदार	**दयालु**
और	**दूसरा, अन्य**	उधार	**ऋण**
बात	**कथन**	समान	**बराबर**
वात	**वायु**	सामान	**वस्तु**

(ग) विलोम शब्द लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर– **1.** उन्नति – **अवनति**
सदाचारी व्यक्ति जीवन में सदैव **उन्नति** करते हैं।

2. गुण – **अवगुण**
हमें दूसरों के **गुण** देखने चाहिए न कि अवगुण।

3. आदमी – **औरत**
आदमी की पहचान उसके कर्मों से होती है।

4. सूक्ष्म – **विशाल**
इन दोनों वस्तुओं में बस **सूक्ष्म**-सा ही अंतर है।

5. विकार – **अविकार**
मानव का मन बहुत-से **विकारों** से ग्रस्त होता है।

(घ) दिए गए संयुक्ताक्षरों से बनने वाले दो-दो शब्द लिखो–

उत्तर– (भ्य)	–	सभ्य	**असभ्य**	**अभ्यास**
(स्न)	–	स्नान	**स्निग्ध**	**स्नायु तंत्र**
(न्त)	–	अन्त	**अनन्त**	**सन्त**
(स्य)	–	आलस्य	**हास्य**	**रहस्य**
(ल्य)	–	मूल्य	**शल्य**	**वात्सल्य**

(ङ) अब, पाठ में से ऐसे चार वाक्य छाँटकर लिखो।

उत्तर– 1. हथियार गढ़ना सभ्यता का काम है, लेकिन उस हथियार से किसी को मारना ठीक है या नहीं, यह बतलाना संस्कृति का काम है।

2. संस्कृति का काम आदमी के दोष को कम करना और उसके गुण को अधिक बनाना है।

3. ऐसे देशों में भारत का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है, क्योंकि, यहाँ के लोग संस्कृति के मामले में बड़े उदार रहे हैं।

4. यह भी ध्यान देने की बात है कि भारतीय संस्कृति का जब-जब किसी विदेशी संस्कृति से मिलन हुआ, तब-तब हमारी संस्कृति में एक नई ताजगी आ गई।

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम्

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखो–

उत्तर– (i) मनुष्य की संस्कृति ही उसकी पहचान

संस्कृति मनुष्य का वह गुण हैं, जिससे उसके भीतरी स्वभाव का पता चलता है। व्यक्ति का रहन-सहन, उसका तरीका, उसकी आदतें उसकी संस्कृति की पहचान होती हैं। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाट-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। संस्कृति वह गुण है, जो मनुष्य के अंदर छिपा होता है। वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन है, जो मनुष्य की प्रत्येक पसंद तथा आदत में छिपी रहती है। संस्कृति का काम व्यक्ति के दोष को कम करना तथा उसके गुणों को अधिक बनाना है। यदि व्यक्ति सुसंस्कृत तथा सभ्य नहीं है तो वह जानवर की श्रेणी में आ जाता है। उपरोक्त सभी बातों पर विचार करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को सुसंस्कृत बनने का प्रयास करना चाहिए।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम्

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

17 पक्षियों का संसार (रूपक)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. संसार में पक्षियों की लगभग 1400 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

2. प्राचीन काल में जब संचार के कोई साधन नहीं थे, तब कबूतरों से पोस्टमैन की तरह पत्र लाने, ले-जाने का काम लिया जाता था।

3. (i) शुतुरमुर्ग का शरीर बहुत भारी होता है। (ii) इसकी गर्दन पतली और लंबी होती है।

4. ऐमू नामक पक्षी ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है।

5. अंतः सज्जाकार के नाम से बॉवर और बया पक्षी विख्यात हैं।

6. मोर भारत और श्रीलंका का राष्ट्रीय पक्षी है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. (i) कबूतर बहुत बुद्धिमान होते हैं।
(ii) इनकी स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र होती है।
(iii) बुद्धिमान कबूतर को प्रशिक्षित करना कठिन नहीं होता।
(iv) प्राचीन समय में इनके द्वारा संदेश भेजे जाते थे।

2. शुतुरमुर्ग अफ्रीका में पाया जाता है। इसकी टाँगे दो-दो मीटर तक ऊँची होती हैं और यह तेजी से दौड़ सकता है। आवश्यकता पड़ने पर यह 72 कि०मी०/घंटा की अधिकतम गति से भाग सकता है। यह पक्षियों की सबसे बड़ी जीवित प्रजातियों में से है और यह किसी भी अन्य पक्षी प्रजाति की तुलना में सबसे बड़े अंडे देता है।

3. पनडुब्बी पक्षी पेंग्विन को कहते हैं।

4. बॉवर और बया पक्षी अपने घोंसले बहुत खूबसूरती से सजाते हैं। बॉवर अपने घोंसले को रंगीन फूलों और घास से सजाता है तथा सजाते समय मैचिंग का भी ख्याल रखता है। नर बॉवरों में अपने घोंसले को सुंदर बनाने की होड़ होती है, क्योंकि मादा घोंसले की खूबसूरती देखकर ही घोंसला चुनती है। बया को हम बुनकर पक्षी भी कह सकते हैं। यह अपना घोंसला तैयार करने के लिए तिनकों को अपनी तीखी चोंच से बहुत ही निपुणता से बुनती है। इसको कुशल गृहिणी की संज्ञा भी दी गई है।

5. ये पक्षी मुख्यतः ओल्ड वर्ल्ड एवं ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। इनकी लगभग 90 प्रजातियाँ हैं। ये भोजन में मछली खाना पसंद करते हैं। किंगफिशर आमतौर पर शर्मीले पक्षी हैं। इनकी चोंच लंबी और चाकू जैसी नुकीली होती है। इनकी जो प्रजातियाँ जमीन से शिकार करती हैं उनकी चोंच अपेक्षाकृत छोटी और चौड़ी होती है।

(ग) ये पक्षी कहाँ पाए जाते हैं, लिखो–

उत्तर– 1. **शुतुरमुर्ग** पहले मध्य पूर्व और अब अफ्रीका में पाए जाते हैं।
2. **पेंग्विन** यह अंटार्कटिका और दक्षिणी महासागर की बर्फीली धाराओं वाले द्वीप में पाए जाते हैं।
3. **ऐमू** यह ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है।
4. **मोर** का मूल स्थान दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया में है।
5. **कस्तूरा** ये मुख्य रूप से हिमालय के पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है।
6. **किंगफिशर** ये मुख्यतः ओल्ड वर्ल्ड एवं ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं।

(घ) रिक्त स्थान भरो–

उत्तर– 1. **कबूतर** वह संदेश बिल्कुल सही स्थान पर पहुँचा देता था।
2. शुतुरमुर्ग की तरह **पेंग्विन** भी पंख वाला होकर भी नहीं उड़ सकता।
3. यहाँ तक कि **ऐमू** सीमेंट तक खाकर आसानी से पचा लेता है।
4. **नीला मोर** भारत तथा श्रीलंका का राष्ट्रीय पक्षी है।
5. **कस्तूरा** चिड़िया मुख्य रूप से हिमालय के पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है।
6. बॉवर और बया पक्षी को **अंतः सज्जाकार** पक्षी कहा जाता है।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

पक्षी	–	**खग**	**विहग**	संसार	–	**जग**	**विश्व**
तोता	–	**शुक**	**सुग्गा**	मोर	–	**मयूर**	**केकी**
घटा	–	**मेघ**	**बादल**				

(ख) इन शब्दों के प्रत्यय अलग करके लिखो–

उत्तर–

निपुणता	–	**निपुण**	+	**ता**
दरजिन	–	**दरजी**	+	**इन**
दक्षिणी	–	**दक्षिण**	+	**ई**
संकुचित	–	**संकुचन**	+	**इत**

(ग) इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखो–

उत्तर–

घटा	**कम करना**	**बादल**
पानी	**जल**	**इज्जत**
भाग	**हिस्सा**	**गणित का एक चिह्न**
काल	**समय**	**मृत्यु**

(घ) निम्नलिखित क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रियाओं में बदलकर लिखो–

उत्तर–

भागना	**भगाना**	खाना	**खिलवाना**
लौटाना	**लौटाना**	देना	**दिलवाना**
लगना	**लगाना**	पढ़ना	**पढ़वाना**

अंतर-विषयक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

इन पक्षियों को पहचानकर इनके नाम लिखो–

उत्तर–

कठफोड़वा

किंगफिशर

मैना

तीतर

चिड़िया

बतख

बाज

गिद्ध

बगुला

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

हिन्दी–8

1 बाल-लीला (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** यशोदा पालने में कृष्ण को झुला रही हैं।

2. श्रीकृष्ण सोते समय कभी पलकें मूँद लेते हैं और कभी अपने होंठ फड़काने लगते हैं।

3. यशोदा इशारों से मौन होने के लिए कह रही हैं क्योंकि श्रीकृष्ण को नींद आ रही है।

4. श्रीकृष्ण के मुख पर दही लगा हुआ है।

5. श्रीकृष्ण के माथे पर चंदन का तिलक है।

6. जहाज का पक्षी वापस उड़कर जहाज पर आ जाता है।

(ख) लेखनी (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** यशोदा नींद को कहती हैं कि मेरे लाल को नींद आ रही है; तुम आकर उसको क्यों नहीं सुला देती।

2. श्रीकृष्ण बार-बार इसलिए अकुलाते हैं, क्योंकि वे सोना चाहते हैं लेकिन, सो नहीं पा रहे हैं।

3. श्रीकृष्ण के शरीर और मस्तक पर चंदन लगा हुआ है।

4. इस पद्यांश के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि ईश्वर हमारे अंदर ही है लेकिन हम उसे देख नहीं पाते।

5. श्रीकृष्ण का बाल रूप बहुत ही मनोहारी है। श्रीकृष्ण अपने सुंदर हाथों में माखन लिए हुए हैं। उनके मुख पर दही लगा हुआ है। घुटनों के बल चलने के कारण उनके मुख पर धूल लगी हुई है। उनके सुंदर गाल हैं, नेत्र चंचल हैं तथा माथे पर तिलक लगा हुआ है। उनके माथे पर लटकती हुई लटें ऐसी लग रही हैं मानो, भोरों के दल अत्यधिक मधुपान से मदमस्त हो गए हों। उनके गले में कठुला पड़ा हुआ है। सूरदास जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण को निहारने का एक पल का वह सुख सौ जन्मों के बराबर सुख देता है।

6. माता यशोदा कृष्ण को थपथपाकर तथा लोरियाँ गाकर सुला रही हैं। और

नींद से कह रही हैं कि मेरे लाल को आकर सुला दे। तू क्यों नहीं आती मेरा लाल तुझे बुला रहा है। कृष्ण सोना चाहते हैं लेकिन, अकुलाकर बार-बार उठ जाते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि कृष्ण को सुलाने का यह सुख अमर मुनियों को भी दुर्लभ है जो नंदबाबा की पत्नी को मिल रहा है।

(ग) निम्नलिखित पंक्तियों को भाव स्पष्ट कीजिए–

उत्तर– भावार्थ–

1. इसी बीच हरि (कृष्ण) अकुलाकर उठ गए और यशोदा जी मधुर स्वर में गाने लगीं।
2. बाल कृष्ण के सुंदर गाल हैं, चंचल नेत्र हैं तथा उनके माथे पर चंदन का तिलक लगा हुआ है। उनके माथे पर लटकती हुई बालों की लटें ऐसी लग रही हैं मानो भारों के समूह अव्यधिक मधुपान के कारण मदमस्त हो गए हों।
3. सूरदास जी कहते हैं कि मेरा मन इस संसार में कहाँ सुख पाएगा? जिस प्रकार जहाज पर रहने वाला पक्षी उड़ जाता है और फिर वापस जहाज पर ही आता है उसी प्रकार मेरा मन भी (भगवान के चरणों को छोड़कर) कहीं सुख नहीं पाता।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखो–

उत्तर–

कर	**हाथ**	सूर्य	**सूरज**
दधि	**दही**	पुष्प	**पुहुप**
चारु	**चारु**	दुग्ध	**दूध**

(ख) निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग करके लिखो–

उत्तर–

उत्कर्ष	**उत्**	**कर्ष**
अभिमान	**अभि**	**मान**
निश्छल	**निः**	**छल**
प्रसिद्ध	**प्र**	**सिद्ध**
निस्संतान	**निः**	**संतान**

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-विशेषण छाँटकर लिखो–

उत्तर– 1. **प्रातः काल।** 2. **इधर-उधर।** 3. **तेज।**
4. **कम।** 5. **ऊपर।**

(घ) नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर– पत्नी	**भार्या**	**अर्धांगिनी**	अभिमान	**दर्प**	**घमंड**
पंछी	**विहग**	**पखेरू**	पानी	**जल**	**नीर**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।

2. श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं तथा श्रीराम की बाल लीलाओं में अंतर स्पष्ट करो–

उत्तर– श्रीकृष्ण की बाल-लीला तथा श्रीराम की बाल लीलाओं में अंतर

श्रीकृष्ण और श्रीराम की बाल लीलाओं में पर्याप्त अंतर देखने को मिलता है। श्रीकृष्ण का बाल-स्वरूप बहुत नटखट था। वह माखन चुराकर खाते थे, गोपियों की मटकियाँ फोड़ दिया करते थे। वे वही बाल-सुलभ क्रीडाएँ करते थे, जो आमतौर पर बालक करते हैं। लेकिन इसके साथ ही बालपन में ही उन्होंने कई राक्षसों का वध भी किया था। उनकी बाल-क्रीडाओं में भी कुछ-न-कुछ संदेश छिपा हुआ था। श्रीराम को हम मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में जानते हैं। श्रीराम की बाल-लीलाएँ श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं के एकदम विपरीत थीं। श्रीराम बचपन से ही धीर गंभीर स्वभाव के थे तथा मर्यादाओं का पालन करने वाले थे। उनका बचपन अपने तीनों भाइयों के साथ खेलते हुआ बीता। हमें उनके बाल स्वरूप में उनकी आदर्शवादिता के ही दर्शन होते हैं। उनके बालपन का एक भी प्रसंग हमें ऐसा नहीं मिलता जिससे हम उनके व्यक्तित्व की तुलना श्रीकृष्ण से कर सके।

3. छात्र स्वयं करें।

4. दिए गए चित्र को देखकर आपको श्रीकृष्ण की कौन-सी लीला के दर्शन होते हैं, इससे संबंधित पद लिखो–

उत्तर– पद

मैया मैं नहीं माखन खायो।
ख्याल परैं ये सखा सबै मिली, मेरे मुख लपटायो।
देखि तुही सीकें पर भाजन, ऊँचे धरि लटकायो।
हौं जु कहत नान्हें कर अपने, मैं कैसे करि पायो।
मुख दधि पौछि, बुद्धि इक कीन्हीं, दोना पीवि दुरायो।
डारि साँटि मुसुकाई जसोदा स्यामहिं कंठ लगायो।
बाल-विनोद-मोद मन मोह्यो, भक्ति प्रताप दिखायो।
सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव विरंचि नंहि पायो।

2 हमारा घर (हास्य-व्यंग्य)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** लेखक मेहमानदारी के विषय में कहता है कि उसके घर में मेहमानदारी कुछ ज्यादा ही हो गई है।

2. लेखक मेहमानों के आने-जाने को आवागमन की प्रथा कहता है।

3. लेखक अपने घर के बड़े कमरे की विशेषता बताते हुए कहता है कि–बड़े कमरे में एक सोफा पड़ा रहता है और सोफे पर अकसर कोई कुत्ता सोता रहता है। घरवाले समझते हैं कि मेहमान का कुत्ता है और मेहमान समझते हैं कि घरवालों का है। कुत्ता इस स्थिति का पूरा-पूरा लाभ उठाता है।

4. लेखक अपनी माता जी का परिचय देते हुए कहता है कि–सारे घर में हमारी माता जी का कभी कोई कमरा नहीं रहा। दिन मुहल्ले में गुजरा और शाम हुई तो मंदिर चली गईं। कहीं राधेश्याम कथावाचक का ड्रामा या कोई धार्मिक सिनेमा हो रहा हो तो हो गया रातभर का इंतजाम। बाकी वक्त मिला तो उसमें धार्मिक चर्चा हुई।

5. लेखक बरामदे को कुरुक्षेत्र या नालंदा की भूमि का टुकड़ा कहकर संबोधित करता है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** लेखक अपने घर की विशेषताएँ बताते हुए कहता है कि हमें अपना घर बहुत पसंद है। ताजमहल के बाद शायद यह दूसरी इमारत है जिसके अगर आप बाहर हों तो अंदर जाने की तबियत करती है और अंदर हों तो बाहर आने की तबियत करती है।

2. लेखक मेहमानों तथा मेहमानदारी से इसलिए नाराज है क्योंकि उसके घर में हर समय मेहमान आते-जाते रहते हैं और इस महँगाई में मेहमानवाजी करना बहुत कठिन काम है।

3. अपने पिता के कमरे का वर्णन करते हुए लेखक कहता है कि उनके छोटे-से कमरे में पुराने अखबारों की रद्दी, पुराने हुक्के, कलमदान, छड़ियाँ, लकड़ी का सामान वगैरह इस तरह भरा है कि वह कमरा कम लगता है और कबाड़ी की दुकान ज्यादा।

4. लेखक के मित्र ने शायरी इसलिए छोड़ दी क्योंकि किसी संपादक ने उनके उपनाम 'हैरत' को 'गैरत' छाप दिया था।
5. अपने बच्चों के विषय में बताते हुए लेखक कहता है कि मेरे घर में दो बच्चे हैं–उनकी रग-रग में शरारत भरी है। मैं कहता हूँ कि ये ननिहाल का प्रभाव है, पर पत्नी का निश्चित मत है कि यह मेरे ही पूर्वजों का प्रताप है। बच्चों को इस सबसे कोई सरोकार नहीं। वे सारे दिन खुराफात में लगे रहते हैं।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. इस गद्यांश के रचयिता रवींद्रनाथ त्यागी हैं।

2. लेखक के अनुसार मँहगाई से मेहमानदारी की प्रथा को बढ़ावा मिला है।
3. लेखक के अनुसार दूसरे के घर खाने का यह फायदा है कि जो चीज व्यक्ति अपने घर नहीं खा पाता वह दूसरे के घर खाने को मिल जाती है।
4. **वाक्य–**

आवागमन	–	इस मार्ग पर हर समय गाड़ियों का **आवागमन** होता रहता है।
कीमत	–	आजकल अधिकतर खाद्य वस्तुओं की **कीमत** दोगुनी हो गई है।
मेहमानदारी	–	महँगाई के कारण **मेहमानदारी** कुछ ज्यादा ही बढ़ गई है।
उपाय	–	मेहमानों से बचने का मुझे कोई **उपाय** दिखाई नहीं देता।

(घ) अधूरे वाक्य पूरे करो–

उत्तर– 1. आवागमन की इस **प्रथा पर गल्ले की महँगाई, चीनी की कीमत या चावल के न मिलने से कोई फर्क नहीं पड़ता।**

2. घरवाले समझते हैं **कि मेहमान का कुत्ता है और मेहमान समझते हैं कि घरवालों का है।**
3. इन हजरत के साथ **बात यह है कि दुनिया का कोई ऐसा विषय नहीं, जिस पर ये अप-टू-डेट ज्ञान न रखते हों।**
4. बच्चों को इस सबसे **कोई सरोकार नहीं। वे सारे दिन खुराफात में लगे रहते हैं।**

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित के विपरीतार्थक शब्द लिखो–

उत्तर–

पसंद	**नापसंद**	दोस्त	**शत्रु**
बाहर	**भीतर**	स्वार्थी	**निःस्वार्थी**

	शौक	**शौक रहित**	ज्ञान	**अज्ञान**

(ख) 1. लिंग बदलो– **1. वचन बदलो–**

उत्तर–	पिता	**माता**	बरामदा	**बरामदे**
	बच्चा	**बच्ची**	कमरा	**कमरे**
	पति	**पत्नी**	मेहमान	**मेहमानों**
	भाई	**भाभी**	सोफा	**सोफे**

(ग) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–	घर	–	**गृह**	**निकेतन**	**भवन**
	बच्चा	–	**बालक**	**शिशु**	**बाल**
	मानव	–	**मनुष्य**	**नर**	**व्यक्ति**
	माँ	–	**माता**	**जननी**	**अंबा**
	मित्र	–	**सखा**	**दोस्त**	**सहचर**
	चतुर	–	**प्रवीण**	**निपुण**	**वक्रगामी**

(घ) निम्नलिखित विस्मयादिबोधक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो–

उत्तर– हाय! **मैं तो बेकार में ही मारा गया।**
ठीक! **मैं ऐसा ही करने का प्रयास करूँगा।**
वाह! **क्या सुंदर नजारा है।**
उफ! **बड़ी गरमी है आज तो!**
छिः! **ऐसी गिरी हुई हरकत की तुमने!**
ओहो! **आज तो बारिश जरूर होगी।**
शाबाश! **तुमने यह काम करके दिखा ही दिया।**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

3 कलिंग विजय (एकांकी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** नंदिनी सब वस्तुएँ सजाकर ठीक रखने में लीन है।

2. अशोक कलिंग की राजकुमारी के विषय में कहता है कि कलिंग की राजकुमारी अभी तक अशोक की नजर से परे हैं। सुना है वह तो कभी की बौद्ध भिक्षुणी हो गई।

3. आप तो ऐसे सुन रहे हैं जैसे आकाशवाणी हो। ये शब्द रेखा ने कहे।

4. गायिका अपने गीत को अशोक के जीवन का कठोर सत्य बताती है।

5. रेखा भुजबल के बारे में कहती है–जिसके पास भुजबल है, वह मर सकते हैं और मार भी सकते हैं।

6. गायिका अशोक को अपना भाई बनाती है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** तुम जानती हो, किससे बातें कर रही हो, इस प्रश्न के उत्तर में गायिका ने कहा, मैं जानती हूँ कि मैं पाटलिपुत्र के उस राजा से बातें कर रही हूँ जिसने कल ही एक लाख निर्दोष मनुष्यों का खून बहाया है और भारत का राजा बन बैठा है।

2. अशोक मौर्य वंश का तीसरा शासक था जो अपने पिता बिंदुसार की मृत्यु के बाद मगध के सिंहासन पर बैठा था। उसकी माता का नाम शुभद्रांगी था। इस वंश की स्थापना अशोक के दादा चंद्रगुप्त मौर्य ने तीसरी शताब्दी ईसा पू० में की थी। अशोक अपने पिता बिंदुसार का ज्येष्ठ पुत्र नहीं था। उसके पिता उसके बड़े भाई सुशीम को राजा बनाना चाहते थे परंतु अशोक के योग्य होने के कारण सांमतों और मंत्रियों ने उसका साथ दिया और सुशीम के स्थान पर अशोक को राजा बनाया गया।

3. उपेंद्र के अंतिम शब्द कलिंग युद्ध को लेकर थे। आज उन शब्दों के साथ अशोक को कलिंग युद्ध याद आ रही थी।

4. गायिका वास्तव में कलिंग की राजकुमारी पद्मा थी। जो इस उद्देश्य के साथ महल में आई थी कि अशोक को याद दिला सके कि कलिंग के युद्ध में उसके द्वारा किया गया नरसंहार कितना बड़ा पापपूर्ण कृत्य था।

5. गायिका अशोक को उसके द्वारा किए गए नरसंहार के प्रायश्चित्त हेतु विश्व सेवा के मार्ग पर अग्रसर करना चाहती थी।

6. अशोक को यह सुनकर हैरानी इसलिए हुई क्योंकि उसे लगता था कि वह चक्रवर्ती सम्राट है तो सब उससे प्यार करते होंगे, लेकिन ऐसा नहीं था।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नोंके उत्तर दो–

उत्तर– 1. उपर्युक्त कथन गायिका (पद्‌मा) द्वारा कहे गए।

2. भगवान बुद्ध की करुणामयी किरणों से प्रभात को आलोकित करने की बात कही गई है।

3. आर्यावर्त के हर नगर में शिला-लेख और स्तंभ दिखाई दे रहे थे।

4. **समानार्थक शब्द–**

प्रभात = **सुबह**; उज्ज्वल = **श्वेत**; संदेश = **खबर**; संसार = **दुनिया**; प्रतिमा = **मूर्ति**; सम्राट = **राजा**।

(घ) किसने, किससे कहा, लिखो–

उत्तर–

1.	नंदिनी ने,	गायिका से	2.	अशोक ने,	रेखा से
3.	रेखा ने,	नंदिनी से	4.	गायिका ने,	अशोक से
5.	रेखा ने,	गायिका से	6.	गायिका ने,	अशोक से

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) मूल शब्द के योग से अन्य शब्द बनाओ–

उत्तर–

तुल	–	**अतुल**	**अतुल्य**	**अतुलनीय**	**अतुलित**
गा	–	**गाना**	**गाया**	**गायन**	**गान**
भय	–	**भयाक्रान्त**	**भयातुर**	**भयावह**	**भयानक**
दोष	–	**दोषी**	**दोषपूर्ण**	**दोषारोपण**	**निर्दोष**
भव	–	**भवन**	**भवसागर**	**भवभूति**	**भविष्य**

(ख) कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के दो-दो उदाहरण लिखो–

उत्तर– कर्तृवाच्य (i) **हिरन भागता है।**
(ii) **राजन ने परीक्षा उत्तीर्ण की।**

कर्मवाच्य (i) **सुगंधा के द्वारा सूचना मिली।**
(ii) **सीता द्वारा खाना बनाया जाएगा।**

भाववाच्य (i) **उससे चला नहीं जाता।**
(ii) **गायक से गाना नहीं गाया गया।**

(ग) इनके दो-दो समानार्थी शब्द लिखो–

उत्तर– सम्राट	–	**राजा**	**भूपति**
भवन	–	**मकान**	**गृह**
युद्ध	–	**लड़ाई**	**रण**
फूल	–	**पुष्प**	**पुहुप**
मनुष्य	–	**नर**	**मानव**
दुनिया	–	**जग**	**संसार**

(घ) इनके अर्थ लिखो–

उत्तर– ओर	–	**तरफ**	दिन	–	**वार**
और	–	**दूसरा**	दीन	–	**गरीब**
चपल	–	**चंचल**	सर	–	**सिर (शरीर का ऊपरी भाग)**
शर	–	**बाण**			
चप्पल	–	**पादुका (पैरों में पहनी जानी वाली वस्तु)**			
सजल	–	**जल से युक्त**	पराग	–	**पुष्परस**
विटप	–	**वृक्ष**	मर्मर	–	**मद्धिम ध्वनि**

(ङ) नीचे दिए पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करो–

उत्तर– 1. कहाँ वह .... वह तान!

प्रसंग–निम्नलिखित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक **'हिंदी 8'** के **'कलिंग विजय'** नामक पाठ से ली गई हैं। इसमें गायिका द्वारा अशोक को लक्ष्य करके गीत गाया गया है तथा उसे झक-झोरा गया है।

व्याख्या–गायिका गाते हुए कहती है कि हे मेरी बाँसुरी! वह तान सुना जिसमें मधुरता भरी हुई थी, वह यौवन से भरी हुई चंचलताएँ कहाँ गईं? वह बंसत की खुशनुमा सुबह कहाँ है? हे पुष्पराज वसंत! तुम पत्थर कैसे बन गए? (बसंत ऋतु में जैसा हरा-भरा परिवेश होना चाहिए, नरसंहार के कारण वह सब खत्म हो चुका है।)

2. ध्वंस .... वह तान!

प्रसंग–निम्नलिखित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक **'हिंदी 8'** के **'कलिंग विजय'** नामक पाठ से ली गई हैं। इसमें गायिका द्वारा अशोक को लक्ष्य करके गीत गाया गया है तथा उसे झक-झोरा गया है।

व्याख्या–फूलों की पंखुड़ियों को जिसने मसल दिया, छोटी-छोटी कलियों को जिसने तोड़ दिया (जिससे पलाश के फूलों का पराग खत्म हो गया।) करोड़ों व्यक्तियों के रक्त में भीगकर जो बड़े अभिमान के साथ चला, मुझे उस नादान की वीर गाथा सुनाओ।

संप्रेषण

1. छात्र स्वयं करें।

2. छात्र स्वयं करें।

3. संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर– छात्र – राजा अशोक को किस नाम से जाना जाता है?
छात्रा – उन्हें अशोक महान के नाम से जाना जाता है।
छात्र – अशोक क्या बनना चाहता था?
छात्रा – अशोक विश्व-विजेता बनना चाहता था।
छात्र – अशोक का हृदय परिवर्तन कब हुआ?
छात्रा – कलिंग युद्ध के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया।
छात्र – हृदय परिवर्तन के उपरांत अशोक ने कौन-सा धर्म अपनाया?
छात्रा – हृदय परिवर्तन के उपरांत अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया।

अंतर-विषयक अधिगम

1. हमारा राष्ट्रीय चिह्न कहाँ से लिया गया है। इस पर बनी आकृति के बारे में संक्षेप में लिखो।

उत्तर– अशोक चिह्न भारत का राजकीय प्रतीक है। भारत का राष्ट्र चिह्न सारनाथ स्थित अशोक के सिंह स्तंभ की अनुकृति है जो सारनाथ के संग्रहालय में सुरक्षित है। मूल स्तंभ में शीर्ष पर चार सिंह हैं जो एक-दूसरे की ओर पीठ किए हुए हैं। इसके नीचे घंटे के आकार के पद्म के ऊपर एक चिह्न वल्लरी, एक हाथी, चौकड़ी मारता हुआ एक घोड़ा, एक साँड और एक सिंह की उभरी हुई मूर्ति है। इसके बीच-बीच में चक्र बने हुए हैं। एक ही पत्थर को काटकर बनाए गए इस सिंह स्तंभ के ऊपर कानून का चक्र (धर्मचक्र) रखा हुआ है।

2. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– आतंकवादियों द्वारा आज बड़े पैमाने पर हिंसा फैलाई जा रही है। पूरा विश्व आतंकवाद से परेशान है। धार्मिक उग्रवाद और राजनीतिक कट्टरता आज आतंकवाद के सबसे प्रमुख कारण हैं। आतंकवाद के खात्मे के लिए धार्मिक संस्थानों को धर्म की उचित व्याख्या करनी चाहिए और आतंकी संगठनों को धर्मद्रोही करार देना चाहिए। युवाओं को आतंकियों के दुष्प्रचार से बचाने के उपाय करने होंगे। संुयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं को आतंक को बढ़ावा दे रहे देशों पर कठोर कारवाई करनी चाहिए। संपूर्ण विश्व को एक साथ लाकर ही आतंकवाद की समस्या से लड़ा जा सकता है।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

4 नीलकंठ (संस्मरण)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** बड़े मियाँ ने लेखिका से मोर और मोरनी के बच्चों के पैंतीस रुपये लिए।

2. लेखिका के परिवार वालों ने उन्हें यह कहकर चिढ़ाया कि ''तीतर हैं, मोर कहकर ठग लिया है।''

3. चित्रा एक बिल्ली थी।

4. विदेशी मेहमानों ने नीलकंठ को 'परफैक्ट जेंटिलमैन' नाम दिया था।

5. नीलकंठ जालीघर के जंतुओं के बीच 'सेनापति' और 'संरक्षक' की भूमिका निभाता था।

6. कुब्जा देखने में राधा के समान ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थीं कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी। नीलकंठ और राधा को साथ-साथ देखकर वह उन्हें मारने के लिए दौड़ती थी। उसकी किसी भी जीव-जंतु से मित्रता न थी।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** बड़े मियाँ ने लेखिका को मोर के बच्चे खरीदने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ कर लाया है। एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें नहीं तो इनके पंजों से दवा बनाने के लिए इन्हें कोई भी खरीद कर ले जाएगा।

2. लेखिका ने अपने कमरे के कायाकल्प का वर्णन करते हुए कहा है कि पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजरा रखकर उसका दरवाजा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजरे से निकलकर कमरे में मानो खो गए, कभी मेज के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे। अंत में इस लुका-

छिपी से थककर उन्होंने मेरे रद्दी कागजों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज पर, कभी कुरसी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाजा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था।

3. लेखिका ने नीलकंठ के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा कि मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूप-छाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वास दोनों पंखों में सलेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नई गरिमा से रंजित कर दिया।

उसकी गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी-पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव उन्हें देखकर ही किया जा सकता है।

4. जालीघर में एक साँप के घुस जाने पर सब जंतु इधर-उधर छिप गए परंतु एक शिशु खरगोश को साँप ने पकड़ लिया। नीलकंठ ने अपनी तीखी चोंच से प्रहार करके साँप को घायल कर दिया और खरगोश को बचा लिया। फिर रात-भर खरगोश को अपने पंखों के नीचे रखकर उष्णता दी।

5. कुब्जा नीलकंठ और राधा को एक-साथ देखकर ईर्ष्या-भाव से भर जाती थी। वह नीलकंठ के साथ रहना चाहती थी। उसने राधा के अंडे भी फोड़ दिए थे। उसकी इसी ईर्ष्या के चलते नीलकंठ राधा से दूर रहने लगा था और इसी विरह के कारण वह एक दिन चल बसा। नीलकंठ के न रहने पर राधा निश्चेष्ट-सी हो गई थी। वह हर समय नीलकंठ की प्रतीक्षा करती रहती थी। लेकिन वह भी अधिक दिनों तक जीवित नहीं रही और एक दिन कजली (अल्सेशियन कुत्ती) के द्वारा काट लिए जाने पर वह भी चल बसी। इस प्रकार कुब्जा नीलकंठ और राधा के लिए एक अभिशाप बनकर आई।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** लेखिका ने यह संकल्प किया था कि इस बार पिंजरे की ओर नहीं देखूँगी।

2. लेखिका ने अपना ध्यान बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी ओर सफेद डोरे से बँधी ऐनक पर केंद्रित किया।

3. मोरनी की अनदेखी करना इसलिए कठिन था क्योंकि मोरनी राधा के समान ही थी।

4. **विपरीतार्थक शब्द–**

समान = **असमान**, विरल = **बहुल**, बँधी = **खुली**, अनदेखी = **देखी**, कठिन = **सरल**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– **1.** चिड़ियावाले ने, लेखिका से, क्योंकि उसने मोर-मोरनी को अन्य खरीदारों को नहीं बेचा था।

2. घर के लोगों ने, लेखिका से, क्योंकि मोर-मोरनी दोनों बहुत छोटे थे।

3. लेखिका ने, घर के लोगों से, क्योंकि सबके टोकने से वह चिढ़ गई थीं।

4. बड़े मियाँ ने, लेखिका से, क्योंकि मोरनी की दशा ठीक नहीं थी।

5. बड़े मियाँ ने, लेखिका से, क्योंकि मूँज से मोरनी के पैर बाँधे जाने के कारण उसके पैरों की उँगलियाँ टूटकर एक जगह एकत्र हो गई थीं।

(ङ) नीचे दी गई पंक्तियों की व्याख्या कीजिए–

उत्तर– **1.** नीलकंठ के मर जाने पर जब उसे गंगा में प्रवाहित किया गया तो गंगा की लहरों पर पड़ता उसका प्रतिबिंब ऐसा लगा मानो एक और विशाल मोर नाच उठा हो।

2. मोर के बड़े होने पर लेखिका उसका वर्णन करते हुए कहती हैं कि अब मोर के सिर पर लगी कलगी और अधिक चमकने लगी। उसकी चोंच और भी नुकीली हो गई, उसकी गोल आँखों में इंद्र के समान नीली कांति झलकने लगी। उसकी लंबी नीली तथा हरे रंग की गर्दन जब उठती-गिरती तो धूप-छाँव का आभास होता तथा उसके दोनों पंखों में सफेद तथा सलेटी रंग की रेखाएँ दिखाई देने लगीं।

(च) सही वाक्य के सामने (✓) का चिहन लगाओ–

उत्तर– **1.** मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची और चमकीली हो गई।

2. नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखो–

उत्तर–

मोर	**मयूर**	**केकी**
इंसान	**मानव**	**मनुष्य**
घर	**गृह**	**मकान**
गुरु	**महान**	**बड़ा**
विषधर	**सर्प**	**साँप**
वृक्ष	**पेड़**	**पादप**

(ख) रेखांकित सर्वनाम पाठ में किन संज्ञा शब्दों के लिए प्रयोग हुए हैं, लिखो–

उत्तर– **1.** लेखिका के लिए, **2.** नीलकंठ के लिए, **3.** कुब्जा के लिए,
4. लेखिका के लिए, **5.** राधा के लिए।

(ग) नीचे दिए वाक्यों में विराम-चिहन पहचानकर उनके नाम लिखो–

उत्तर– **1.** पूर्ण विराम, **2.** योजक चिह्न,
3. अल्प विराम, **4.** संबोधनबोधक।

(घ) विलोम शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

उत्तर–

इंसान	–	हैवान (✓)	आदमी
सजीव	–	जीवित	निर्जीव (✓)
दुर्बलता	–	सबलता (✓)	कमजोरी
दंड	–	पुरस्कार (✓)	सजा
आरंभ	–	प्रारंभ	अंत (✓)

(ङ) उदाहरण के अनुसार 'ई' प्रत्यय द्वारा शब्द का निर्माण करो–

उत्तर–

ऊँचा	–	**ऊँचाई**	पूर्व	–	**पूर्वी**
लंबा	–	**लंबाई**	उत्तर	–	**उत्तरी**
चौड़ा	–	**चौड़ाई**	दक्षिण	–	**दक्षिणी**
गहरा	–	**गहराई**	पश्चिम	–	**पश्चिमी**
लड़ा	–	**लड़ाई**	सावधान	–	**सावधानी**
बुरा	–	**बुराई**	तैराक	–	**तैराकी**
पढ़ा	–	**पढ़ाई**	मजदूर	–	**मजदूरी**

संप्रेषण

संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर– छात्र – क्या तुमने कभी मोर को देखा है।
छात्रा – हाँ, मैंने मोर को देखा है।
छात्र – तुमने मोर कहाँ देखा।

छात्रा – मैंने मोर को चिड़ियाघर में देखा था।

छात्र – क्या तुम बता सकती हो कि मोर किन दो देशों का राष्ट्रीय पक्षी है?

छात्रा – मोर भारत तथा श्रीलंका का राष्ट्रीय पक्षी है।

छात्र – मोर कैसा पक्षी है?

छात्रा – मोर कलाप्रिय तथा वीर पक्षी है।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।
2. छात्र स्वयं करें।
3. 'जंतु हमारे मित्र हैं' शीर्षक से एक निबंध लिखो।

उत्तर– आज से लगभग 130 हजार वर्ष पूर्व मानव का विकास हुआ था। इसी प्रकार लगभग 40 हजार वर्ष पूर्व उसने अग्नि का प्रयोग करना सीख लिया। इस तरह धीरे-धीरे उसने कृषि करना भी सीख लिया और जानवरों का शिकार करने के स्थान पर उन्हें पालना सीख लिया। इस तरह मनुष्य और पशुओं की मित्रता की कहानी बहुत पुरानी है। पशु हमारे बहुत अच्छे मित्र होते हैं। इनसे हमारे अनेक कार्य सिद्ध होते हैं। इसलिए मनुष्य ने धीरे-धीरे पशुओं को पालकर उनसे काम लेना प्रारंभ किया। और उनसे अधिक-से-अधिक लाभ उठाना प्रारंभ किया। पशुओं से हमें दूध, दही, घी, मक्खन, पनीर आदि के अतिरिक्त गोबर, खाद, चमड़ा आदि वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।

इसके अतिरिक्त ये पशु बोझा ढोने, गाड़ी और हल चलाने हेतु भी प्रयोग में लाए जाते हैं। पशु अपनी मित्रता में सदा खरे उतरे हैं। इन्होंने मानव की हमेशा से ही सेवा की है। मनोंरजन की दृष्टि से भी जानवर श्रेष्ठ होते हैं। सरकस में बंदर, भालू, हाथी, घोड़े आदि के करतब देखते ही बनते हैं। चिड़ियाघर में गैंड़ा, मगरमच्छ, हिरण, वनमानुष, सारस आदि होते हैं। इन्हें देखकर मन को बहुत अच्छा लगता है। सचमुच ये पशु इंसान के बहुत अच्छे मित्र हैं।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– उत्तर छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 गौरी (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. बाबू राधाकृष्ण अपनी पुत्री गौरी के विवाह के लिए चिंतित रहते थे।

2. गौरी मन-ही-मन सोचती रहती थी कि क्या मैं माता-पिता पर इतनी बोझ हो गई हूँ कि रात-दिन उन्हें मेरे विवाह के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं है।

3. सीताराम जी इतवार के दिन गौरी को देखने के लिए बाबू राधाकृष्ण के घर पधारे।

4. सीताराम जी को राधाकृष्ण के पत्र की प्रतीक्षा थी क्योंकि उसमें विवाह की तारीख लिखकर आने वाली थी।

5. बाबू राधाकृष्ण ने गौरी के लिए जो वर देखा, वह बी0ए0 पास 24-25 साल का नवयुवक था। देखने में अधिक सुंदर नहीं था परंतु नायब तहसीलदार के पद पर नियुक्त था।

6. गौरी सीताराम जी से इसलिए विवाह करना चाहती थी क्योंकि उसके मन में उनके प्रति श्रद्धा तथा उनके बच्चों के प्रति ममता उत्पन्न हो गई थी।

(ख) लेखनी (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. बाबू राधाकृष्ण ने सीताराम के बारे में अपनी पत्नी को बताया कि सीताराम की उम्र पैंतीस-छत्तीस वर्ष है। उनके दो बच्चे भी हैं, उन्हीं को सँभालने के लिए वे विवाह करना चाहते हैं। वे एक सरल हृदय व्यक्ति हैं और उनकी तनख्वाह कुल तीस रुपये है और वह कांग्रेस दफ्तर में सेक्रेटरी का काम करते हैं।

2. गौरी स्वयं को अपराधिनी इसलिए अनुभव कर रही थी क्योंकि उसके पिता को उसके लिए कोई योग्य वर नहीं मिल पा रहा था।

3. सीताराम के बच्चों ने गौरी से उनकी शिकायतें करते हुए कहा कि बाबू हमें कभी खिलौने नहीं लेने देतें, मिठाई भी कभी नहीं खिलाते और हमें छोड़कर दफ्तर चले जाते हैं, फिर दिनभर नहीं आते।

4. गौरी नायब तहसीलदार से विवाह इसलिए नहीं करना चाहती थी क्योंकि नायब तहसीलदार ब्रिटिश सरकार की गुलामी करते थे। और ब्रिटिश

सरकार के कहने पर वह बेझिझक कोई भी गलत कार्य कर सकते थे।

5. गौरी अपने नौकर को साथ लेकर कानपुर इसलिए गई क्योंकि सत्याग्रह संग्राम के चलते सीताराम जी गिरफ्तार हो गए थे और उनके बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं था।

6. गौरी राधाकृष्ण और कुंती की इकलौटी संतान थी जो एक सुंदर, सुशील, विवाह योग्य कन्या थी। वह स्वभाव से निर्भीक तथा दृढ़-निश्चयी थी। वह अपने पिता को अपने लिए परेशान देखकर परेशान हो जाती थी। इसके साथ ही वह लज्जाशील नवयुवती भी थी। अपने पिता से अपने विवाह के बारे में बहुत कुछ कहना चाहती थी परंतु संकोचवश कुछ कह न पाती थी। वह सादगी पसंद भी है। अपने पिता के मुख से सीताराम जी का वर्णन सुनकर वह अनजाने ही उनके प्रति झुक जाती है। उसके मन में अपार ममता है। सीताराम जी के बच्चों से मिलने के बाद वह सोचती है कि "कितने अच्छे बच्चे हैं। यदि बिना किसी प्रकार का संबंध बनाए सीताराम जी इन बच्चों को सँभालने का भार उसे सौंप दें, तो वह खुशी-खुशी ले ले।" गौरी देशभक्त तथा त्यागी वीरों का हृदय से बहुत सम्मान करती है यही कारण है कि वह देशभक्त, विनम्र, त्यागी तथा सादगी की प्रतिमा सीताराम जी के स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में गिरफ्तार होने पर स्वयं को नहीं रोक पाती और अपनी माँ से कहती है–"माँ, बच्चों को तुम भी जानती हो। उनके पिता को राजद्रोह के मामले में साल-भर की सजा हो गई है। बच्चे छोटे हैं। मैं जाऊँगी माँ, मुझे जाना ही पड़ेगा।"

(ग) दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. तार में लिखा था कि नायब तहसीलदार साहब के पिता का देहांत हो गया।

2. तहसीलदार के पिता के देहांत के फलस्वरूप विवाह एक साल के लिए टल गया था।

3. विवाह के आगे टल जाने के कारण दुख के स्थान पर खुशी गौरी को हुई।

4. **भावार्थ**–गौरी को जो विवाह की बहुत-बड़ी चिंता थी, वह खत्म हो गई।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. राधाकृष्ण ने, अपनी पत्नी कुंती से, क्योंकि वो बिना कहे चाय ले आई थी।

2. कुंती ने, राधाकृष्ण से, क्योंकि सीताराम के बारे में कोई बात गलत नहीं थी।

3. बच्चों ने, गौरी से, क्योंकि बच्चे उसे अपने घर ले जाना चाहते थे।

4. कुंती ने, गौरी से, क्योंकि वह सीताराम के बच्चों के बारे में बात कर रही थी।

5. गौरी ने, कुंती से, क्योंकि वह जल्दी-से-जल्दी कानपुर, सीताराम के बच्चों के पास जाना चाहती थी।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) इनके विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

आवश्यक	**अनावश्यक**	मुश्किल	**आसान**
सुखी	**दुखी**	मान	**अपमान**

(ख) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो–

उत्तर–

जरा-सा	**जरा-सा** ठहर जाओ, अभी बात करते हैं।
सुंदर-सा	उसका वह **सुंदर-सा** मुखड़ा मेरी आँखों के आगे घूम गया।
पहाड़-सा	उसको अपना जीवन **पहाड़-सा** लगने लगा।
काला-सा	उसका साफ करने वाला कपड़ा सदा **काला-सा** दिखाई देता है।
साधारण-सा	वह **साधारण-सा** लगने वाला व्यक्ति वास्तव में राजा था।

(ग) उचित विशेषण छाँटकर विशेष्यों के सामने लिखो–

उत्तर–

समझदार	व्यक्ति	**विलासी**	युवक
ताजा	भोजन	**दैनिक**	यात्री
भोला	बालक	**पागल**	कुत्ता

(घ) 'बे' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

कार	**बेकार**	शर्म	**बेशर्म**
चारा	**बेचारा**	अदब	**बेअदब**
परवाह	**बेपरवाह**	हिसाब	**बेहिसाब**
सहारा	**बेसहारा**	दाग	**बेदाग**

(ङ) निम्नलिखित वाक्यांशों/वाक्यों के लिए एक शब्द लिखो–

उत्तर–

बिना छल के	**निश्छल**	आने वाला समय	**आगामी**
कपट करने वाला	**कपटी**	परिश्रम सहित	**सपरिश्रम**
जो संतुष्ट न हो	**असंतुष्ट**		

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।
2. सीताराम के चरित्र से आप जो शिक्षा प्राप्त करते हैं, उसे अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर– सीताराम इस कहानी के प्रमुख पात्रों में एक हैं। वह एक देशभक्त, सादगीयुक्त,

सौम्य, विनयी तथा दयालु व्यक्ति हैं। वह एक पैंतीस-छत्तीस वर्ष के सज्जन पुरुष हैं जिनके दो छोटे बच्चे हैं। उन्हीं की देखभाल के लिए वह विवाह करना चाहते हैं। वह एक साफ हृदय वाले तथा साधारण पहनावे वाले इंसान हैं जो किसी भी प्रकार के दिखावे से दूर हैं। तभी तो राधाकृष्ण उनके विषय में बताते हुए अपनी पत्नी से कहते हैं–''अरे, नहीं-नहीं, वह आदमी कपटी नहीं है। उसके भीतर कुछ और बाहर कुछ और हो ही नहीं सकता। हृदय तो उसका दर्पण की तरह साफ है।'' वह अपने बच्चों के प्रति बहुत फिक्रमंद हैं और उन्हीं के अच्छे पालन-पोषण के लिए विवाह करना चाहते हैं। तभी तो वो अपने छोटे बच्चे को समझाते हुए कहते हैं कि–''हम तुम्हें तुम्हारी माँ को दिखाने ले चलेंगे।'' वह एक बहुत बड़े पारखी भी हैं तभी तो वो गौरी को बिना देखे ही उसके बारे में बताते हुए उसके पिता से कहते हैं कि–''लड़की तो आपकी साक्षात् लक्ष्मी है और यह मैं जानता था कि आपकी लड़की ऐसी ही होगी इसलिए देखने को आना नहीं चाहता था।'' अंत में हम कह सकते हैं सीताराम के चरित्र से शिक्षा लेकर हमें भी उनके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करे।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 सुखदा मणि (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** गोपाल चतुर और समझदार युवक था।

2. गोपाल का राजदरबार में बहुत सम्मान था इसलिए राज्य के पंडित उससे ईर्ष्या करते थे।

3. पंडित गोपाल को इसलिए पीट रहे थे क्योंकि वे गोपाल से सुखदा मणि लेना चाहते थे।

4. पंडितों ने मणि पाने के लिए रातभर जमीन को खोदा।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. गोपाल को राजदरबार में सम्मान इसलिए दिया जाता था क्योंकि वह कठिन-से-कठिन प्रश्नों के उत्तर सरलता से दे देता था।

2. गोपाल अपनी प्रसन्नता तथा सुख का कारण सुखदा मणि को बताता था।

3. गोपाल ने सुखदा मणि के बारे में पंडितों को बताया कि मणि मैंने चोरों के डर से जंगल में, जमीन के अंदर चाँद के ठीक नीचे गाड़ रखी है जो बुद्धिमान हो वह उसे निकाल ले।

4. सुखदा मणि वास्तव में मनुष्य की बुद्धि है जो सब प्रकार से सुख देती है।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. पंड़ितों ने ठान रखा था कि चाहे कुछ भी हो, गोपाल से मणि छीनकर ही लौटना है।

2. पंडित गोपाल से सुखदा मणि छीनना चाहते थे।

3. पंडित गोपाल से इसलिए ईर्ष्या करते थे क्योंकि उनसे उसकी लोकप्रियता देखी नहीं जाती थी।

(घ) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरो–

उत्तर– 1. इसी कारण राजदरबार में उसका बहुत **सम्मान** था।

2. यह **मणि** उसे प्रसन्न और सुखी रखती है।

3. सुना है तुम्हारे पास **सुखदा** नामक मणि है।

4. सभी पंडितों को अपने सिर के ऊपर **आकाश** दिखाई दिया।

5. उधर गोपाल निश्चिंत होकर **सो** गया।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) दिए गए शब्द में प्रयुक्त संयुक्ताक्षर को लिखो तथा उससे बनने वाले दो-दो नए शब्दों के उदाहरण दो–

उत्तर–

शब्द	संयुक्ताक्षर	नए शब्द	
सम्मान	**म्म**	**अम्मा**	**चम्मच**
पण्डित	**ण्ड**	**मण्डित**	**खण्डित**
वृदध	**द्ध**	**प्रसिद्ध**	**बुद्ध**
प्रसन्नता	**न्न**	**अन्न**	**सन्न**

(ख) इनके विलोम शब्द लिखो–

उत्तर– बुद्धिमान **मूर्ख** सुखी **दुखी**

वृद्ध	**युवा**	दूर	**पास**
जमीन	**आसमान**	झूठ	**सच**

(ग) तिरछे सर्वनाम पाठ में किस संज्ञा शब्द के लिए प्रयुक्त हुए हैं, लिखो–

उत्तर– **1.** गोपाल, **2.** राज्य के पंडित,
3. राज्य के पंडित, **4.** गोपाल।

(घ) इन शब्दों के समानार्थी शब्द लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर– चतुर – **होशियार**
गोपाल एक **चतुर** व्यक्ति था।

ईर्ष्या – **जलन**
उस राज्य के पंडित गोपाल से **ईर्ष्या** रखने लगे।

मणि – **रत्न**
गोपाल के पास एक **मणि** थी।

बुद्धिमानी – **समझदारी**
अपनी **बुद्धिमानी** से उसने सभी को संतुष्ट कर दिया।

वृद्ध – **बूढ़ा**
उस **वृद्ध** व्यक्ति से चला नहीं जा रहा था।

सहर्ष – **खुशी के साथ**
मैंने उनका प्रस्ताव **सहर्ष** ही स्वीकार कर लिया।

(ङ) इनके दो-दो अर्थ लिखो–

उत्तर–

कर	**हाथ**	**टैक्स**
पानी	**जल**	**सम्मान**
मन	**हृदय**	**तोलने वाला बाट**
बस	**गाड़ी**	**पर्याप्त**
मणि	**रत्न**	**नग**

(च) नीचे दिए शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को मूल शब्द से अलग करके लिखो–

उत्तर–

प्रसन्नता	=	**प्रसन्न + ता**	श्रद्धालु	=	**श्रद्धा + आलु**
समझदारी	=	**समझदार + ई**	सुनहरी	=	**सुनहरा + ई**
लिखावट	=	**लिख + आवट**	ईर्ष्यालु	=	**ईर्ष्या + आलु**
निश्चित	=	**निश्चय + इत**	झगड़ालू	=	**झगड़ा + आलू**

(छ) नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ–

उत्तर–

लोकप्रिय	=	**लोकप्रियता**	ईर्ष्यालु	=	**ईर्ष्या**
बुद्धिमान	=	**बुद्धि**	बच्चा	=	**बचपन**

आदमी	=	**आदम**	अच्छा	=	**अच्छाई**
पंडित	=	**पांडित्य**			

संप्रेषण

उत्तर– 1. एक एकड़ जमीन का क्षेत्रफल 4046 मीटर ^{2} (लगभग) होता है।

2. गोपाल के चरित्र की विशेषताएँ

गोपाल राजदरबार का एक पंडित था। वह बड़ा ही चतुर और समझदार था। वह कठिन से कठिन प्रश्नों के उत्तर सरलता से देता था। राजदरबार में उसका बहुत सम्मान था। गोपाल हमेशा प्रसन्न रहता था। जब कोई उसकी प्रसन्नता का कारण पूछता तो वह कहता कि उसके पास सुखदा मणि है वही उसकी प्रसन्नता का कारण है। वास्तव में उसका ज्ञान ही सुखदा मणि थी।

गोपाल कठिन परिस्थिति में भी न धबराने वाला और ज्ञान के बल पर शत्रुओं को पराजित करने वाला था।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।
2. **विविध प्रकार के बहुमूल्य अथवा रत्न**

माणिक, हीरा, नीलम, पन्ना और मोती को बससे कीमती पत्थर अथवा रत्न माना जाता है बहुमूल्य पत्थर पृथ्वी के भूपटल में बनते है। हीरे और पेरीडॉट जैसे कुछ रत्न पृथ्वी में बहुत गहरे पाए जाते है दुनिया का सबसे महँगा पत्थर पेनाइट है।

भारत में पाए जाने वाले कुछ बहुमूल्य पत्थर हैं कश्मीर का नीलम, गोलकुंडा का हीरा, अजमेर का पन्ना और सूरत का हीरा।

3. इस कहानी में आए विशेषण शब्दों को छाँटकर उनकी सूची बनाओ।

उत्तर– चतुर, समझदार, कठिन, प्रसन्न, सुखी, गुप्त, वृद्ध, सुखदा, सो, हर, दो, एक।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

7 निराकार एकांत–अमरनाथ (लेख)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. लेखक लिदर नदी के किनारे बैठकर प्रकृति का सहज सौंदर्य देखता है।

2. पहाड़ों पर से खिसकती बर्फ सरिता पर एक पुल बनाती है।

3. असुर निराकार एकांत की खोज में पिस्सू घाटी की अलंघ्य चट्टानों तक आए थे।

4. पोषपथ पंचतरणी से पहले पड़ने वाला पाँच मील लंबा, उतरने के लिए बनाया गया एक मार्ग है।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. लेखक चंदनबाड़ी की ओर जाते हुए सरिता के उस कलकल नाद को देखता है जो चट्टानों से टकराकर प्रपात बनाती हुई आगे बढ़ रही थी। वहाँ पर वह गगनचुंबी देवदार और चीड़ के वृक्ष, चारों ओर व्याप्त हरीतिमा और उनके बीच में उमंगते-उमड़ते झरने, अनेक प्रकार के पुष्प, अनेक रंगों के पक्षी इत्यादि देखता है।

2. असुरों की हड्डियाँ चटटानें बनकर पिस्सू घाटी के मार्ग में बिखरी पड़ी हुई थीं।

3. अमारनाथ की गुफा 12,729 फीट की ऊँचाई पर स्थित है।

4. हिमनिर्मित शिवलिंग पवित्र अमरनाथ की गुफा में बनता है। यह स्वयं ही धीरे-धीरे अपना आकार ले लेता है। यह लगभग दस फुट लंबा होता है। स्वयं निर्मित होने के कारण इसको 'स्वयंभू हिमानी शिवलिंग' कहते हैं। पवित्र शिवलिंग का आकार चंद्रमा के साथ घटता-बढ़ता रहता है। पवित्र शिवलिंग श्रावण मास की पूर्णिमा को अपने पूर्णरूप में होता है। पवित्र अमरनाथ की गुफा के दर्शन करने के लिए श्रद्धालुओं की लंबी लाइन लगी होती है।

5. लारेंस डुरेल ने यात्रा के बारे में कहा है कि यात्राएँ हमें बाहर केवल 'स्पेस' में ही नहीं ले जातीं, उन अज्ञात स्थानों की ओर भी ले जाती हैं, जो हमारे भीतर हैं।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. हिम प्रदेश के सौंदर्य को तरल चंद्र ज्योत्सना बनाती है।

2. लेखक धुंध के आर-पार हिम श्रृंगों को देखता है।
3. वायु की तासीर चाकू की पैनी धार-सी तीखी है।
4. **समानार्थी शब्द–**
चंद्र = **चंद्रमा**; ज्योत्सना = **कौमुदी**, हिम = **बर्फ**, सौंदर्य = **सुंदरता**, झील = **बहुत बड़ा तालाब**।

निरंतर समीक्षा

(क) इनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

नदी	**सरिता**	**तरंगिणी**
पहाड़	**पर्वत**	**गिरि**
युद्ध	**संग्राम**	**समर**
असुर	**दानव**	**दैत्य**

(ख) विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

सुलभ	**दुर्लभ**	प्रसन्न	**अप्रसन्न**
गहरा	**उथला**	अंदर	**बाहर**
सुंदर	**कुरूप**	भव्य	**साधारण**
संकरा	**चौड़ा**	संध्या	**प्रातः**
ऐश्वर्य	**दरिद्रता**	ज्ञात	**अज्ञात**

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

उत्तर– 1. चारों ओर नाना वर्ण के **पुष्प** खिले हुए थे।
2. हम रुक नहीं सकते **सौंदर्य और सत्य** की खोज में आगे बढ़ने को विवश हैं।
3. असुरों की **हड्डियाँ** चट्टानें बनकर मार्ग में बिखरी पड़ी हैं।
4. **चंद्र ज्योत्सना** उस हिमप्रदेश के सौंदर्य को और भी तरल बना रही है।
5. हम अमरगंगा की **सुरम्य** घाटी में जा पहुँचते हैं।

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर पत्र लिखो–

ताजमहल की यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र

उत्तर– 1. **19, मयूर विहार**
नई दिल्ली।
प्रिय मित्र अशोक,

कल तुम्हारा पत्र मिला। इसमें तुमने मेरी ताजमहल की यात्रा के विषय में पूछा था। अतः मैं संक्षेप में तुम्हें अपनी यात्रा का अनुभव बता रहा हूँ। हम लोग पिछले शनिवार को बस द्वारा ताजमहल पहुँचे थे। टिकट लेकर हमने जैसे ही भीतर प्रवेश किया हमें ऐसा लगा मानो ताजमहल हमारे ठीक सामने हो। परंतु ऐसा नहीं था। उसकी वास्तुकला कुछ इस प्रकार की है कि सभी को ताजमहल बिल्कुल निकट दिखाई देता है। जबकि वास्तव में वह प्रवेश द्वार से बहुत दूर है। अंदर जाकर हमने अपने सामने सफेद संगमरमर की एक भव्य इमारत देखी जो ऐसे लग रही थी मानो किसी चित्रकार ने अपनी कूँची से एक नयनाभिराम चित्र बनाया हो। उसके फव्वारे, चाहरबाग और उसकी शांति एक अलौकिक आभा प्रदान कर रही थी। काफी देर रुकने के बाद और आस-पास का सारा क्षेत्र देखने के बाद हम मधुर स्मृतियाँ लेकर वापस अपने घर की ओर चल दिए। शेष सब कुशल है।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,
पंकज

2. **अशोक सेन**
टैगोर भवन
कोलकाता।
प्रिय मोहित
स्नेह!

आशा है, तुम स्वस्थ और आनंदपूर्वक होंगे। मैं भी यहाँ कुशल हूँ। इस बार हरिद्वार जाने का तीन दिन का कार्यक्रम बनाया है। खूब घूमेंगे-फिरेंगे। एक दिन पहले आ जाना। सुबह निकलने का समय भी निश्चित करना है। शेष मिलने पर।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
राजन

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– हमें किसी तीर्थस्थल की यात्रा से पूर्व वहाँ होने वाले प्रमुख उत्सवों और कार्यक्रमों की जानकारी ले लेनी चाहिए। वहाँ जाने का उचित मौसम कौन-सा है, और वहाँ ठहरने की व्यवस्थाएँ कैसी है, यह सब हमें पूर्व ही ज्ञात कर लेना चाहिए।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

8 चल पड़े जिधर दो पग (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. कवि के अनुसार जिस मार्ग पर गांधी जी के दो कदम चल पड़ते हैं, उस मार्ग पर उनके साथ करोड़ों कदम चल पड़ते थे।

2. गांधी जी जिसके सिर पर अपना हाथ रख देते थे, करोड़ों हाथ उसके रक्षक बन जाते थे।

3. इस पंक्ति से आशय है कि तुम इस धरतीवासियों के सामने पर्वत बनकर खड़े हो गए।

4. कवि ने गांधी जी को युग-परिवर्तक इसलिए कहा है क्योंकि उन्होंने देश के लिए महान कार्य किए।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. गांधी जी को इतिहास सदैव याद रखेगा क्योंकि उनके ही अथक परिश्रम से हमारे देश भारत को आजादी की सौगात मिली।

2. कवि ने गांधी जी को कोटिरूप तथा कोटिबाहु इसलिए कहा है क्योंकि उनके साथ करोड़ों व्यक्ति कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हुए थे।

3. गांधी जी यदि प्रसन्न होते थे तो देश के लोग उनके साथ प्रसन्न होते थे और जब गांधी जी अपनी नाराजगी जाहिर करते थे तो लोग उनके सामने से हट जाते थे।

4. कवि गांधी जी को युगाधार कहकर इसलिए संबोधित करता है क्योंकि वे संसार के लोगों के लिए आधार स्तंभ स्वरूप थे।

5. गांधी जी को युग निर्माता इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्होंने देश को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराकर एक नए युग का निर्माण किया।

6. हे करोड़ों लोगों को साथ लेकर चलने वाले! करोड़ों लोगों के हृदयों में बसने वाले! आपको प्रणाम है। आपने जिस मार्ग पर दो कदम बढ़ाए, उसी मार्ग पर आपके साथ करोड़ों लोग चल पड़े। जिसकी रक्षा करने का आपने प्राण ले लिया, करोड़ों हाथ उसकी रक्षा के लिए बढ़ गए। आपकी प्रसन्नता से ये संसार प्रसन्न होता है तथा आपके नाराज होने पर लोग आपके सामने से हट जाते हैं। आपने धरतीवासियों के सामने पर्वत के समान

खड़े होकर उनकी रक्षा की। आपने अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई तो सभी लोग आपके साथ खड़े हो गए और एक नए धर्म-युग का निर्माण हुआ। हे युग के संस्थापक! हे युग निर्माता! आपको ये संसार बार-बार प्रणाम करता है तथा युगों-युगों तक संसार आपको याद करता रहेगा।

(ग) दिए गए पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करो–

उत्तर– 1. **चल पड़े .... उसी ओर।**

प्रसंग–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक **'हिंदी 8'** की **'चल पड़े जिधर दो पग'** नामक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता **'सोहनलाल द्विवेजी'** जी हैं। इसमें कवि ने ससार को गांधी जी की महानता से परिचित कराया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि गांधी जी जिस मार्ग पर चलते थे, करोड़ों लोग उसी मार्ग पर मुड़ जाते थे। वे जिधर भी अपनी एक नजर डालते थे करोड़ों आँखें उधर ही देखने लगती थीं।

2. **युग बढ़ा .... अमिट रेख।**

प्रसंग–पूर्ववत्।

व्याख्या–कवि कहता है कि यह संसार आपके हँसने पर हँसा, आपके नाराज होने पर आपके सामने से हट गया। आप इस धरती के लोगों के सामने एक मजबूत पर्वत के समान खड़े हो गए और अपने प्रयासों द्वारा समय पर अपनी एक कभी न मिटने वाली छाप छोड़ दी।

(घ) पंक्तियाँ पूरी करो–

उत्तर– हे **कोटिचरण**! हे **कोटिबाहु**!
हे **कोटिरूप**! हे **कोटिनाम**!
तुम **एकमूर्ति**, **प्रतिमूर्ति कोटि**!
हे **कोटिमूर्ति**! तुमको **प्रणाम**!

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) इन शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय बताओ तथा उनसे बनने वाले दो-दो नए शब्द लिखो–

उत्तर–

संचित	**इत**	**वंचित**	**फलित**
भारतीय	**ईय**	**अनुकरणीय**	**विचारणीय**
सामाजिक	**इक**	**राजनैतिक**	**बौद्धिक**
गुरुत्व	**त्व**	**स्त्रीत्व**	**बंधुत्व**

(ख) इनके विपरीतार्थक शब्द लिखो–

उत्तर–

रक्षक	**भक्षक**	चल	**अचल**
मौन	**शोर**	धर्म	**अधर्म**
निर्माता	**विनाशक**	अपना	**पराया**

(ग) निम्नलिखित शब्दों के लिए एक शब्द लिखो–

उत्तर– 1. युग परिवर्तक, 2. रक्षक,
3. युगाधार, 4. संचालक।

(घ) इनके समानार्थी शब्द लिखो–

उत्तर–

भृकुटि	**भौंहें**	डग	**कदम**
मग	**मार्ग**	दृग	**नेत्र**
अचल	**स्थिर**	कोटि	**करोड़ों**

(ङ) वर्ण-विच्छेद करो–

उत्तर–
1. कोटि – **क् + ओ + ट् + इ**
2. कोटिनाम – **क् + ओ + ट् + इ + न् + आ + म् + अ**
3. संचित – **स् + अं + च् + इ + त् + अ**
4. संस्थापक – **स् + अं + स् + थ् + आ + प् + अ + क् + अ**
5. युगाधार – **य् + उ + ग् + आ + ध् + आ + र् + अ**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. 'अगर आज गांधी जी हमारे बीच होते तो' विषय पर एक सुंदर अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– अगर आज गांधी जी हमारे बीच होते तो शायद हमारा देश संसार के सर्वश्रेष्ठ देशों में से एक होता। आज हमारे देश के राजनैतिक ढाँचे में जो अस्थिरता तथा अराजकता फैली हुई है वह शायद कुछ कम होती। वे लोगों को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलना सिखाते जिससे देश में झूठ, चोरी, डकैती, लूटपाट की घटनाएँ कम होतीं। वे देश के लोगों को आजादी के सही मायने समझाते। उनमें नेतृत्व की एक अद्भुत क्षमता थी। उनके नेतृत्व में चलकर देश की गिनती विश्व के विकसित देशों में होती। उन्होंने हस्तशिल्प तथा कुटीर उद्योगों पर जोर दिया था, फलस्वरूप देश के हर तीसरे व्यक्ति का अपना रोजगार होता। उन्होंने करके सीखने पर बल दिया था। अगर आज वो हमारे बीच में होते तो हमारे देश के लोग ज्यादा श्रमशील होते। अतः हम कह सकते हैं कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी कमी हमें सदैव खलती रहेगी तथा हमारे हृदयों में उनके लिए एक कसक हमेशा बनी रहेगी।

2. छात्र स्वयं करें।

3. नीचे दिए गए चित्रों को पहचानकर उनके नाम लिखो–

उत्तर– लोकमान्य तिलक, चंद्रशेखर आजाद, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

9 कुश्ती का मुकाबला (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** सम्राट कृष्णदेव राय न्यायप्रिय तथा दयालु थे।

2. वसंतोत्सव पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता था जिसमें उत्तम चित्रों तथा मूर्तियों पर सम्राट अपने हाथों से कलाकारों को पुरस्कृत करते थे।

3. तेनालीराम के प्रति महाराज का अत्यधिक लगाव और उनकी बढ़ती प्रसिद्धि से दरबारी, तेनालीराम से ईर्ष्या करते थे।

4. लंका से राजदरबार में एक कुश्तीबाज कुश्ती लड़ने के लिए आया था।

5. कृष्णदेव राय ने दरबार में यह घोषणा की कि ''जो व्यक्ति कुश्ती के मुकाबले में इस कुश्तीबाज को परास्त कर देगा, उसे एक हजार स्वर्ण-मुद्राएँ भेंट स्वरूप दी जाँएगी।'' क्योंकि कुश्तीबाज ने उन्हें चुनौती दी थी।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** लोग सम्राट कृष्णदेव राय की तुलना राजा भोज तथा सम्राट अशोक से करते थे क्योंकि वे भी राजा भोज और सम्राट अशोक की तरह लोकहित के कार्यों में लगे रहते थे।

2. तेनालीराम को लोग, तेनालीराम, तेनालीरामा, तेनाली रामकृष्ण और तेनाली रामाकृष्णुडु इत्यादि नामों से पुकारते थे।

3. कृष्णदेव राय तनालीराम से सर्वाधिक प्रेम करते थे क्योंकि राजा कृष्णदेव राय उनके गुणों से अत्यधिक प्रभावित थे।
4. कुश्तीबाज ने दरबार में आकर कहा–'महाराज! मैं लंका का निवासी हूँ। अब तक विश्व के कई प्रसिद्ध कुश्तीबाजों को मैं कुश्ती में परास्त कर चुका हूँ। मैंने आपके राज्य का भी कुश्तीबाजी में बहुत नाम सुना है। क्या आपके राज्य में भी ऐसा कोई कुश्तीबाज है, जो मुझे पराजित कर सके?''
5. जब महाराज की घोषणा के पश्चात् भी दरबार में कोई भी उस कुश्तीबाज से लड़ने के लिए तैयार न हुआ और महाराज उदास हो गए तब तेनालीराम ने कुश्ती लड़ने की चुनौती स्वीकार की।
6. तेनालीराम ने पहले संकेत में धरती को प्रणाम किया और फिर वे आगे की ओर झुके। इसके बाद अपने बाएँ हाथ का घूँसा बनाकर उन्होंने अपनी छाती पर मारा, फिर स्वयं जोर-जोर से हिलने लगे। इसका अर्थ था कि कुश्तीबाज तेनालीराम की छाती पर जोर का घूँसा मारेगा जिससे उन्हें पूरी पृथ्वी हिलती हुई नजर आएगी, इसलिए वह जोर-जोर से हिल रहे थे। दूसरे संकेत में तेनालीराम ने अपनी दोनों भुजाओं को ऊपर उठाया और हाथों की अंगुलियों को हिलाने लगे। जिसका अर्थ था कि तेनालीराम अपनी सहायता के लिए वहाँ उपस्थित सभी लोगों तथा ईश्वर से प्रार्थना करेंगे। तीसरे संकेत में उन्होंने दाएँ हाथ से अपनी गरदन पकड़ी और झटपट नीचे जमीन पर लेट गए। फिर उन्होंने दोनों आँखों को आकाश की ओर स्थिर कर दिया। जिसका अर्थ था कि कुश्तीबाज आव देखेगा न ताव, झटपट उनकी गरदन पकड़ लेगा जिससे उनकी गरदन टूट जायेगी और उनके प्राण पखेरू उड़ जाएँगे और उनकी आँखें सदा के लिए आकाश की ओर स्थिर हो जाएँगी।

(ग) नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. दरबार में उपस्थित लोगों को लग रहा था कि आज तेनालीराम का काम तमाम हो जाएगा।
2. महाराज कृष्णदेव इसलिए चिंतित थे क्योंकि वे समझ नहीं पा रहे थे कि तेनालीराम कैसे इस प्रतिस्पर्धा में जीत पाएँगे।
3. महाराज को तेनालीराम की बुद्धिमानी पर पूर्ण विश्वास था इसलिए वे खामोश थे।

4. वाक्य–

विपरीत – सागर ने आशा के **विपरीत** प्रदर्शन किया।

चिंता – महाराज कृष्णदेव राय **चिंता** में डूबे हुए थे।

प्रतिस्पर्धा – दरबारी तेनालीराम से **प्रतिस्पर्धा** रखते थे।

बुद्धिमानी – राजा कृष्णदेव राय को तेनालीराम की **बुद्धिमानी** पर पूरा भरोसा था।

(घ) किसने, किससे कहा, लिखो–

उत्तर–

1. आगंतुक ने, महाराज कृष्णदेव राय से।
2. महाराज कृष्णदेव राय ने, दरबारियों से।
3. तेनालीराम ने, कृष्णदेव राय से।
4. कुश्तीबाज ने, तेनालीराम से।
5. तेनालीराम ने, कुश्तीबाज से।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) 'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

लोकप्रिय	**लोकप्रियता**	दयालु	**दयालुता**
संपन्न	**संपन्नता**	वास्तविक	**वास्तविकता**
वीर	**वीरता**	पूर्ण	**पूर्णता**
विशेषज्ञ	**विशेषज्ञता**	मानव	**मानवता**

(ख) सही उत्तर का चुनाव करो–

उत्तर– **1.** दुर्लभ, **2.** अद्वितीय, **3.** सहकर्मी।

(ग) निम्नलिखित शब्दों की अर्थ भिन्नताएँ बताओ–

उत्तर–

भोज	**भोजन**	आदि	**और**
आदी	**आदत हो जाना**		
भोग	**भगवान के निमित्त लगाया जाने वाला (भोग)**		
नीर	**जल**	चिर	**लंबा, दीर्घ**
नीड़	**घोंसला**	चीर	**वस्त्र**

(घ) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

वीर	–	**साहसी**	**शौर्यवान**	**बहादुर**
शौक	–	**पसंद**	**रुचि**	**चाह**
सम्राट	–	**राजा**	**नृप**	**भूपति**

विद्वान	–	**ज्ञानी**	**ज्ञानवान**	**बुद्ध**
देह	–	**काया**	**शरीर**	**गात**

(ङ) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो–

उत्तर– मुँह ताकना – **कुछ पाने की अभिलाषा करना**

वाक्य प्रयोग–मेरे हाथ में खाने की वस्तु देखकर भिखारी बच्चे मेरा **मुँह ताकने** लगे।

एकटक देखना – **टकटकी लगाकर देखना**

वाक्य प्रयोग–वह गुस्से से **एकटक** मुझे ही देख रहा था।

फूला न समाना – **अत्यधिक खुश होना**

वाक्य प्रयोग–बेटे की नौकरी की खबर सुनकर सुमित्रा खुशी से **फूली न समायी**।

भयभीत होना – **डर जाना**

वाक्य प्रयोग–साँप को अचानक अपने सामने देखकर बच्चे **भयभीत हो** गए।

ईश्वर को प्यारा होना – **मृत्यु हो जाना**

वाक्य प्रयोग–इस भयानक दुर्घटना में एक व्यक्ति ईश्वर को **प्यारा हो** गया है।

संप्रेषण

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) तेनालीराम द्वारा किए गए तीनों संकेतों के अर्थ अपनी भाषा में लिखो–

उत्तर– **1.** तेनालीराम के पहले संकेत का अर्थ था कि कुश्तीबाज तेनालीराम की छाती पर जोर से घूँसा मारेगा जिससे उन्हें पूरी पृथ्वी हिलती हुई नजर आएगी। इसलिए वह जोर-जोर से हिल रहे थे।

2. तेनालीराम के दूसरे संकेत का अर्थ था कि तेनालीराम अपनी सहायता के लिए वहाँ उपस्थित सभी लोगों तथा ईश्वर से प्रार्थना करेंगे।

3. तीसरे संकेत का अर्थ था कि कुश्तीबाज आव देखेगा न ताव, झटपट उनकी गर्दन पकड़ लेगा। जिससे उनकी गर्दन टूट जाएगी, इससे उनके प्राण पखेरू उड़ जाएँगे और उनकी आँखें सदा के लिए आकाश की ओर स्थिर हो जाएँगी।

अंतर-विषयक अधिगम

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखो–

उत्तर– **(i) हाजिरजवाब व्यक्ति सबके सम्मान का पात्र होता है।**

यह सच है कि हाजिरजवाब व्यक्ति सबके लिए सम्माननीय होता है किंतु कभी-कभी हाजिरजवाबी के चलते जल्दबाजी में मुँह से कुछ ऐसी बातें

निकल जाती हैं जिनका परिणाम अच्छा नहीं होता। इसलिए बोलते समय हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि हाजिरजवाबी के चक्कर में हमारे मुँह से कुछ ऐसा न निकल जाए जिससे दूसरों को ठेस लगे। व्यक्ति की हाजिरजवाबी से उसकी बुद्धिमानी का तो पता चलता ही है, साथ ही यह भी ज्ञात हो जाता है कि दूसरा व्यक्ति हमारी बातें कितनी तन्मय होकर सुन रहा है। और जब हमें यह पता चलता है कि सामने वाला हमारी बातें ध्यानपूर्वक सुन रहा है तो वह अनायास ही हमारी नजरों में ऊपर उठ जाता है और सम्मान का पात्र बन जाता है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

10 भारत की सांस्कृतिक एकता (लेख)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. विभिन्न संस्कृतियों का वह मिश्रण जिससे देश एक सूत्र में बँधता है, सांस्कृतिक एकता कहलाती है।

2. अश्वमेध यज्ञ एकछत्र सार्वभौम राज्यों की स्थापना के लिए किए जाते थे।

3. पारसी लोगों की यह विशेषता है कि ये लोग गोमांस नहीं खाते।

4. मुसलमान ओर ईसाई धर्म एशियाई धर्म होने के कारण भारतीय धर्मों से बहुत कुछ समानता रखते हैं।

5. साहित्य में सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. भारत में विविध धर्म होते हुए भी सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं, क्योंकि–मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा की शिक्षा हिंदू, जैन और बौद्ध धर्मों में समान रूप से प्रतिष्ठित है–स्वास्तिक चिह्न और ओंकार मंत्र

हिंदुओं और जैनों में समान रूप से मान्य है। कमल और हाथी तथा अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) बौद्धों और हिंदुओं में समान रूप से पूजनीय माने जाते हैं। जैनों के अणुव्रत, हिंदू-धर्म के योगशास्त्र में 'यम' और बौद्धों के पंचशील प्रायः एक ही हैं। पारसियों और हिंदुओं में अग्नि की पूजा समान रूप से होती है। जेंदावेस्ता की गाथाओं और वैदिक ऋचाओं में भाषागत समानता है।

2. राजनीति की अपेक्षा धर्म और संस्कृति मनुष्य के हृदय के अधिक निकट है।
3. मुसलमानों और ईसाइयों ने यहाँ की संस्कृति को प्रभावित किया है। वे यहाँ की संस्कृति से प्रभावित हुए हैं। भारतीय सूफी कवियों ने वेदांत की भावभूमि को अपनाया है और उनके ग्रंथों में हिंदू परंपराओं, कथाओं, विचारों, देवी-देवताओं और प्रतीकों के समावेश हुए हैं। तानसेन और ताज पर हिंदू-मुसलमान समान रूप से गर्व करते हैं। जायसी, रहीम, रसखान आदि अनेक मुसलमान कवियों ने अपनी वाणी से हिंदी की रसमयता बढ़ाई है। रसखान के सवैये तो सचमुच रस की खान हैं।
4. भारत में भाषा को लेकर विवाद खड़े किए गए ताकि आपसी झगड़े और भेद-भाव में हमारी शक्ति का ह्रास हो और विदेशी शासकों का राज्य अटल बना रहे।
5. भारतीय संस्कृति विश्व की सभी संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ है। यह सभी संस्कृतियों का मिला-जुला रूप है। यहाँ सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है। भारतीय संस्कृति की विभिन्न विशेषताएँ हमारी जातीय मनोवृत्ति, जीवन-मीमांसा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, उठने-बैठने के ढंग, चाल-ढाल, वेशभूषा, साहित्य, संगीत और कला में अभिव्यक्त होती हैं।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. भारत में सात पवित्र पुरियाँ स्थित हैं।
2. 'प्रातः स्मरण' से आशय है–''सुबह-सवेरे ध्यानमुद्रा में बैठना।''
3. उज्जयिनी का प्राचीन नाम अवंतिका था।
4. पहले द्वारिका को द्वारावती तथा हरिद्वार को माया नाम से संबोधित किया जाता था।

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

उत्तर– 1. देश राष्ट्रीयता का एक आवश्यक **उपकरण** है।
2. हमारे समाज में **भेद** और **अभेद** दोनों ही हैं।

3. भगवान **ऋषभदेव** का श्रीमद्भागवत में परम आदर के साथ उल्लेख हुआ है।

4. **श्रीगुरु ग्रंथ साहिब जी** में कबीर आदि महात्माओं की वाणी आदर के साथ सुरक्षित है।

5. **स्वामी शंकराचार्य** ने भारत की चारों दिशाओं में अपने मठ स्थापित किए थे।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) इनके विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

स्वार्थ	**निःस्वार्थ**	एकता	**अनेकता**
दरिद्र	**संपन्न**	प्राचीन	**नवीन**
आवश्यक	**अनावश्यक**	सुसंगठित	**अस्त-व्यस्त**

(ख) वचन बदलकर लिखो–

उत्तर–

दशा	**दशाएँ**	पुरी	**पुरियों**
विचार	**विचारों**	ग्रंथ	**ग्रंथों**
हिंदुओं	**हिंदू**	दृश्यों	**दृश्य**

(ग) 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

समाज	**सामाजिक**	इतिहास	**ऐतिहासिक**
भूगोल	**भौगोलिक**	धर्म	**धार्मिक**
वेद	**वैदिक**	नीति	**नैतिक**

(घ) ष अथवा ष् का प्रयोग ऋ तथा ट-वर्ग के साथ होता है। जैसे–कृषक, ऋषि, निष्ठा, विष्णु। ऐसे ही आठ शब्दों के उदाहरण दो–

उत्तर–

सुषमा	**सृष्टि**
सुषुप्त	**सुष्म**
सुश्रूषा	**षष्ठी**
सुषेण	**पृष्ठ**

(ङ) निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह करो–

उत्तर–

महापुरुष	– **महान है जो पुरुष**	धर्म-कर्म	– **धर्म और कर्म**
सत्याग्रह	– **सत्य के लिए आग्रह**	शब्दावली	– **शब्दों की अवली**
ग्रामगत	– **ग्राम को गया हुआ**	तुलसीकृत	– **तुलसी द्वारा कृत**

(च) इनके तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

शक्ति	–	**बल**	**ताकत**	**ऊर्जा**
दरिद्र	–	**गरीब**	**दीन**	**धनहीन**

मनुष्य	–	**नर**	**मानव**	**इंसान**
भूमि	–	**पृथ्वी**	**भू**	**धरती**
नदी	–	**सरिता**	**तरंगिणी**	**सलिला**
हाथी	–	**हस्ती**	**गज**	**कुंजर**
कमल	–	**सरोज**	**अंबुज**	**पद्म**

(छ) इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखो–

उत्तर–

पानी	–	**जल**	**सम्मान**	**कांति**
जीवन	–	**जिंदगी**	**जल**	**प्राण**
स्नेह	–	**प्रेम**	**चिकना पदार्थ**	**एक राग का नाम**
हार	–	**पराजय**	**माला**	**अंकगणित में भाजक**
फल	–	**खाद्य वस्तु**	**चाकू की नोक**	**परिणाम**

(ज) विशेषण तथा विशेष्य का मिलान करो–

उत्तर–

उपयोगी → उपकरण
विशाल → द्वीप
केंद्रीय → भाषा
दरिद्र → ब्राह्मण
सुंदर → आँखें
संपन्न → परिवार
मूर्ख → गधा
सुखी → व्यक्ति

संप्रेषण

(ख) संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर–

छात्र अ – भारत की विशेषता क्या है?

छात्र ब – यह एक विशाल राष्ट्र है।

छात्र अ – भारत की एक अन्य खास विशेषता और है। वह क्या है?

छात्र ब – वह है इसके लोगों का बहुधर्मी होना अथवा भारत में विविध धर्मों के लोगों का बसना।

छात्र अ – हमें दूसरों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए?

छात्र ब – हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम अपने लिए चाहते हैं।

छात्र अ – भारतीय धर्म और साहित्य ने हमें किसका पाठ पढ़ाया है?

छात्र ब	–	भारतीय धर्म और साहित्य ने हमें राष्ट्रीय एकता का पाठ पढ़ाया है।
छात्र अ	–	उत्तर भारत की भाषाएँ कहाँ से निकली हैं?
छात्र ब	–	उत्तर भारत की प्रायः सभी भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं।
छात्र अ	–	भारतवासी सभी के बीच कैसे पहचान लिए जाते हैं?
छात्र ब	–	भारतवासी सभी के बीच अपने जातीय व्यक्तित्व से पहचान लिए जाते हैं।

अंतर-विषयक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– समाज में व्याप्त भेदों को समाप्त करने के लिए शासन और जनता को साझा प्रयास करने चाहिए। शिक्षा संस्थानों, कार्यालयों में लोगों को विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं से अवगत कराना चाहिए। गरीब लोगों के आर्थिक स्तर को सुधारकर उन्हें भी संपन्न व्यक्तियों के समान सुखी बनाना चाहिए। धार्मिक गुरूओं और राजनेताओं के विभेदकारी कार्यक्रमों पर कठोर प्रतिबंध लगना चाहिए।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

11 विषम-ज्वर (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** दीनानाथ की निगाह 109 के अंकों पर ठहर गई थी।

2. कैशियर ने दीनानाथ को बताया कि ये तुम्हारे परिश्रम के पैसे हैं।

3. दीनानाथ को याद आ रहा था कि उसके बच्चे पिछले छह महीनों से फिल्म देखने की जिद कर रहे थे और छोटा लड़का खिलौने की दुकान से रेल का इंजन मँगवाना चाहता था।

4. दीनानाथ सिनेमाघर से बिना फिल्म देखे इसलिए वापस आ गया क्योंकि उसने सोचा–फिल्म जाने अच्छी हो, न हो। अनदेखी-अनसुनी चीज के लिए दस आने पैसे क्यों फेंक दूँ।
5. दीनानाथ ने सोने से पूर्व अपनी पत्नी से कहा, ''सुनती हो, अब शाम को मैं कभी दफ्तर में नहीं रुकूँगा।''

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. दीनानाथ को कैशियर की इस बात पर आश्चर्य हुआ कि कैशियर ने उसे 109 रुपये दिए थे और उसका वेतन 100 रुपये था।

2. दीनानाथ ने वेतन में मिले अतिरिक्त नौ रुपये खर्चने के लिए अलग-अलग बातें सोचीं। कभी उसने अपनी पत्नी के लिए साड़ी लेनी चाही कभी होटल में खाना खाने और फिल्म देखने का मन बनाया और अंत में उसने उन रुपयों से ढेर-सारी मिठाइयाँ खरीद लीं।
3. दीनानाथ अपने लिए कोट खरीदना चाहता था क्योंकि जिस कोट को वह पिछले पाँच सालों से लगातार पहन रहा था, वह फट चुका था।
4. **दीनानाथ का चरित्र चित्रण**

नागार्जुन द्वारा लिखित कहानी 'विषम-ज्वर' का मुख्य पात्र दीनानाथ एक मेहनती, ईमानदार तथा सीधा-साधा व्यक्ति है। अपने निर्धारित वेतन से अधिक वेतन मिलने पर वह आश्चर्य प्रकट करते हुए कैशियर को याद दिलाता है कि वह उसको नौ रुपये अतिरिक्त दे रहा है। वह एक मध्यमवर्गीय जीवनयापन करने वाला व्यक्ति है जिसके सीमित खर्चे हैं। उसे किसी चीज का कोई व्यसन नहीं है फलस्वरूप उसका कोई अतिरिक्त खर्चा भी नहीं है। वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजग है। अतिरिक्त रुपये हाथ में आने पर कभी वह अपनी पत्नी के लिए साड़ी लेना चाहता है, कभी बच्चों के लिए खिलौने लेना चाहता है। कभी-कभी उसके मन में दबी हुई आकांक्षाएँ भी सिर उठाने लगती हैं। कभी उसका मन फिल्म देखने के लिए मचलता है और कभी वह होटल में खाना खाने का मन बनाता है। लेकिन फिर बच्चों का ख्याल आते ही वह वहाँ से वापिस आ जाता है। और अंत में पत्नी तथा बच्चों के लिए ढेर सारी मिठाइयाँ खरीद लाता है और बच्चों के सो जाने पर पत्नी से उन्हें जगाने के लिए कहता है। उसकी इन बातों से उसके परिवार के प्रति समर्पण का पता चलता है। वह अपनी बँधी-बँधायी आय में गुजारा करने वाला संयमी व्यक्ति है। अंत में

अतिरिक्त आय से होने वाली परेशानियों से बचने के लिए वह पत्नी से कहता है–''सुनती हो, अब शाम को मैं कभी दफ्तर में नहीं रुकूँगा।'' इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी का मुख्य पात्र दीनानाथ सभी प्रकार के दिखावों तथा आडंबरों से दूर है।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** दीनानाथ अपनी पत्नी और बच्चों को होटल में खाना खिलाना चाहता था।

2. दीनानाथ रात भर अपने परिवार के साथ मिलकर मौज मनाना चाहता था।

3. दीनानाथ ने रुपयों के सदुपयोग की बात इसलिए सोची क्योंकि वह मेहनत से कमाये हुए अतिरिक्त रुपयों को बेकार काम में खर्च नहीं करना चाहता था।

4. **समानार्थी शब्द–**

बढ़िया = **अच्छा**, रात = **निशा** मौज = **आनंद**, सदुपयोग = **उत्तम उपयोग**, भाग्य = **विधि**।

(घ) दी गई पंक्ति की व्याख्या कीजिए–

उत्तर– **'नौ रुपयों .... ली थी।''**

व्याख्या–प्रस्तुत पंक्ति में बताया गया है कि नौ रुपये अतिरिक्त मिलने से दीनानाथ के हृदय में तरह-तरह की योजनाएँ बनने लगीं जिससे उसका जीवन असामान्य-सा हो गया था। परंतु जैसे ही वह अतिरिक्त कमाई खर्च हुई, उसकी दिनचर्या फिर से सामान्य हो गई।

भाषा ज्ञान आलोचनात्मक सोच

(क) भाववाचक संज्ञा लिखो–

उत्तर–

परिश्रमी	**परिश्रम**	अच्छा	**अच्छाई**
परेशान	**परेशानी**	बच्चा	**बचपन**
मनुष्य	**मनुष्यता**	सुंदर	**सुंदरता**
सजाना	**सजावट**	युवक	**युवावस्था**
पुरुष	**पौरुष**	दुष्ट	**दुष्टता**

(ख) दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखो–

उत्तर–

घर	**गृह**	साल	**सत्र**
आदमी	**नर**	रात	**रात्रि**
दिन	**दिवस**	आँख	**अक्षि**

(ग) इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखो–

उत्तर– अंक	**गोद**	**संख्या**
कर	**हाथ**	**टैक्स**
पास	**नजदीक**	**उत्तीर्ण**
बस	**पर्याप्त**	**गाड़ी**

(घ) दिए गए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अनुकरणवाची शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाओ–

उत्तर– हाथ से	**हथियाना**	गर्म से	**गर्माना**
जूता से	**जुतियाना**	झूठ से	**झुठलाना**
अपना से	**अपनाना**	दोहरा से	**दोहराना**
थरथर से	**थरथराना**	भिनभिन से	**भिनभिनाना**

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर– उल्लास – **खुशी** समारोह में चारों तरफ **उल्लास** का वातावरण है।
रस्मोरिवाज – **प्रथाएँ** सभी समुदायों के अपने **रस्मोरिवाज** होते हैं।
चकाचौंध – **चमक** कार्निवाल के मैदान में चारों तरफ बहुत **चकाचौंध** थी।
कैशियर – **खजांची कैशियर** ने कर्मचारी को देने के लिए नोट गिने।

संप्रेषण

संवाद को आगे बढ़ाओ–

उत्तर– विद्यार्थी अ – नागार्जुन का जन्म कब तथा कहाँ हुआ था?
विद्यार्थी ब – उनका जन्म सन् 1911 में बिहार के तिरौनी नामक गाँव में हुआ था।
विद्यार्थी अ – उनका वास्तविक नाम क्या था?
विद्यार्थी ब – उनका वास्तविक नाम बैजनाथ मिश्र था।
विद्यार्थी अ – उनके द्वारा रचित किन्हीं दो प्रसिद्ध ग्रंथों के नाम बताओ।
विद्यार्थी ब – उनके द्वारा रचित दो प्रमुख ग्रंथों के नाम हैं–'पारो' और 'दुःखमोचन'।
विद्यार्थी अ – उन्होंने बौद्धदर्शन का अध्ययन कहाँ पर किया?
विद्यार्थी ब – उन्होंने बौद्धदर्शन का अध्ययन श्रीलंका में किया।
विद्यार्थी अ – उन्होंने कौन-कौन सी भाषाओं में अध्ययन किया?
विद्यार्थी ब – उन्होंने मैथिली, संस्कृत और बांग्ला भाषा में अध्ययन किया।
विद्यार्थी अ – उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार किस रचना पर मिला?

विद्यार्थी ब – उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मैथिली काव्य 'पत्रहीन नग्नगाछ' पर मिला।

अंतर-विषयक अधिगम

1. छात्र स्वयं करें।

2. इस कहानी से आपको जो शिक्षा प्राप्त होती है, उसे लिखो।

उत्तर– इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जो व्यक्ति ईमानदार तथा परिश्रमी होता है वह अपनी सीमित आय में ही खुश तथा संतुष्ट रहता है। अगर कहीं से भी उसे कोई ऊपरी आय प्राप्त होती है तो वह उसको सुख नहीं देती अपितु उसकी परेशानी का कारण ही बनती है।

3. नागार्जुन द्वारा रचित कृतियों की सूची बनाओ।

उत्तर– नागार्जुन द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ निम्न हैं–'पारो', 'इमरतिया', 'दुखमोचन', 'बाबा बटेसरनाथ' (उपन्यास) 'आसमान में चंदा तैरे' (कहानियाँ), 'खिचड़ी विप्लव देख हमने', 'हजार-हजार बाँहों वाली', 'प्यासी पथराई आँखे' (कविताएँ) और 'विद्यापति की कहानियाँ' (अनुवाद)।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

12 दीवानों की हस्ती (कविता)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** दीवानों के साथ मस्ती का आलम चला।

2. दीवानें कहते हैं कि किस ओर चले–यह मत पूछो, चलना है बस इसलिए चले हैं।

3. दीवाने उर पर असफलता का भार लेकर चले।

4. दीवाने रुकने वालों के बारे में कहते हैं कि, रुकने वाले आबाद रहें।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. दीवाने अपनी चाल के बारे में कहते हैं कि, हम मस्ती के साथ धूल उड़ाते हुए चल रहे हैं।

2. कवि चौथे पद्यांश के माध्यम से यह कहना चाहता है कि, हमने इस संसार में रहकर सबकी बातें भी सुनी हैं, जिनको सुनकर हमें हँसी भी आई और रोना भी आया। लेकिन हमने इन सुख-दुख के भावों को निर्विकार रूप से सहा है।

3. इस पंक्ति से आशय है कि हम मान-अपमान की भावना से ऊपर उठ चुके हैं।

4. दीवाने भलाई-बुराई की बातें करते हुए कहते हैं कि, हमने भला-बुरा सब भुला दिया है और सिर झुकाकर इन बातों से मुँह मोड़ लिया है।

5. प्रस्तुत कविता में जीवन जीने के ढंग को दीवानों के माध्यम से बताया गया है। दीवाने कहते हैं कि, हम मस्ती के साथ जीवन जी रहे हैं। आज यहाँ कल वहाँ, हमारा कोई ठिकाना नहीं है। हम सुख-दुख की भावना से ऊपर उठकर जीवन को बेफिक्री के साथ जी रहे हैं। हमारा जिधर मन करता है, हम उधर निकल पड़ते हैं। इस संसार की बातों का अब हम पर कोई असर नहीं होता। हमारी नजर में अमीर-गरीब कोई नहीं है, सब एक-समान हैं। हम मान-अपमान की भावना से ऊपर उठ गए हैं और हम हँसते-हँसते इस देश पर अपने प्राण न्यौछावर कर देंगे।

हमें जिसने भला-बुरा कहा, हमने उससे भी सिर झुकाकर मुँह मोड़ लिया है। तथा भगवान से उसकी भलाई की ही कामना की है। अब हमारे लिए अपना-पराया कोई नहीं है। हम स्वयं ही इस संसार की मोह-माया में बँधे थे और हमने स्वयं ही इन बंधनों को तोड़ दिया है।

(ग) दिए गए पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करो–

उत्तर– 1. **आए बनकर .... कहाँ चले?**

प्रसंग–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक **हिंदी-8** के **'दीवानों की हस्ती'** नामक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता **भगवतीचरण वर्मा** हैं। इन पंक्तियों में कवि ने सुख-दुख में एक-समान रहने को कहा है।

व्याख्या–हमने सुख-दुख से परे होकर जीना सीख लिया है और हमारे इस व्यवहार से सभी आश्चर्यचकित हैं।

2. **हम मान .... घर चले?**

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि हम मान-अपमान आदि भावों

से ऊपर उठकर स्वच्छंद होकर जी रहे हैं।

व्याख्या–हम मान-अपमान से ऊपर उठ चुके हैं और भरपूर जीवन जी रहे हैं। निर्भयता का जीवन जीते-जीते हमने अपने प्राणों का मोह भी त्याग दिया है।

3. **प्रसंग**–इन पंक्तियों में कवि ने अपने और पराये की भावना के सभी बंधनों को तोड़ने की बात कही है।

व्याख्या–हमने अपने और पराये की खाई को लाँघ लिया है। और जो लोग अभी तक इन बंधनों में जकड़े हुए हैं वे हमेशा खुश रहें, आबाद रहें। हमने तो इन बंधनों में खुद को अपने आप ही बाँधा था और हम स्वयं ही इन बंधनों से आजाद हो गए हैं।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

उल्लास	**उमंग**	**प्रसन्नता**
जग	**संसार**	**विश्व**
दृग	**दृष्टि**	**नजर**
फूल	**पुष्प**	**पुहुप**

(ख) इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखो–

उत्तर–

बस	**पर्याप्त**	**गाड़ी**
हार	**पराजय**	**माला**
कल	**आवाज**	**समय (आने वाला कल)**

(ग) दिए गए संयुक्ताक्षरों से बनने वाले दो-दो शब्द लिखो–

उत्तर–

ल्ल	उल्लास	**पल्ला**	**हल्ला**
क्क	पक्का	**चक्का**	**धक्का**
त्त	पत्ता	**गत्ता**	**छत्ता**
च्च	बच्चा	**सच्चा**	**कच्चा**

(घ) निम्नलिखित शब्दों की संधि करो–

उत्तर–

निः +	उपाय	**निरुपाय**		निः +	धूम	**निर्धूम**
निः +	मूल	**निर्मूल**		निः +	जन	**निर्जन**

(ङ) इनके विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

सुख	**दुख**	मान	**अपमान**
प्यार	**नफरत**	हार	**जीत**

सफलता	**असफलता**	वरदान	**अभिशाप**
अपना	**पराया**	चलना	**रुकना**

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. इस कविता आपको जो शिक्षा प्राप्त की, उसे लिखो।

उत्तर– इस कविता से हमें यह शिक्षा मिली कि हमारा यह जीवन ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अनमोल उपहार है। हमें इसे सुख-दुख, भला-बुरा, मान-अपमान आदि से ऊपर उठकर किसी भी चिंता से रहित होकर निर्विकार भाव से जीना चाहिए। तथा सभी के साथ प्रेम तथा अपनेपन का व्यवहार करना चाहिए।

2. प्रस्तुत गीत का भावार्थ लिखो। यह गीत आपने कहाँ सुना? इस गीत से कविता की कौन-सी बात मेल खाती है?

उत्तर– पंछी नदिया .... हो के?

भावार्थ–इस गीत का भाव यह है कि पक्षी, नदियों के पानी तथा हवा के झोंकों को रोकने के लिए आज तक कोई सीमा-रेखा नहीं बनी है। ये सारी सीमाएँ (बंधन) भी केवल हम इंसानों के लिए ही हैं। यदि ये केवल हमारे लिए ही हैं, तो हमने इंसान बनकर क्या प्राप्त किया? (कुछ भी प्राप्त नहीं किया है।)

3. दिए गए चित्र को देखो तथा शब्दों की सहायता से कोई कविता लिखो–

उत्तर– सावन के मेघ बरसते हैं,
तरुओं से मोती छनते हैं।
ताड़ों के दल हैं झूम रहे,
दादुर बाला सब खेल रहे।
कोयल ने गान सुनाया है,
बिजली ने हमें डराया है।
अंगुलियों पर बूँदें बरस रहीं
हरियाली पंखों पर झलक रही।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर–छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर–छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

13 स्नेह (कहानी)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. कोठरी में से उमा को देखने वाली दो आँखें शशि की थीं।

2. निरुपमा ने उमा को पहले दिन ही समझा दिया था कि ''बहूरानी! इस अभागे बालक को मुँह न लगाना।''

3. जब शशि पर निरुपता के अत्याचार बढ़ने लगे और उमा और अमूल्य से न देखे गए, तब उन्होंने अलग घर में रहने का फैसला किया।

4. निरुपमा ने शशि को उसके मामा के घर भेजने की बात इसलिए की क्योंकि वह उमा की तबियत खराब होने का कारण शशि को मानती थी।

5. श्यामा ने उमा को बताया कि तुम्हारी जेठानी ने जब से जाना है कि शशि तुम्हारे पास आता है तब से उन्होंने उसका स्कूल जाना बंद कर दिया है और उसे खूब मारती हैं।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. निरुपमा शशि को अभागा बालक इसलिए समझती थी क्योंकि उसके पैदा होते ही उसके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था और थोड़ा बड़ा होने पर उसके ताऊ भी चल बसे थे।

2. शशि ने रसगुल्ला इसलिए चुराया था क्योंकि वह पहले दिन से भूखा था। इसकी सजा भुगतने के लिए उसे अपनी ताई से बहुत मार खानी पड़ी।

3. अमूल्य तथा उमा ने अलग घर में रहने में ही शशि की भलाई इसलिए समझी क्योंकि उमा से बोलने पर उसको मार खानी पड़ती थी।

4. निरुपमा ने शशि का स्कूल जाना इसलिए बंद करा दिया क्योंकि उमा का

मकान शशि के स्कूल के रास्ते में पड़ता था और वह रोज उमा से बोलता हुआ स्कूल जाता था।

5. उमा ने शशि को निरुपमा के अत्याचार से मुक्त कराने का निर्णय तब लिया जब उसे पता चला कि उससे मिलने के कारण निरुपमा ने शशि का स्कूल जाना बंद कर दिया है और उसे खूब मारती है। उसने अपने बेटे अशोक को उठाकर निरुपमा के कदमों में डाल दिया और आर्द्र स्वर में बोली– ''जीजी! इसे खाकर अपनी आग शांत कर लो, मेरे शशि को मुझे दे दो।''

(ग) दिए गए गद्यांश को पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– **1.** उमा के बच्चे की आयु एक वर्ष थी।

2. उमा सोचने लगी थी कि शशि अब प्रसन्न है।

3. उमा सही वक्त पर आकर खिड़की पर खड़ी हो जाती थी।

4. **पर्यायवाची शब्द–**

बालक = **बच्चा**, **बाल**; मकान = **घर**, **गृह**; प्रसन्न = **खुश**, **हर्षित**।

(घ) किसने, किससे कहा, लिखो–

उत्तर– **1.** उमा ने, शशि से **2.** उमा ने, अमूल्य से

3. निरुपमा ने, उमा से **4.** उमा ने, अमूल्य से

5. श्यामा ने, उमा से।

(ङ) खाली स्थान भरो–

उत्तर– 1. उमा स्नान करके **पूजा** की कोठरी की ओर जा रही थी।

2. उसका हृदय शशि के लिए **व्याकुल** हो उठा।

3. जो जान-बूझकर **साँप** के मुँह में उँगली डाले, उसे कौन बचा सकता है।

4. मैंने सवेरे पाँच रसगुल्ले गिने थे, अब **चार** हैं।

5. शशि को उसके **मामा** के यहाँ भेज देती हूँ।

6. भावावेश में उसकी **जिह्वा** रुँध गई।

भाषा ज्ञान आलोचनात्मक सोच

(क) 'आ' और 'दुर' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाओ–

उत्तर–

वेग	**आवेग**	जन	**दुर्जन**
जन्म	**आजन्म**	गम	**दुर्गम**
गमन	**आगमन**	घटना	**दुर्घटना**

मूल	**आमूल**	दशा	**दुर्दशा**
मरण	**आमरण**	बल	**दुर्बल**
कंठ	**आकंठ**	भाग्य	**दुर्भाग्य**
जीवन	**आजीवन**	आचार	**दुराचार**
दान	**आदान**	गुण	**दुर्गुण**

(ख) विशेषण शब्द बनाओ–

उत्तर–

व्याकुलता	**व्याकुल**	कठोरता	**कठोर**
अहंकार	**अहंकारी**	अंत	**अंतिम**
दिन	**दैनिक**	परख	**पारखी**

(ग) दी गई वर्ग-पहेली से पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखो–

उत्तर– हाथ – **हस्त, कर**

बालक – **लड़का, बाल**

दिन – **वार, वासर**

माँ – **अंबा, माता**

मकान – **आलय, गृह**

(घ) इनके विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

दिन	**रात**	कठोरता	**कोमलता**
कठोर	**कोमल**	क्रोध	**शांति**
दिन	**रात**	प्रेम	**घृणा**
अक्षम	**सक्षम**	आरोह	**अवरोह**
उग्र	**शांत**	आवश्यक	**अनावश्यक**
मृदु	**कठोर**	जटिल	**सरल**

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद करो–

उत्तर– राक्षस – **र् + आ + क् + ष् + अ + स् + अ**

भयंकर – **भ् + अ + य् + अं + क् + अ + र् + अ**

भूमिका – **भ् + ऊ + म् + इ + क् + आ**

चकित – **च् + अ + क् + इ + त् + अ**

भावना – **भ् + आ + व् + अ + न् + आ**

सहसा – **स् + अ + ह् + अ + स् + आ**

शैतान – **श् + ऐ + त् + आ + न् + अ**

अमूल्य – **अ + म् + ऊ + ल् + य् + अ**

संप्रेषण

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर– राधिका – नीलम, तुम्हें बच्चे कैसे लगते हैं?

नीलम – राधिका, मुझे बच्चों से बहुत प्यार है।

राधिका – बच्चों पर अत्याचार करने वाले या करने वाली के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?

नीलम – मैं ऐसे लोगों को जानवरों से भी निम्न दर्जे के प्राणी मानती हूँ।

राधिका – क्या ऐसे व्यक्ति सुखी रहते हैं?

नीलम – नहीं, ऐसे व्यक्तियों को जीवन में कभी सुख नहीं मिलता।

राधिका – क्या तुम्हारे आस-पास इस प्रकार का कोई व्यक्ति है?

नीलम – नहीं, मेरी जानकारी में तथा मेरे आस-पास ऐसा कोई नहीं है।

राधिका – ऐसे लोगों को सुधारने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

नीलम – शायद वही मार्ग अपनाना चाहिए जो इस पाठ में अपनाया गया है।

अंतर-विषयक अधिगम

निम्नलिखित में से किसी विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

उत्तर– मनुष्य हो–मनुष्य से प्रेम करो।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर विभिन्न क्रिया-कलाप करता है। आज की भाग-दौड़ वाली जिंदगी में उसे इतना समय ही नहीं है कि वह किसी अन्य के विषय में सोचे। जिनका उससे संबंध होता भी है उन्हें भी वह प्रेम, आदर तथा सम्मान नहीं दे पाता, क्योंकि आज के मानव में ईर्ष्या, द्वेष इतने गहरे पैठ गए हैं जो उसे दूसरे के प्रति सही दृष्टिकोण नहीं अपनाने देते, फलस्वरूप वह अनेक प्रकार के विकारों से घिर जाता है। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। वह मंदिरों में जाकर मूर्तिपूजा करता है और मानवमात्र की अवहेलना करता है। उसे नहीं पता होता कि ईश्वर तो प्रत्येक व्यक्ति के अंतर में विराजमान हैं। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमें मानव से प्रेम करना चाहिए क्योंकि मानव का मानव से प्रेम ही जीवन की सच्ची सार्थकता है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

वर्तनी-ज्ञानें

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

14 बाँस (कथा)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** महात्मा बुद्ध को शास्ता और तथागत कहकर बुलाया जाता था।

2. आदमी शेर से डरकर भागा क्योंकि शेर आदमी को खाना चाहता था।

3. आदमी नदी में इसलिए कूदा क्योंकि उसके पीछे भूखा शेर पड़ा था।

4. आदमी ने बाँस को घर ले जाने का फैसला इसलिए किया क्योंकि उसी के कारण उसकी जान की रक्षा हुई थी।

5. भगवान तथागत ने आदमी को समझाया कि "इस बाँस को अपने सिर से उतार फेंकों और आराम से घर जाओ।" क्योंकि वह उस बाँस के बोझ से दबा जा रहा था।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** लेखक कहानियों की विशेषताएँ बताते हुए कहता है कि कहानियाँ कई तरह की होती हैं; जैसे–कुछ कहानियाँ होती हैं जिन्हें हम सुनते हुए भी नहीं सुनते। कुछ कहानियाँ होती हैं जो इस कान से आती हैं और उस कान से निकल जाती हैं। कुछ कहानियाँ होती हैं जो कान में आती तो हैं, कुछ समय के लिए अंदर पड़ाव डालती हैं और अंत में डेरा-डंडा उठाकर चल देती हैं। मगर कुछ कहानियाँ ऐसी भी होती हैं जो दिल और दिमाग में अपना घर बनाती हैं और वहीं बस जाती हैं–हमेशा के लिए।

2. आदमी ने बाँस में ईश्वर का रूप देखा क्योंकि उस बाँस के कारण ही उसके प्राणों की रक्षा हुई थी।

3. भगवान बुद्ध ने बाँस के बारे में आदमी से पूछा, कि क्या यह बाँस किसी विशेष जाति है जो तुम इस बोझ को निरुद्देश्य ढो रहे हो? आदमी ने उनकी बात का उत्तर देते हुए कहा, नहीं, यह साधारण है तथा हर जगह उपलब्ध है लेकिन जिसे आप बोझ कह रहे हैं वह मेरे लिए भगवान है क्योंकि उसी के कारण मेरे प्राण बचे हैं। बुद्ध के यह कहने पर कि अब यह मात्र बोझ है, इस बाँस को अपने सिर से उतार फेंकें और आराम से अपने घर जाएँ, आदमी ने कहा, मुझे कृतघ्न होने के लिए न कहें, जब मैं लगभग मृतप्राय हो चुका था तब इसी ने सहारा देकर मेरे प्राण बचाए थे।

4. भगवान बुद्ध ने मनुष्य जीवन के बारे में कहा, कि जीवन सर्वोपरि है! और मैं जीवन और आपके हित की बात कर रहा हूँ।

(ग) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. आदमी के आगे-पीछे मौत इसलिए थी क्योंकि आदमी आगे बढ़ता तो नदी में डूबता और पीछे हटता तो उसे शेर खा जाता।

2. वह सोचने में वक्त इसलिए नहीं गँवाना चाहता था क्योंकि यदि वह सोचता रहता तो उसकी जान चली जाती।

3. आदमी ने ऐसा इसलिए सोचा क्योंकि शेर द्वारा खाया जाना अधिक भयावह था।

4. **पर्यायवाची शब्द–**
शेर = **सिंह, केसरी**; नदी = **सरिता, तरंगिणी**; मौत = **मृत्यु, देहावसान**; वक्त = **समय, काल**।

(घ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. महात्मा बुद्ध ने, आदमी से, क्योंकि उसने उनकी बात का उत्तर नहीं दिया था।

2. आदमी ने, महात्मा बुद्ध से, क्योंकि बुद्ध ने उससे पत्तनग्राम में बाँसों की स्थिति के बारे में पूछा था।

3. आदमी ने, महात्मा बुद्ध से, क्योंकि उन्होंने बाँस को बोझ बताया था।

4. महात्मा बुद्ध ने, आदमी से, क्योंकि आदमी समझने को तैयार ही नहीं था।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) विशेषण शब्द पर सही (✓) का निशान लगाओ–

उत्तर–

जंगल	–	वन	जंगली (✓)
घर	–	घरेलू (✓)	गृह
दया	–	करुणा	दयालु (✓)
मृत्यु	–	मृत्य (✓)	मौत

(ख) इनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

जंगल	–	**वन**	**कानन**
पानी	–	**जल**	**वारि**
नदी	–	**सरिता**	**तरंगिणी**
आदमी	–	**नर**	**मानव**
रास्ता	–	**पथ**	**मार्ग**

घर	–	**गृह**	**निकेत**
शाम	–	**संध्या**	**सायंकाल**
ईश्वर	–	**प्रभु**	**परमात्मा**

(ग) नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया-विशेषण शब्दों को रेखांकित करो–

उत्तर–
1. बारिश निरंतर गिर रही है।
2. बुद्ध ने उसे बार-बार समझाया।
3. भाई, कहाँ जा रहे हो?
4. वह केवल पढ़ता रहता है।

(घ) विलोम शब्दों से मिलान करो तथा उदाहरण के अनुसार उनसे एक-एक वाक्य बनाओ–

उत्तर–

अंदर	आसान
जीवित	निरुद्देश्य
कृतज्ञ	बाहर
मुश्किल	मृत
उद्देश्य	कृतघ्न

(अंदर → बाहर, जीवित → मृत, कृतज्ञ → कृतघ्न, मुश्किल → आसान, उद्देश्य → निरुद्देश्य)

1. बाहर कोई आपका इंतजार कर रहा है।
2. भावनाओं से रहित व्यक्ति मृत के समान है।
3. सारंग बहुत ही कृतघ्न व्यक्ति है।
4. किसी पर आरोप लगाना बहुत ही आसान है।
5. मेरा वहाँ जाना निरुद्देश्य ही रहा।

(ङ) भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर–

भूखा	–	**भूख**	कृतज्ञ	–	**कृतज्ञता**
आतुर	–	**आतुरता**	लंबा	–	**लंबाई**
नेक	–	**नेकी**	भारी	–	**भार**
आदमी	–	**आदिम**	प्यासा	–	**प्यास**
पशु	–	**पशुता**	शांत	–	**शांति**

(च) इनके भिन्न-भिन्न अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर–

कर	हाथ	मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि उसे जाने दीजिए।
	करना	(क्रिया) तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।
तेज	कांति	(आभा) उसके चेहरे पर एक अनोखा तेज था।
	जल्दी	(क्रिया) रमेश तेज-तेज कदमों से चला जा रहा था।

हर	प्रत्येक	हर व्यक्ति वहाँ दौड़ा चला जा रहा था।
	हरण	रावण ने कुटिया में अकेली पाकर सीता को हर लिया।
पर	पंख	कोमल परों के कट जाने पर पक्षी उड़ न सका।
	लेकिन	(दूसरा) मैंने तुमसे कहा था, पर मेरा मतलब वो नहीं था।

संप्रेषण

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अंतर-विषयक अधिगम

1. इस कहानी से आपने जो शिक्षा प्राप्त की है, उसे अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर– इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें भावनाओं में बहकर अंधविश्वासी नहीं बनना चाहिए बल्कि हमेशा अपने बुद्धि तथा विवेक से काम लेना चाहिए।

2. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

15 अकबरी लोटा (हास्य-कथा)

अभ्यास

निरंतर समीक्षा

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– 1. लाला झाऊलाल ने अपनी पत्नी से ढाई सौ रुपये देने का वायदा किया था।

2. पं० बिलवासी मिश्र ने लाला झाऊलाल को ढाई सौ रुपये देने की तसल्ली दे रखी थी।

3. लोटा जाकर अंग्रेज पर गिरा।

4. पं० बिलवासी मिश्र ने लाला जी के साधारण लोटे को ऐतिहासिक लोटा बताया क्योंकि उन्हें अनुमान हो गया था कि अंग्रेज को पुरानी तथा ऐतिहासिक चीजें खरीदने का शौक है।

5. अंग्रेज ने लोटे को पाँच सौ रुपए में खरीदा।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– 1. पत्नी की ढाई सौ रुपये माँगने की बात सुनकर लाला जी का जी बैठ गया।

2. लाला जी के हाथ से छूटकर लोटा एक दुकान के मालिक से टकराया और फिर दुकान पर खड़े हुए एक अंग्रेज को भिगोता हुआ उसके बूट पर जाकर गिरा।

3. पं० बिलवासी मिश्र ने आँगन में पहुँचते ही सबसे पहले अंग्रेज के साथ आए लोगों को आँगन में से बाहर निकाला और फिर आँगन में कुर्सी रखकर अंग्रेज को उस पर आराम से बिठाया।

4. अंग्रेज ने लोटे को पाँच सौ रुपये में इसलिए खरीदा क्योंकि उसकी अपने पड़ोसी डगलस से पुरानी चीजों के संग्रह करने में होड़ लगी रहती थी।

5. अंग्रेज और लाला जी के बीच उत्पन्न कलह को मिटाने में पं० बिलवासी मिश्र ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी चतुराई तथा सूझ-बूझ से साधारण लोटे को ऐतिहासिक बना दिया तथा अंग्रेज को उसे मँहगे दामों पर खरीदने के लिए मजबूर कर दिया। इस तरह अंग्रेज भी लोटा खरीदकर खुश हो गया और लाला जी की रुपयों की समस्या का भी समाधान हो गया।

(ग) खाली स्थान भरो–

1. लाला झाऊलाल को **खाने-पीने** की कमी नहीं थी।
2. पाँचवें दिन घबराकर उन्होंने **पं० बिलवासी** मिश्र को अपनी विपदा सुनाई।
3. लाला को काटो तो **बदन** में खून नहीं।
4. इस रद्दी **लोटे** के आप पचास रुपए क्यों दे रहे हैं।
5. इस रिश्ते से आपका लोटा उस **अंडे** का बाप हुआ।

(घ) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर– 1. भीड़ को चीरते हुए आँगन में पं० बिलवासी मिश्र पहुँचे।

2. पंडित जी ने सबसे पहले अंग्रेज के साथ आँगन में घुस आए लोगों को बाहर निकाला।

3. आँगन में कुर्सी अंग्रेज के लिए रखी गई।

4. **समानार्थी शब्द–**
आँगन = **बरामदा, सहन;** पैर = **पग, चरण**; आराम = **विश्राम, सुस्ताना**; चोट = **प्रहार, आघात**।

(ङ) किसने, किससे और क्यों कहा, लिखो–

उत्तर– 1. अंग्रेज ने, पं० बिलवासी से, क्योंकि उन्होंने वहाँ पर उपस्थित भीड़ को अधिकार के साथ बाहर निकाल दिया था।

2. अंग्रेज ने, पं० बिलवासी से, क्योंकि पं० बिलवासी ने पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट लिखवाने के लिए कहा था।
3. अंग्रेज ने, पं० बिलवासी से, क्योंकि पं० जी भी लोटा खरीदने पर अड़ गए थे।
4. अंग्रेज ने, पं० बिलवासी से, क्योंकि पं० जी ने लोटे के ढाई सौ रुपये लगा दिए थे।
5. लाला झाऊलाल ने, पं० बिलवासी से, क्योंकि उन्हें उनसे सारा घटनाक्रम पूछने की उत्सुकता हो रही थी।

भाषा ज्ञान

आलोचनात्मक सोच

(क) निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद करो–

उत्तर–

अधिकांश	**अधिक**	+	**अंश**
प्रत्येक	**प्रति**	+	**एक**
तथैव	**तथा**	+	**एव**
अत्यधिक	**अति**	+	**अधिक**
वीरांगना	**वीर**	+	**अंगना**
न्यायाधीश	**न्याय**	+	**अधीश**

(ख) इनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो–

उत्तर–

आँख	**अक्षि**	**नयन**
पानी	**जल**	**वारि**
विपदा	**परेशानी**	**कठिनाई**
पत्नी	**भार्या**	**दारा**
दुष्ट	**अधम**	**नीच**

(ग) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ–

उत्तर– आँखें सेंकना – **नयनसुख प्राप्त करना**

वाक्य प्रयोग–लाला झाऊलाला को ढाई सौ रुपये एक साथ **आँखें सेंकने** के लिए कभी नहीं मिले थे।

दिल बैठ जाना – **बहुत दुखी होना**

वाक्य प्रयोग–परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने पर वैभव का **दिल बैठ गया**।

आँखों से ओझल होना – **गायब हो जाना**

वाक्य प्रयोग–देखते-ही-देखते दीपा मेरी **आँखों से ओझल हो गई**।

काशीवास की खबर आना – **मृत्यु की खबर मिलना**

वाक्य प्रयोग–रोशनलाल के यात्रा पर जाने के तुरंत बाद ही उनकी **काशीवास की खबर** मिल गई।

किरकिरा होना – **आनंद खराब होना**

वाक्य प्रयोग–मैं, सनी और राघव तीनों अपने ही मनोरंजन में मस्त थे कि पिताजी के आने से सारा मजा **किरकिरा हो गया**।

बाँछें खिलना – **प्रसन्न होना**

वाक्य प्रयोग–अपने हमउम्र चाचा के लड़के सोनू को आया देखकर मोहित की **बाँछें खिल गईं**।

बात का धनी होना – **अपनी कही बात पर अडिग रहना**

वाक्य प्रयोग–राधेलाल अपनी **बात का धनी है।** वह जो कहता है, वही करता है।

संप्रेषण

संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर–

विद्यार्थी अ	–	अकबर कौन थे?
विद्यार्थी ब	–	अकबर प्रसिद्ध मुगल बादशाह थे।
विद्यार्थी अ	–	अकबर के दरबार में कितने रत्न थे?
विद्यार्थी ब	–	अकबर के दरबार में नौ रत्न थे?
विद्यार्थी अ	–	अकबर के नौ रत्न कौन-से थे?
विद्यार्थी ब	–	तानसेन, बीरबल, टोडरमल, अबुल फजल, मानसिंह, अब्दुर्रहीम खानखाना, चैती, मुल्ला दो प्याजा, फैजी, हकीम हुमाम, अकबर के ये नौ रत्न थे।
विद्यार्थी अ	–	इनमें से अकबर के चतुर मंत्री कौन थे?
विद्यार्थी ब	–	अकबर के चतुर मंत्री बीरबल थे।

अंतर-विषयक अधिगम

1. उल्कापात तथा न्यूटन का नियम लिखो।

उत्तर– उल्कापात वे खगोलीय पिंड हैं जो पृथ्वी की तरफ तेजी से आते हैं और कभी-कभी पृथ्वी की सतह से टकराकर उसमें विशाल गड्ढे बना देते हैं।

इसी प्रकार से न्यूटन का नियम ये है कि पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर बड़ी शक्ति से खींचती है चाहे वे वस्तु कितनी भी ऊपर, भारी अथवा हल्की हों।

2. नूरजहाँ के द्वारा कबूतर उड़ा देने की घटना के बारे में जानो और लिखो।

उत्तर– एक कबूतर ने नूरजहाँ से जहाँगीर का प्रेम कराया था। जहाँगीर के यह पूछने पर कि मेरा एक कबूतर तुमने कैसे उड़ जाने दिया, नूरजहाँ ने उसके दूसरे कबूतर

को उड़ाकर बताया था कि ऐसे। उसके इस भोलेपन पर जहाँगीर दिलोजान से न्यौछावर हो गया। उसी क्षण से उसने अपने को नूरजहाँ के हवाले कर दिया।

3. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

16 क्या निराश हुआ जाए (निबंध)

अभ्यास **निरंतर समीक्षा**

(क) वाणी से (मौखिक) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** आजकल देश में ईमानदारी से, मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं।

2. लेखक का मन कहता है कि निराश होने की जरूरत नहीं है।

3. आजकल ईमानदारी को मूर्खता का पर्याप्त समझा जाने लगा है।

4. कानून तथा धर्म में अंतर होने के पीछे कारण यह है कि धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है।

5. रेलवे-स्टेशन पर लेखक के साथ यह घटना घटी कि लेखक ने टिकट लेते समय गलती से दस के बजाय सौ का नोट दे दिया और गाड़ी में आकर बैठ गए। लेकिन टिकट बाबू ने ईमानदारी का परिचय देते हुए उन्हें नब्बे रुपये लौटा दिए।

6. कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने गीत में भगवान से यह विनती की, कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

(ख) लेखनी से (लिखित) उत्तर दो–

उत्तर– **1.** लेखक भारतीय आदर्शों की विशेषताएँ बताते हुए कहता है कि भारतवर्ष

बहुत-सी संस्कृतियों तथा सभ्यताओं का मिश्रण है। सभी जातियों के आदर्शों की मिलन भूमि है। यह जीवन के महानतम् मूल्यों यथा-त्याग, दया, ममता, करुणा, ईमानदारी, सहिष्णुता, सेवा, परोपकार आदि का अक्षुण्ण कोष है।

2. भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम ओर परम है।
3. भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म, कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी भारतवर्ष मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है।
4. बस के यात्री उसके ड्राइवर को इसलिए पीटना चाहते थे क्योंकि उन्हें संदेह हो गया था कि हमें धोखा दिया जा रहा है।
5. ''मानवता कम हो गई है, परंतु समाप्त नहीं हुई है'' क्योंकि हर जगह तथा हर स्थान पर हमारे साथ विश्वासघात नहीं होता है। हमारे साथ ऐसी घटनाएँ भी घटती हैं जब लोगों ने अकारण ही हमारी सहायता की हुई होती है।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में उचित समुच्चबोधक अव्यय भरो–

1. गुण **और** अवगुण की पहचान करना सीखो।
2. भीरुता **और** कायरता से जीवन नरक बन सकता है।
3. कानून **और** धर्म एक-दूसरे के पूरक है।
4. खेत सूख गए **लेकिन** वर्षा नहीं हुई।

(घ) दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और संबंधित प्रश्नों के उत्तर दो–

उत्तर–
1. भारतवर्ष कानून को धर्म के रूप में देखता आया है।
2. धोखा कानून को दिया जा सकता है, धर्म को नहीं।
3. कानून की त्रुटियों का लाभ धर्म-भीरू लोग उठाते हैं।
4. **समानार्थी शब्द–**

   सदा = **हमेशा**, एकाएक = **अचानक**, अंतर = **भिन्न**, भीरू = **डरपोक**, त्रुटि = **गलती**।

(ङ) नीचे दी गई पंक्ति की व्याख्या करो–

उत्तर– ''आर्य, डविड़ .... नहीं सकता?

व्याख्या–यह भारतवर्ष सभी जातियों के आदर्शों का मिला-जुला रूप है। यहाँ पर तो सभी के आदर्शों को सर्वोपरि माना गया है। ये आदर्श इतनी जल्दी समाप्त होने वाले नहीं हैं।

भाषा ज्ञान — आलोचनात्मक सोच

(क) इनके तत्सम रूप लिखो–

उत्तर–

हाथ	**हस्त**	दूध	**दुग्ध**
भूख	**बुभुक्षा**	रात	**रात्रि**
बादल	**वारिद**	पानी	**जल**

(ख) उपसर्ग तथा शब्द अलग करके लिखो–

उत्तर–

बेबस	**बे**	+	**बस**
आजीवन	**आ**	+	**जीवन**
सुविधा	**सु**	+	**विधा**
उपस्थित	**उप**	+	**स्थित**
विनम्रता	**वि**	+	**नम्रता**
वियोग	**वि**	+	**योग**

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में उचित समुच्चयबोधक अव्यय भरो–

उत्तर–
1. गुण **और** अवगुण की पहचान करना सीखो।
2. भीरूता **तथा** कायरता से जीवन नरक बन सकता है।
3. कानून **और** धर्म एक-दूसरे के पूरक हैं।
4. खेत सूख गए **क्योंकि** वर्षा नहीं हुई।

(घ) इनके विलोम शब्द लिखो–

उत्तर–

सुखी	**दुखी**	गुण	**अवगुण**
धर्म	**अधर्म**	उचित	**अनुचित**
उपेक्षा	**अपेक्षा**	मान	**अपमान**
वांछित	**अवांछित**	समर्थ	**असमर्थ**

(ङ) भाववाचक संज्ञा बनाओ–

उत्तर–

तस्कर	**तस्करी**	दरिद्र	**दरिद्रता**
अच्छा	**अच्छाई**	विनम्र	**विनम्रता**

मनुष्य **मनुष्यता** बच्चा **बचपन**

संप्रेषण

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) संवाद आगे बढ़ाओ–

उत्तर– छात्र 1 – भ्रष्टाचार एवं बेईमानी की भावना का उन्मूलन करने के लिए क्या अनिवार्य है?

छात्र 2 – भ्रष्टाचार एवं बेईमानी की भावना के उन्मूलन के लिए लोगों में ईमानदारी एवं सच्चाई की भावना का विकास करना अनिवार्य है।

छात्र 1 – कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में कैसे लोग संकोच नहीं करते।

छात्र 2 – कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में धर्मभीरू लोग संकोच नहीं करते।

छात्र 1 – पाठ के अनुसार इस समय सुखी कौन है?

छात्र 2 – पाठ के अनुसार इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता।

अंतर-विषयक अधिगम

1. इस निबंध से प्राप्त होने वाली शिक्षा को एक अनुच्छेद के रूप में लिखो और उसे उचित शीर्षक दो।

उत्तर– जीवन मूल्यों का महत्त्व

वर्तमान समय में जो ईमानदारी से अपना जीवन-निर्वाह कर रहे हैं, उन्हें दोषी ठहराया जाता है तथा जो झूठ और फरेब अपनाकर जीवन जी रहे हैं वे खूब फल-फूल रहे हैं। ऐसे समय में लोगों का जीवन के महान मूल्यों से विश्वास उठने लगा है। किसी के दोषों से परदा उठाना बुरी बात नहीं है लेकिन वह तब बुरा हो जाता है, जब किसी के आचरण के गलत पक्ष को उदघाटित करके उसमें रस लिया जाता है। इतना सब होने के पश्चात् भी हम किसी की अच्छाई को दबा नहीं सकते क्योंकि अच्छाई तथा सच्चाई कभी छुप नहीं सकती। अतः हम कह सकते हैं कि भ्रष्टाचार तथा बुराई समाज में चाहे कितनी ही फैल जाएं किंतु इस संसार से मनुष्यता कभी समाप्त नहीं हो सकती। जीवन मूल्यों का वर्चस्व हमेशा से रहा है, तथा आगे भी रहेगा।

2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखो–

उत्तर– (ii) परपीड़ा हरना ही मानव धर्म।

परहितवाद या निःस्वार्थता जिसे परोपकारिता या आत्मोत्सर्ग भी कहते हैं दूसरों की भलाई हेतु चिंता का सिद्धांत या प्रथा है। कोई व्यक्ति

जीविकोपार्जन के लिए विभिन्न उद्यम करते हुए यदि दूसरे व्यक्तियों और जीवधारियों की भलाई के लिए कुछ प्रयत्न करता है तो ऐसे प्रयत्न परोपकार की श्रेणी में आते हैं। बिना किसी स्वार्थ के दूसरों के कष्टों का निवारण करने वाले व्यक्ति संत की श्रेणी में आते हैं। परपीड़ा हरने या दूसरों के दुख दूर करने के समान दूसरा कोई कार्य नहीं है। भौतिक जगत का प्रत्येक पदार्थ ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी मनुष्य के उपकार में सदैव लगे रहते हैं। असहाय लोगों, रोगियों और विकलांगों की सेवा परोपकार के अंतर्गत आने वाले मुख्य कार्य हैं। तुलसीदास ने तो परोपकार अथवा परपीड़ा हरने के संदर्भ में यहाँ तक कहा है–

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

हृदय के विस्तार से ही परपीड़ा की समानुभूति की क्षमता मनुष्य में आती है। सही अर्थों में वही मनुष्य महान है जो अपने दुख-सुख, हानि-लाभ की चिंता किए बिना दूसरों के कष्टों के निवारण में लगा रहे। ऐसा नहीं है कि व्यक्ति स्वयं को भुलाकर केवल दूसरों के दुख निवारण में लगा रहे अपितु जितना हो सकता है उतना प्रयास व्यक्ति को अवश्य करना चाहिए क्योंकि इससे बड़ा कोई धर्म नहीं है।

3. **'भ्रष्टाचार समाज व राष्ट्र की उन्नति में सबसे बड़ा बाधक है।'**

भ्रष्टाचार का अर्थ है भ्रष्ट आचरण। भ्रष्ट व्यक्ति वैसे तो प्रत्येक क्षेत्र को पतित करते हैं, परंतु भारत में आर्थिक भ्रष्टाचार प्रमुख रूप से देखा जाता है। रिश्वतखोरी, जमाखोरी, मिलावट, ओर भाई-भतीजावाद आदि के कारण देश की प्रगति को गहरा धक्का लगता है। इससे कोई भी सरकारी कार्य समय पर व उचित ढंग से नहीं होता है। इसके कारण ही अयोग्य व्यक्ति पदों पर आसीन होते हैं और भ्रष्टाचार के वायरस को आगे बढ़ाते हैं। भ्रष्टाचार इस प्रकार राष्ट्र की उन्नति में सबसे बड़ा बाधक है।

रचनात्मक और नवीनता

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

नैतिक मूल्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुभवनात्मक अधिगम

उत्तर– छात्र स्वयं करें।